

प्रकाशक

आदुल राजाधानी रिसर्च-इन्स्टीट्यूट

बीकानेर

प्रथम बार, १९९०

दृश्य

१४)

प्राक्थन

प्रसूत कहानी-संग्रह, अपने प्रकारा माध्यम तथा अपनी विषय-वस्तु इन दोनो बातों में कुछ विरापता रम्यता है। इसमें भी सुरसीघरणी व्यास की लिखी हुई पचीस कहानियाँ हैं, जो मयकी-मक राजस्थानी भाषा में ही लिखी गई हैं। यह इस ग्रन्थ की पृथ्वी विशदता है। आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं में राजस्थानी का एक महत्वपूर्ण स्थान है। यद्यपि इस समय राजस्थानी की साहित्यिक प्रगति एक दम निरुद्ध हावे हुए भी अपने घर में इसकी प्रतिष्ठा का सर्वांगी कभी बोली हिन्दी के मुकामसे बहुत कुछ बढ़ गई है। निहा ज्ञान विचारतमक साहित्य राजकार्य आधारक बाहरी जीवन इन सब क्षेत्रों में राजस्थान के लोगों ने अब हिन्दी ही को मान लिया है। इसके कई ऐतिहासिक कारण हैं। निराला उच्चर भारत की देखन की ओर जो ध्यान दिखाई देता है जिस देखन के लिए बालिक के बोग सूत्र हुआ समग्र देश को गुंथ कर राजस्थान के बरिष्ठ बालिक समाज ने वही महत्वपूर्ण सहायता दी है उस ध्यान ने अचर्यभाषिता के साथ हिन्दी को आग्रह बना लिया है। हकीकत राजस्थान में हिन्दी की संस्थापना होने में देर नहीं हुई। साधारण राजस्थानी जनता में हिन्दी की अधिक गारवीयता और उच्चकी आधुनिक विविध कार्यप्रतिष्ठा एवं सुविधाओं के कारण हिन्दी को ग्रहण करने में कुछ कठिनाई नहीं दिखाई दी, परन्तु अपनी मातृ-भाषा जानना चरेख बोली राजस्थानी का प्रयोग जो सीमित हो जाने के कारण लोगों में कुछ अचर्यही रही भी आगई है विशेषतः जब जनता में राजस्थानी

के मीन और विस्तृत साहित्य के परवर्णन में पूरी ज़रूरत नहीं होती। यही पूरा अभिप्राय अवरण ही विद्यमान है। पर राजस्थान के अधिकांशों के सम्झति पूरा मन में राजस्थानी भाषा और साहित्य की भव हवरी गहरी है कि वह कभी उन्माद होने की नहीं। अभी तक राजस्थान के लोगों के अल्प और अर्धसाहित्य में लोक-साहित्य के रूप में और लिखित और अलिखित सम्प्रदाय में उच्च कोटि के परिमाणित साहित्य के रूप में राजस्थानी साहित्य की चरार की अव्याहत रखा है। विद्वज्जन रामा सरदार आदि जिनका काफ़ी साक्षात्कारमी विंगल साहित्य से काफी परिचय है सबसे शुरु कर ग्रामीण लोक-साहित्यकारी कविता और कवियित्री तक भव खोजी के राजस्थानी लोककवियों में कविता-सर्जना अभी तक किरीच रूप से चल्ती है। "विश्लेषणीकरण" के समर्थक कुछ प्रभावशाली लेखक और नेताओं के सिवा साधारण राजस्थानी लिखितजनों को भी वह अभिप्रेत है कि राजस्थान में ही मायाने चालू रहें—राजस्थानी तथा हिन्दी, जैसे कई ठहो से राजस्थान के मारबाह प्राप्त की भाषा पर आधारित "विंगल" और मन्-मन्डल की भाषा पर आधारित "विंगल" से ही साहित्यिक मायाने राजस्थान के कवि तथा अन्य लेखकों के द्वारा व्यवहार में चालू चाली थी। अस्तु परन्तु हिन्दी को अपनी उचित मान्यता देते हुए भी राजस्थान में अपनी प्राथमिक मनोभाव के वह लिखित तथा अलिखित ऐसे बहुत लेखक दिखाई देते हैं जिनमें अपनी मातृ-भाषा में कवयित्री के साहित्य प्रवर्णन करने में अचलीय और कवयित्री जगदीश और प्रवर्णन स्पष्ट है।

प्रस्तुत कहानी-संग्रह के लेखक श्री मुरलीधर श्वास ऐसे राजस्थानी-मेमी लेखकों में एक प्रमुख हैं जिनकी लेखनी द्वारा प्राथमिक राजस्थानी भाषा-स्वरूपता की अनमोल सेवा हुई है, और जाना है कि अविश्व में भी होती रहनी।

इस ईसाई बीसवें शताब्दी के द्वितीय दशक में भी विद्वज्जन

मरतिवा के राजस्थानी भाषा का हिन्दी बंगला मराठी गुजराती भादि के बराबर साहित्यिक सर्वाङ्ग देने के लिए, राजस्थानी में नवीन भाषा में साहित्य स्रजना की नींव डाली थी। मरतिवाली के दो नामक राजस्थानी में खिलकर बहई से प्रकाशित किये थे। इसकी भाषा में कुछ स्वतन्त्रता थी—बहु भाषा इनकी अपनी बनाई हुई एक नई साहित्यिक राजस्थानी थी जिसमें कई शब्दों की शोधियों का मिश्रण था। यह

“विश्वोत्तम भाषा” सम्मेलन अपनी कृत्रिमता के कारण लोक-प्रिय नहीं हो पाई। इसके बाद बीच-बीच में गद्य रचना के लिए साहित्यिक प्रतिष्ठा वाली राजस्थानी (अर्थात् मारवाड़ की भाषा) कुछ निश्चित क्षेत्रों के द्वारा प्रयुक्त होती आई। अविकलता हिन्दी के द्वारा अपना क्षेत्र संकुचित होत हुए भी राजस्थानी में नई तौर से साहित्य स्रजना की एक परम्परा पुनर्जीवित हुई। यह परम्परा अवैद्यगीत नहीं है—इसका प्रमाण है प्रमुख पुस्तक।

कविता कदाची प्रभृति साहित्य रचनाओं अपनी दार्ष्टिक या मार्मिक भाषा का प्रकाशन के लिए आ कि Creative genius अथवा “कारबिनी प्रतिभा” के महान् मानव की मूल्य क्षेत्र बनती है जलक को सामाजिक रीति में प्रयुक्त मानु-स्मरण के साथ अपने स्वच्छिन्न का बात करती है। विद्यालय में सीखी हुई भाषा में रचना अधिकतम Smelling of the lamp अर्थात् दृष्टान्तिक गति में सिद्धि बनने की रोशनी के सामने बैठकर निरीख साधना की वृत्ति की भरमार रहती है। ज्ञान विज्ञान या आकाशनामक साहित्य में यह भाषा-साधना बनने प्रकर हो नहीं हो पाती भाषा-विषयक संभावनीय कृत्रिमता को आकाश विषय का गौरव महत्त्व एवं में खोई देता है। आ मुद्द हा इसमें तो सन्देह नहीं है कि इसका अन्तर्गत चरित्रक क्षेत्र की अपनी भाषा में हो रचित साहित्य में मिश्रण है। इसकी किन्ही समाज में प्रभावितता रहने में समाज के द्वारा अर्थात् हुई किसी एक सुनिश्चित साहित्यिक भाषा के साथ मानु भाषा अन्तर्गत या

उपेक्षित नहीं रह सकती। इतिहास फ्रांस में वहाँ की कौटुम्बिक भाषा Provençal प्रचलित एक समय मध्य युग में भारत की धर्मतन्त्र सुप्रसिद्ध साहित्यिक भाषा थी। अब इसका प्राचीन गौरव लुप्तमिष्ट है—प्रचलित बोलने वालों ने कई पीढ़ियों से उत्तर फ्रांस की फ्रांसीसी French भाषा को अपनी राजकीय तथा साहित्यिक भाषा बना लिया है पर—‘नामा वही माता भाषा, बिना स्वदेशी भाषा मिटे कि आशा?’—प्रचलित लोगों ने अपनी स्वदेशी भाषा का स्वादा भरी नहीं किया। वे लोग इसमें बचापूर कुछ-कुछ कविता आदि बनाये करते हैं और कई वर्ष हुए, इनके एक कवि Frederic Mistral फ्रेडरिक मिस्त्राल ने अपनी मातृ-भाषा प्रचलित में Mireio मिरेयो (या Mireille मिरेह) नाम के ग्रन्थ लेखन को आरम्भ कर एक सुन्दर कल्पन लिख कर फ्रांसीसी प्रचलित के साथ प्रकाशित किया था जिसके लिए उन्होंने नोबल प्राइज (नोबल पारितोषिक) स्वीडन की विद्वत्संघकी से मिला है।

इतना लिखने का अभिप्राय यह है कि जी मुरलीधरजी ने त्रिम भाषा से इन कहानियों में अपनी मातृ-भाषा का उपयोग किया है वह मेरे विचार के अनुसार निरतिशय सहायता और सहायता का परिचायक है। हममें सभी राजस्थान की आत्मा का एक परिपूर्ण चित्रा होता है। इस विषय में अधिक लिखना निष्पक्षोक्त निरूपण ही होगा। मैं स्वयं राजस्थानी प्रचलित तरह से नहीं जानता इसके बहुत से अन्य राज्यों के अर्थ मेरे लिए अच्छा ही है। परन्तु इस विषय में मेरा पूर्ण विश्वास है कि इस पुस्तक की कहानियों में राजस्थान के भाषा और रहन-सहन उसका वास्तव्य की भाँति भाषा पात्र-पात्रियों की अपरानुकारण कारण Verisimilitude अर्थात् साय-साम्य या मत्व सादर्य का अनुगामी अथवा वास्तव्यानुमारी ही है वास्तव्यण विस्तृत सहायता आगवा है। इस की प्रतीति यह ध्वनि के नृ बरतन के लिए यह Verisimilitude गुण को केवल भाषा के द्वारा

ही सहज रूप से जा सकता है 'कारित्री साहित्य-सर्जना' के लिए अनूतन बचती है। अतएव मापतात माप्यम इस पुस्तक का अचजीव प्रथम गुण है। इसमें जहाँ तक मेरा अनुभव है, राजस्थानी भाषा का सुन्दर सुष्ठु प्रयोग हुआ है। The well of Rajasthanian undeified—"शुद्ध ठेठ कबोफकबन की राजस्थानी का छत्स" इस पुस्तक को भाषा को हम कह सकते हैं। इसकी कहानियाँ कुछ आधुनिक काळ की समष्टिगत सामाजिक या व्यक्तिगत कारित्रिक अभिव्यक्तियों का सेकर है और कुछ ऐतिहासिक घटनाओं के आधार पर। लेखक का दृष्टिकोण आधुनिक अर्थात् समीक्षणापूर्ण है। कथा वस्तु केवळ बटना मात्र को आश्रय करने से वह एक प्रकार का प्राग्वहीन इतिहास ही रह जाता है। हों वह पूर्णतः सत्य है कि कभी बटना में पैसा मगल्य होता है जिससे स्वयं किसी न किसी प्रकार का साहित्यिक रस उत्पन्न होता है। परन्तु केवल की दृष्टिमगी तथा प्रकटाभंगी बातों मिळकर साधारण को असाधारण बना रही है बाहरी रूप-रंग के अन्तराल में जो भीतरी प्राण रहता है उसे भी पाठक या श्रोता के सामने ला देती है। प्रस्तुत ग्रन्थ की कहानियाँ छोटी छोटी हैं इसलिए इनमें चरन्यास में जेता पूरा चरित्र चित्रण अपेक्षित या संभवपर नहीं था। पर हा-एक सतक में लेखक ने अपने पात्रों की व्यक्तिगत या कारित्रिक अवस्था मार्मिक विशेषता को सार्बक और सुन्दर रूप में दिनाया है। बंगाल तथा भारत के आधुनिक चरित्र-चित्रलेखक औपन्यासिकों में जो पविष्ट माने जात हैं और जिनकी हस्तियों से भारत भारतीय कृतार्थ-सी पतो है भा मुरलीधरजी उन शाल्चम्भ अद्वापाध्याय के भाव शिष्य हैं। शाल् की श्वार दृष्टि और उनकी चरित चित्रलेखन विषयक प्रतिभा की श्यामि राजस्थान की घरेलू बातों पर निताम्त सार्बक भाव से राजस्थानी कहानीकार भी मुरलीधरजी न कैता

कर उनका एक अभिनव सुन्दर प्रकाशन किया है । यह प्रस्तुत ग्रन्थ के विषय-वस्तु से सम्बन्धित गुण हैं जो अनुभवी पाठक के हृदय को जीत लेंगा ।

मेरा विश्वास है इन कहानियों के अंग्रेजी और हिन्दी अनुवाद से मनु-भारती का गौरव बढ़ेगा । अपने प्रारम्भिक सुमीने के अनुसार हिन्दी को व्यवहार में लाते हुए भी राजस्थान की सुसंवात इस युग के राजस्थानी कवि और अन्य लेखक यथापूर्व राजस्थानी-साहित्य के पुष्पों से हार बनाकर भारत-भारती के शरणों में अर्घ्य-स्वरूप अर्पण करते रहें मेरे स्वदेश के प्रथममान साहित्य गौरव के लिये यह मेरी हार्दिक कामना है ।

दीपावली २ १३ वि सं

सुनीलकुमार चावुनिया

१ नवम्बर १९२९ ई

पूना

घांरी बस्तु भेट घांनै हँ बस्त्रम-वस्तु ।
है ता आ भटसेह कात्र दादरै बिषद रो ॥

प्रकाशकीय

सादृश राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट बीकानेर रै प्रकाशन विभाग री आ 'वरसगाँठ' पुस्तक राजस्थानी प्रथमाक्षा रो सीजा प्रस्थ है। इय पैली राजस्थान रो अतु-काम्य "कलायस" नै राजस्थानी भाषा रो पैलो अपन्यास "आमै पन्की प्रकाशित हो चुका है। राजस्थान रा प्रसिद्ध कदांखी लेखक भी मुखीपर व्यास री अनुपम ५ सामाजिक कदाणिदों रो संग्रह 'वरसगाँठ' रै नाम सँ प्रकाशित करवा मनै भखी मुखी हुय रही है।

ममाग मुखार नै सांस्कृतिक कामों में व्यास रवि रम्यो वाली तथा बीकानेर री प्रसिद्ध बिदुपी भीमसी रतन दूवी दग्माणी इयारै प्रकाशन सार ५ c) पाँच सौ रुपियां री सहायता इन्स्टीट्यूट नै दी ह। इन्स्टीट्यूट इयांरी बहारता री आभारी है।

बीकानेर

चन्द्रदान चारण

१ दिसम्बर १९६९

प्रकाशन मंत्री

प्रस्तावना

राजस्थानी भाषा-को प्राचीन वाङ्मय-साहित्य बनी समझ है। राजस्थानी-में विभिन्न प्रकारों की हैं—परम में नीति की बीछी में प्रेम की दृष्टि में शूरवीर की चोरों में वारोन्निर्वाही की राजा में प्रजा की आदर्शवादी में व्यवस्थापक छोटी में मोड़ी सारांश सब जगह की ।

पण राजस्थानी-रा प्राचीन वाङ्-साहित्य समृद्ध है। किसी-ई आधुनिक वाङ्-साहित्य होम-हीन है। आज लू कोई पचस बरं पैसा राजस्थानी-साहित्य-रा बरसही लेखक भी शिवचम्पवी सरपिठा कमक-सुंदर नाच-री ओक कांची वार्ता लिखी ही जिनमें राजस्थानी जीवक-रो सुंदर चित्रण हुबो हो। जिन-रै वाङ् राजस्थानी भाषा हा मोडा अजुरानी की मुकुलचन्दकी नागरी सारवाही-हितकारक-रा सम्पादक की छोदेराम मुकक की शिवचरम्प ओलपीवाक की ब्रजकाव विद्यापी बिदेरे हल विद्या में मोडा-मोडा प्रपास किया हा।

आधुनिक राजस्थानी बाता-री बधन महत्त्वपूर्ण लेखक श्री सुरजीवर श्याम है। आज-सू भीम बर्ष पैकी आर रावस्थानी में बड़ी खेती-री बातां बिकानी सक करी हो। जीर आज तीरुं कोरुं ३।४ बातां बिक करी है।

ध्यासजी में राजस्थानी साहित्य-रें उद्धार री जोरधर जयन है । राजस्थानी-में आधुनिक साहित्य-री भूमिका देन थाप कविता नाटक बर्या बर्या साहित्य-रें विविध जगती-ने लेख-में रचना करी और मातृ भाषा री मंडार भरन साक भाषी लेखकों-ने बड़ी प्रेरणा दी । बर्या लिखन-में थाप-ने विशेष सफलता प्राप्त हुई ।

स्वातंत्र्य 'कच्चा-रै' बाहरी 'कच्चा' सिद्धान्त-रा समर्थक नहीं उन्हीं-री सम्प्रदाय-में कच्चा रा उपबाग जीवन्-रै साक ह । हय वास्तै उन्हीं-री बाला-में आदर्शवाद-रा पुष्ट पायीमै है । यण समाज-में पतन-रै छाटै-में फेकल बम्बडी प्रगति-बिरोधी शक्तियाँ और विद्रुतिपाँ-रो पथार्थ रूप पाइको-रै सामने आबुला सै बाहरी समझे है । समाज-री विद्रुतिपाँ-री आर-सू पान्थिवाँ नहीं मीच-जै उन्हीं-री और मी पम्बकाँ-रो प्पान मीचन वास्तै सै बराबर उप्पर रहा है जिन्-सू समाज-में मैकी हुचोड़ी गदगी आधी हुचन-में मद्द मिळै ।

संघ-री बनकरी बाठा सामाजिक है । कइ-जेक ऐतिहासिक मी है । ऐतिहासिक बाला-में राजस्वाज-रै अतीत गौरव-रा ऊजका प्रसंगा-रा चिह्न है । सामाजिक बाठा-में वर्तमान राजस्थानी-समाज-रा चिबिच पनबान्गुन कथा-रा और सईकी सू मछी हुई विद्रुतिपाँ-रा दरप है ।

बरमगाँठ -में परम्परातिपाँ-रा मारिबादा रीतबला गरीबा ऊपर लंबीचम्बा-रा गीचाँ-रो छाह मंडरावुचो बरमच -में बम-रै नांव ऊपर मरिबादा रै कारै आम्बर-में मीजना-जै हो कवाचाँ-में ध्यक देवणा 'माओ -में केही-रै साथे बम्ब-सू ब'र मरय सई हुचन-रा प्यवहा आर मानु आनि पर हुचन बाळै अन्धाधार-रो जागा बिब्रय गाव -में गा मन्हा-रै साथ हुचो बळो समानुषिक कवाचार और बर्म रै नांव ऊपर पुन बरीजय बम्बडी गायाँ-रा बर्म-गुराँ-रै बरै हुचन बाळी हुचैरा लका बकमै-रा मीच -में बापी प्रतिष्ठा सम्प्रदाय-री आगर बर में कूर-बछह राखणी आर हुँपी-बलहुँपी रो बिचार नहीं करमै मृगधे उपाधी-में हज्जन बकाबन री ल्हाडी मकाबुलि-रा गाँगापांग बिब्रन ह । 'जदाज हुचो -में बाळ जिबबु-रै पुनबिबाह रा बरन लखै है और उम-रै मद्दानुभूतिपुन बिचार करन माक समाज-में जागी बम्बै है ।

प्यासकी कड़ीबाढ़-रा समर्थक नहीं । 'जक में सदैव' नामक कहानी तो समाज है अन्विष्ट-अनभविष्टा मित्रता-की मनोवृत्ति से जी-वृद्धे-आपत्ति चिन्तक है । कोक-सेवा-रो मत चरक करण्यको विदुष्यता-आक्रमण केवलसे रहने गृहस्थी-सू मूषो मोड़ खेच है । एक जेक घाँघो खड़की-जै पत्नी कण-सू कोई अंगीकार नहीं करण की हस्त-में उभन-साप-री पत्नी बन्धन-जै हस्त-री माध्यम-सू सेवा करण-रा नूवी मागे अवस्था है । नै सेवा-रो अलोको कण समाज-रै सामने रखे है जो देखते लोग है ।

बाजों-की भाषा प्रकाश काकी रोजक और गृहस्थ-रैवार है । सभी बड़ो-रै नाथ प्यासकी-री बाजों रो ओ अथम समग्र पाठ्य-रै धम्मने रत्नता बणी हरक हुके है । बूझा संभव जी केमा पाठ्य-र सामने धम्मी हूनी थागा है ।

राजस्थानी भाषा-में अडी-जै बहने-सा आका-आका साहित्यकर—लेख नाटक उपन्यास और अनुवाद विभिन्न विभिन्न साहित्य-रो निर्माण कर रहा है और कुछ सुन्दर मन्त्र जोषपुर बनपुर बोकानेर-सू अन्वित भी हुपा व हो रहा है । मातृ पत्नी मेरी हस्त पुस्तकी-जै अपवर्ण और केकाकी जै अंतर्भाव है । तो जोषा ही बर्षा में आधुनिक हम-रो साहित्य भी बड़ी मात्रा में त्वाह होसके है । राजस्थान-री अथवा और सरकार आपसी करण समाज-में हस्त और पत्नी है—ओ ही अन्विष्ट विवेक है ।

यरसगाढ

[1]

[illegible][illegible]

रानी का'र भीसू गुरुवाँ-में बइस्यो । मोती-री मा आगां बगां-म
 रई मेकी हुबोडी बाखी-झरोखां आखी शरसरकवा नूपर-सु बाज रही ।
 गोहा गछै-में बाखी'र भीसू पड़ रही ।

मोती-री मा जेक कसो सो पूर ओह'र छेक लने मैडी-बैडी भन
 कटरन छपनी । भाग-री बाज थिमनी-नै अचार-ई बैर कसबो हो ।
 घोसू बोखिबो—थिमबो-में दिन थका छेक मरा छाँड़ली ।

मरा कटै-सु छाँड़ली । गहा माराज बोखिबा—आनाका परसा
 दे जायो ॥ छेक से जायो ।”

‘छो मीठै छेक-बो भिबो-ई कर छेकी ।”

मीठै छेक-री छो काज पूड़ी बयाब छी ।”

भीसू हुबो हो'र बोखिबो—काई करां काई नहीं करां ? कसै
 कुटी ओडी कोपबी ।

मोती-री मा कबो—मीठा माराज कसै-सु कबी कसब को ।

‘आज्जी-बूझली कियं बल्लमस कबै है । गैकी बलां करै है ।
 माराज-री आनाको कांजी छो पूछी-ई कोपबी । बचास-रै फेड़ पाँच-
 पाँच-री ससबो पाँच आणां अचारं लीई पूगी है ।”

‘छो बमिडी कोराज को । बाड़ी बचास-री थिक बा ।”

‘पल पलै काई बइसी ? आरखी ब लव न) दे'र २) री पीछो
 थिक्कबी हो । अकबी जळै २) नूपर १) कस छेसी । हरिबा को
 गिल्ली-रा १२) ई बल आसी ।’

बरसू मोतीबै-री बरसगाठ है । काई भी-गुन छो आत्मो-ई
 बइसी । माताजी-री पूजा हुची । बरसो-बो काज है ।”

गरीबों-का जगत शायकी करमी । तनै तो पूजा-ही बिना हूँ पर मन
 या फिर हूँ बर्दे-हूँ सातव सली मारै नाच बहिया ता काँह करमूँ ।

[२]

अहीमै मी रिज कृपा चमकन जागा बहमै बीमू-मै मी-नै
 बरहो-ही बिना बागमौ जागो बर मने भजन-का बीज भा मही । भात्र
 कजरा-मै-ही लुटो हूबो उर हाथी कारीगर मै मगो छर मनको
 सातव र चरै लख कर मकी अर रसिया मगिवा । मनको सातव
 लामुनी-मै हाथ बासिका पैदा कर कर रवा हो जर भाग-मौ कभी
 बायो लू रोद लाव करना जाँचना हो । भात्र-का मित्रि-बा-हूँ मारी माग
 लुदकना हो । बीमू-ही बल मुन-र बासिका—बा रे बाहूँ ! मी-मै कृप
 बाना बायै ? मी-ना मरिवा जातना बहा बीदा है ।

आपरा हाथ-ही निहास मने कर्क लख-र बासिका—देन बाहूँ !
 भावको ल'बाहूँ-ही । कबुन-ही काल हा म जर बाही जिमाहूँ ।
 । क बा । हरेक-ही बहोना मगात हो ।

बागू बहिया—भात्र गरीब हूँ मने हूँ नर का बीपा -

"मन रोद हो बाका-हूँ नाच ही बाहो । दिन मने बायो
 भावको बे'रवा हो । जर हाथ-ही काल । भात्र ही उर मरा ही ।
 र बात्र-का बहोना हो । जो बहा दिशो बाव हूँ हूँ बा भावको
 भात्र -

धीसू बप्पी-ई लोच-बिचार'र जख करयो पन छोई कपड़ा-कसी-रा
 १२) कर्च हुन ग्या । बाकी मोठी-री बरसगाँठ कातर गुड-पी
 कापूस-में बाग ग्या । पाका हुन ग्या बाबैजी-री जल ।

मोठी-री मा माताजी माँडी पकाव करायी जूँरो बाजियो बरेछ
 बजारही भूय-हीय कर'र कापसी-रो भोग बरियो । हाथ जोड़'र
 बरदास करो—मा ! भिषकी कुसळ राखी जूँरो-में सोरो राखी बरकळै
 बाबी जूँरे-सूँ सदाजी बाबै । मोठी-ई बिछाड़ में हीको कमियो पर
 धीसू-ने जीमन-रो कयो ।

धीसू बोखियो—मनै लो अवार सी-कंपा जाती है । गुरही नाल है ।
 ये बीम हो । म्हाई लो ठाव उतरियां बल ।

मोठी री मा बप्पी कैवा-सुनी करी बद् माताजी-ने जूँरो बाल'र
 मूँडो लैडम-ने बैडी-ई हो'क हूँ-में सींदा माराज आ'र बोसो
 सुमायो-ई । गरजना करी—कारै धीसूबा ! जूँपी-रा रसिया छ ।

धीसू रै हाथ-रो कयो हाथ-में-ई रैव लो । कापारी-सूँ बोखियो—
 अचकळै माकी दो माराज ! जाल्यै महीनै दोबूँ बरियां सलो-ई रै वसूँ ।

'बेसी कडै-सूँ ? बाल-ई तिर-सूँ ! उमर-हस्तो बद्दी बप्पी ।
 जाला-कलाबी लो हूँ जालूँ कपयो । राखो उरकाय हूँ बा । पडै
 मायै हाथ व'र राखैला । कल मारैबा'र काकोमी-काकोमी कै'र
 रसिया बरकळ पडैला ।

मोठी-री मा बोखी—माराज ! हाथ ओरूँ हूँ अचकळै माकी
 बास्ता । जाल उतर री बरसगाँठ-

बडगी हाँड बरसगाँठ ! बैरा मास बडालूँ पर कैवायठ-ने
 जालो — ३ .

‘माराज ! माछ करै बहिषा है । कुछदा सिक्क जाली तो भी बचै है ।’

‘आ भाई ! कुई होखो हूँ तो आज जाली हाथो भी रख दोयनी । बहिषा हो-र-गूँ जालूँ ।

बीम् माराज-वा एग आक-र बाकिबो-माराज । अबकड़ी बार माछी बगसाय हो । मायबो महीनै -- --

‘माछ कुच करै कुडुच । म्हाँरै तो आया-गर्नाई काम बानै है । रजित मत्त कर । बैसा बहिषा है ।’

‘लमै होवा माराज ! तो आवरा अवार लोई कोय-नै राख्ता ? ल’ तो कुटी काछो-नी कायनी ।’

‘तो कर्त बीज सज्जल है । बहिषा है-र पाव्री क जालीये । ह्वाँ के र माराज तीना-नै मिर-गूँ पगल लोई देखा बच कइ-रै सरीर मायै बाँही-री लीब-ई को देखो नी । मागी-रै हाथो-नै हो बहिषा बाँही-रा बहिषा ।

‘बैसा बा ! बस अब मोंहो मत्त कर ।

‘म्हाँरै लमै तो बीज न बस्त । आ काया पड़ी है दो जायो । आगलै महीनै आप-वा कइ माय-ई बहिषा राज् कोयनी, अबकड़ी बार माछ करो कैर

‘कैर म्हाँर कर्मा-रा जइ-ई तो ल-गूँ पाया बहिषो । बैसा बछरी एग जमाई है । बीज-बस्त जिबा कोयनी ? माछ-री भीवत-ई लोवा है । बैचै करै-गूँ ।’

आ क र हर मागी-रा हाथ बहिषा-ईज । मागी घा-बाय मामो ह्म र रावय मागा । मा ! मा ! काछा ! काछा ! ओ- --
म्हाँरा बहिषा अः ‘बहिषा बहिषा है ‘आ-मा ओपरे ।

भीमू बैठो-बैठो देखलो रथो । मा मूपा माथी कियं जमी माथे
पड़ी हो ।

मेह मामो

सैराज बाजै । विरजा-रो आबक डीक नही । कोम जायवा
कपड़ियां आभै सामो ओखै । प्यार मिलत भेडा दुधै कटे जई बल के
कछाली जयां ली हांगर मरण्या लो कछाली जयां दोष ली । मै-सो
जायोहो । सगळीं रा मू का हुक्का खाये । बाल हचो मू लो के कोम
बाप'र सीदाथै । हांयरा साक बागा-जयां बाल-रो बंदोबस्त हूवै ।
दिन-मै बचो-ई बाल के वन सिंजवा पड़ी पाखो सली लैकाह ।

सिद्धार्थबाला-ली वन जायी । जयां-जयां डयाली-रा लपक
विद्या र होमरो जयाली बैठा । पाँत-भाँत-रा कृपा काहै के विरजा
जात दिवा-मै होली विरजा मोही होली विरजा बकर कर होली ।
न पड़ी मज्-मै लो हुकड़ा र-ई लाँस जर लडीये ली कहवा माँस-बूटी
काले जर माल उठाली ।

कोभी ॥ कोमो-री भीवत कोरी हुयगी । कोभी कैयें पुन्य
बरस-रो कोय हुयगी अब आ बलत जायी । कोभी कैयें विरबी-माला
आप-रो लप जाँच छिपी । कोभी कैयें जंगरेभी इसी छोटी बाली
विद्यो होम जर मिय ली उठ-ई गया । कोभी कैयें बैठा सगळ-ई
बालस्य मै डग बटाथै अब बरसावको विरजा ली विद्या ! मू का
विद्यी-ई बाटी ।

‘बी-सेह-रो रो बजिहारो भी देख्यानें महीना बोट था ।
 ओछद-नै-भी को मिळै नी ।

‘ज्ये सूजा सोगरा सामा को जावू नी उस्ताद ।

‘जोर कांजी बहै । राम रात्री हो जद सो-कंजी मिळतो हो ।
 जन सुनो हा कै घर जन याव बहरो हो जिन्हो-नी बंन हुए जाती ।

‘जबै ?’

जबै कंयरी ? बापका डांघर अडीवै-बडीवै जटका मसला मर
 जाती ।’

‘मायकाका तो जाना जाग-सू डांगरा-रै मरवै-रा समचार बण
 यावै ।

‘तुम जिवा-नी जानी तो देख जिवा मिज्ज-री दसा डांगरा-सं
 है नू डी हुए जाती ।’

‘तही नही मिज्ज तो मज्जरी कहर-ई पैर भर केती ।

‘कहरा के-री ? मज्जिबै-नी-री ? मज्जरी है कडै बावू-नी ?’

‘तही तो बहै कांजी करतो ?

‘छिंघ पासी मूंडो केर मिज्ज जाती । जकजिबै-नै सल्ल में परज
 केता । ओइती मज्ज पूर-कसबा बावू-र डांगरा-वै बैरज केता । ओइरी
 घर हू पाका-नी हुए जाती ।

[३]

उडीक-नी-उडीक-में पैछो सावुन बीर जो । बीबोई जाओ
 बावुन जाओ । बोई सामी बैकाव । जिवांगे देखो जुज्जरी ही सगका-
 री जान्ना-में मै कानोको जानै बैही-नी कोजी बजराक पदमचल्ली
 हुवै ।

मदभेदवार रो मिल हो । मास्टरजी र बीसी जेक बेमका बात-रो
जनुबाद पड़े हा । बात पूरी हुकी । मास्टरजी गमघै-सू वमोना पूछता-
पूछता जारी माय-सू बारै देखिया । किणी कचो-मोका म्दारी ह सुणो
बातजी !

बारै फुरैर देखिया ता जोगै सुगावां राखर हीगर मिलत है
मिका ह कोरै १२ कया जमा । राखर कथाहा कथाहा मिलिपाहा, जेक
बाकरो बिबी-री जामिया-में मांस हा बड़ो-बड़ी गधू-गधू करती करती
होरो होरी बोली-राखर मगा है दिक्का पड़गी कोरै दया करो जी ।

‘बारी जग कोर है ?

‘जायक हो बायजी ! क्यों सुकाना !’

‘कदीनै-सू खाया हो जर कडीनै जामो !’

मगर पत्नी-सू आवा हा म्दारी मिल जामो ता घड-ई र
जामो । इरो में मगा राखर रोमण जामा । होकरो जक जारै रै मायै
पर हाथ धरैर बाकी—‘हमै-रै बाप नै हम आवा । अ दामू म्दमा
पावा है । ममै हम बारा आवा है । बायहा जायक भूला है । निरम-ह
को भोगी जी । की कडो-जामो हुके ता दिरावा जामा !

मास्टरजी शरिया भर बाका माग जर माय-सू मंगाया । सगकां-र
हुकड़ो हुकड़ा पोगी आवा । राखर बीककवां-आकरी राई रोटी मायै
पड़िया । जेकामै-रा चिया दिरावा । की घान बाधिया । जामकां जाम
जाम जामिय हा । बीसी बाकरी-वै पूछिया-माजी ! बारी ता आ
हाकन है राखरां-रो कोरै हुकी ?

बाकरी जक जामै-नै जामैर बाकी—‘जो म्दारा आरु ह । जल हू
कारां-मै माय सेसी । बहीगर एकैर मर मिरमी

इरो में जक मिलन बोधिया—‘ज्याय कर दिया । अपर जायरा ।
रात बारी-मारी कात देनी । दिनेग नूबरपां राखर म्दारी जामक
मिदिया ।

दूसरो बोझियो—रामजी भवकै बिरछा देसी जणै तो ठीक नहीं जणै थहारी को मोच-ई है ।

‘बोच मोहो हुन्को उस्ताव ! हुं जगद हुं—कैर बंसी घर कभी मुँहो फियो ।

(४)

रागलै अडबिपै-नै साझकी-में बाझियो । बोझरी पूरा पछा सांजल जायो । बिड हो-तीव सेर बायो छाझियो जिहो बहै जलन-सु मोमकी-में बलक छिहो । रागर देखैर पूजल जागा—

कहै बाळसाँ, दुखी ?”

‘माय खे जा (कल-कर) मेह मामी-रै, केरा !”

कहुँ, जणै पक्षै रोखै कीया है बानी !”

बी मरई ! बानी को छाकै-ई रोखै है । काका ! करे काका ! देख बानी रोखै है ।”

‘मात्री ! रोवां कहीं हुसी ? छाटै मिलल जागै-ई कोर को बाळी की जिहो को को परमात्मा है ।

रागलौ हुकी बैडी-ई हो के इत्ते-में कंभी-बाळी भूताराक भाव र बोये कुमावी-क्यों ! कडीन-री ल्यारी करो हो ? कंभी पैडकी-ई को बाणी की ।

कंभी कंभ-सुं कुकाला ! बाँ-सुं बसा फिसी बाणी है ।”

‘जा मरई ! इहा काम को बाळी की, रागलौ है जल्ला-गला बायर है । कुई को बोझी करालबी-ई पयसी ।”

“रामजी रागी हुकी जह सो छुई कर देख् भूताराक को ।

‘मियै-रौ मैं फिसो बैच फियो हो ?

तो जह देखै बतला कात कक ?”

“लंबी दे भीर करे कोई ?”

गंगको बुझी तो बढो-ई हो । हाथ पसार'र बाखियो—म्हारै बक
बासका महराम ! भीर ता म्हारै कने कु ई-ब-काई ।

म्हाराम भागे भाव-भर लूरे मू चाई मै छोड'र भाव-रो रस्ते छियो।

दुरव खाणा बड पाहोयण्वा मिलन जापी । गलै मिल'र रापी ।

बाँकरो बाँझी-जाधा ह। जेवा 'बुच जामे' कोई हुसी । जीता रवा
तो के मिछमा ।

जोगी हुसी माझी ! भगवान सारी पता चोन्नी करसी ।

“म्हारै ता मकाह कु ई होला झीसरको ह । दमरिया'र गगखो
गळ र मर बही जाम ।

(२)

“अबै एक ग्वा दाही । पम्मा का बाझीजे नी ।”

“ई कोवा बामू हू दाही ।”

“देव बैरा ! मई बाजे ई नी बास हन बास घना म्वाला है
म्हारा बैरा ।”

“मेह जामो म्हामे काई बैमी दाही ।”

“माहू ।”

“मछे ।”

“बुच दही दमरिया, गला ।

माचे-ई दाही ।

“हाँ बैरा !

मदी मू चिममारी है ।”

माचो कब है पाली ।

‘धर बाही मने काई देसी !’

‘तू बोरी है तबे गुणिचा बूझो ”

साची ? थोहो रे काह ! (बोही दूर बाहर) ‘तू तो ककरी
को बाहूजेनी गुणिचा मने । मेह मामै-रो धर बाही बूझो ।

बेदा । ककुरजी-ने कै भिछो मेहो कर दे ।’

“ककुरजी मेहो कर देसी ? ’

‘हां !’

(सगळा जळा बाचवा नाक्या)—‘ककुरजी मेह मामै-रो धर मेहो
करो मेह मामै-छे धर मेहो करो । (खैर बोही दूर पडै)—‘बाही !
मक कामी है ।’

‘मने-ई काली है ।’

‘मने-ई ।’

‘तू पैका काम ।’

‘तू पैका । (मारव-ने दीहै)

‘ना बेदा । कको मन ।’

बेक देह-रै लळै चित्ताई-बी । गंगळो जकड़िचा चुग कामी ।
डोकरी रोडिचा पोबुल कामी ।

ककरी-रो काई पूछो ? हवा-री सिंह ई कोपी बी । रिक्काई पाखे
बोहा-बोहा बाहूजिया बूझै हा । देकता-देकता बीरजी पक कारो
मारियो । जपनी इचामीजण लागो । बास बाच-द पाणी पकव कामो ।
मेह जोसरिची पो हरे जोसरिचा कै केर रोटी-ई को खय बी नी ।
डोकरी बोकी-बी देखे बेदा । पारे कचा-सू रामजी मेह मामै-ने
मेज दिवा ।

आ तो चिरणा बरसे है बाही !’

गाय

[१]

मिथवा-री हूओ मीच ही के बाकी सिदाही मिर जाव । ठरै-ठरै
री-ओपदिवां पेछी हूपोही ठरै-ठरै-री बोकी बोकी । कोई केवुओ हो-
बावै कु हे होओ, कसाहूओ-ने ता मायो केवुन वही देओ बोवीओ ।

हूओ—मार्ह ! आ तो पईसा-री कीर है कई कसाहू । कई
बीओ । धाव-काव तो बरम-बरम से बूझै-में पछिवा रेवै है । ओक
कपराजजी कहे है 'कपली पछै तो रोई में ई करली ।

वीओ—हां किसा रेम्मा जी अबे बरम-ने कुज पछै ! बरम रे
आवै पईसा तो कई जाग-ई कई ओक बोवनी ।

बीओ—ये काकर मिहो हो पछै । बरम-ने किसी सारै-री बात
है । काकर-बाका-ने ईज बोईओ के के सगली गाथा-ने बीबरा-पिरोक
में बात देवै । कई धामा-ईज सिन्दु हां के बोवनी ?

पांचवी—मार्ह ! कोई-ने होत बोवनी । मलबाव-री मरली हुनी
मिहो काम बहती ।

बड़ो—बाबै मलबाव बाव-री मरली तम-सू बलाव ही होवै का ?
कई बातें करो हो । हवां तो वही के पांच-साल अजा पेछा हूबर
सगली माया-ने बोकी बच-र केछा सगला बाव बाव-री सेव
बचारै है ।

ओक सिद्धकचारी सेठजी बा'र बोझिवा—काव री ओच है ?

भेक बन्धो—छात्रक-री गायी बीबाम हुबै है ।

सेठ—बाजबी है सदा मुझ-री बात है ।

कट्टर गौ-भक्त—गायों कमारुं खेपै है बियै-सू ऊपर कोई बोझो को दूबै नी, इत्ता हांगरों-री १२) मुकालै बीधी ही है, कुई बेई बघो नी लिखक कान्ठ-बै है हीनो तो बैसख-बहम-में हो ।

सेठ—बा है मारुं ? आया-रै कुज गछै-में पाछै कुई कस-रो सौहो कोवनी ।

गौ भक्त—इबै-में काई बूझ कस-बठ बगावो हो कमारुं-रै हाथ-सू गायों कोडावनी है ।

छठ—पण मारुं ! इत्ता हांगर तो गछै-में पाछजा पड़ै नी ! आ छात्र-ई मूँची बात हुबै इसी तो कोबनी नित-रो रोखण है । बा बाबा रे ! कुज बीइ बेचैर ओछको माछ खेपै ।

गौ-भक्त—तो मारुं ! पीबरासिरोठ-में बाछ दिया ।

सेठ—पईसा कोकर-रा को जायानी चाम बीरीबै अब हाम मारुं है ।

अक भरोवो—इबै मिळगिबै सेठ रै काई खेचन बै है । ओछों मूचैर तोखजियो है । लिखक तो हाथ अक रो काबैर बैसख बजियो है । पण कस-री बैसख है—काबो लिखक माधरी बाबो बेईमानों-री आ-ई निसाप्पी ।

बंसोबर-ई रमै बैबतो ऊभण्यी । सगळी चाला मुभी । माबुक तो हो ही । जॉप्या-में पाथी जायबो । पण कदै काई ? सत्ती-रा सांग बहो दोरो । हिरदै-री निसासा खाने मूँचै-सू बीकळ पविचो—'इत्यापण्ठे पिळी बण्ठे दसिद्वण्ठे मणोरधण ।' इरीमें-ई तो जाणै छट बै-ने कोई बाल पाइ जाथी जांखिबी-में जासा-रो जांग जाय बडो ।

बोली बोखण्णालो—डोह सौ अ क यधै सो पावै । डोह सौ अ क,
डोह सौ दाय बोखो डोह सौ .. । बोखो कैरै-सै बोखण्ण हुवै ठो ।
डोह सौ अ क डोह सौ दोर डोह सौ छी

बंसी जामे बचरै बोखिबो—मार्ग ! हुं वर्षूछा, वन १२ मिकर
डैरण्ये पवसी अ क यधै सै सखा करैर धार्य्यु ।

भीष मांय-सू अ क—रग द्वै रे शेर । कोई मार्ग रो झमझम निरुक्तिवा
तो कर । ! बरसी-सै मछान-धखी किसी को बसै बी ?

कहर गौ-मछ कर बीजा लो मछान-री जै सखलल धर्म री बी ।

बोलीदस—बैगो जामै मार्ग ! नहीं जामै बोली कलम हुच जाती ।

बंसी अवार कां कैयैर वर्षूसिक्क डडलीर करै । डड सेड
गोपीरामजी-रै बंधकै वृणो । सेडजी इतिवर्षा-री मंडली-रै बीच में बैठा
मन्द सुन रहा हा । अंकुषा भीमिबोही बी अर किसी बीजी दुबिबा-में
शिवर रहा हा ।

बसी—सेडजी । राम राम ।

सेडजी—(जमक'र) जामो जामो गहाराज । जामा^१ बचारी ।

बसी—बख्खा मेळा करतो जामे बखिबो ।

सेडजी—(हंस'र) देखो सुणीज जामोका गहाराज ।

बंसी—मछा-रू गौरु करो मछा ! जामर तो है

सेडजी—(बाल कर'र) डेह तो हूँ पण द्वै लो मिमल-रू गहाराज ।
वृणी पर बाध करैर कवा—कई मिमल मिमल रै पवखो कलासे-रू
अयदीज जामे । अबकै बंसी-रै द्विरदै-रा लल ललक डडिवा ।
बरम्परा-सू द्विरदै में बर डिवाके जमह-कोत रै विरवाज-री बीध
दिखाती । बाल बाध'र बाखिबो-खेती । =अबकै रै नाम-सू जामो दोबायो ।

मदड़ी—हां बाप है ? अबड़ी बापड़ी गाया हूँ दुबै है ।
ममाय बा-रै कपूर बड़ो लुल्लभ करे है, भासा रै बिचवा-आमरम
में ।

बंसी—(बीच में ह) जवळ कपी गाया नहीं मंजिषी गाया ।
हत्ती के-र मारी इलीगल समझासी ।

मदड़ी पांच सौ-रा काम दिया और कबो-हूरी लो खोडिवा मन ।
मऊ आपीत्र लो कर्त-रै मारै लड़क कराय दिया । बासी असा-रै
नांव पर गगन होली आसीये । ऊपोंदा-नै ख क ज क गाव द दिया ।

बंसी—येही ! गऊ-बाल कुल देखैका भसी ?

मदड़ी—म्हारा ! दास पातै ह देवा ही । भासा लो गऊमाला-नै
बा-रै हूँ पुत्रा नै सवा करण मातृ मृपा ही । मा मा कैविया काँह
कमाई-रै दास-लै लूण पर भी मा-री सवा की करैका नी ?

बंसी आलीकई दे-र बासतो हुआ । बाँट्या-में घेस-रा अम्बू और
हिरदै-म्बू अवाय उठती ही—दास र दुनिया ! हुनै बाणीण-न दिहै रा
हंमर-नेर 'अरिवासी' देवै है । बिकार !

[२]

बंसी छेक गाव आत-र परे लायो । आत-रै हासा-म्बू ईज
आरिपुतो पीपता ठाव भाव करत गोबर उदावता और दाम्बू बगल
हूँ बता । बंसी-न आरुता हन-र गाव दूर-दूर करती घर ये-री आनिवा
ले सरळता बचक्यता घर कल्या-री मिळावत-रा जाल माल प्रगट हुता ।
बंसी मुँह-म्बू मुँहा बिपार मावतो—गाव किमी'क अलस्य बग्न
अगलाव दुनिया-रै आत-रै बाग्ये बसायो है । आ दूब-म्बू बल
दास-म्बू बाचन-राजि गोबर-म्बू बलीता घर छुहि मृत-म्बू आरिपुता
आलस-म्बू बीरज देवै है । काँह-काँह देवै रा उपकार सिखाओ ।

अबैहँ तो इसै उपकारी जीव-रै बरसण-सू दिखू बापवै बिरछल
हुवा समझै । अपि महरमाषां हबै वास्ते-हँ तो हबै-बै मा कबो
हँ-बा साथै हँ 'मा' हँख है । सगळी-बै अल-वाल है भेद भाव है बिबा
दूख-रै कय-म जीवण-बाल देखै । बाप ! इसै उपकारी जीव-भे मारण-
री बचवन्वा देखबवाळै मिहँपी विषय-भे काहँ 'घरम' केबो
भोग है ?

सोचला-सोचनां बिहँ रो जांनिवां पेमाधु बान-सू डकडवाबीज अयो
बीर बा मा-मा क'र गळ-माछा-रै मूहै-सू मूडो बिपल केचो । मा-
बेदै रै मिछल-रो ओ दरब बडो ही प्यबीछिह हुचो ।

बीरै बीरै गळ-माछा प्यावणी । बर-सैं जालै जागड़ बरसगो ।
जमी टाकयो-भै लोड में छिवां बिबै-रो जाह किया करलो । बिबै-रै लरोर
पर मैहँ-बा अन्ना-डकवा रचवा गळे में चुपरा बाबिबा । डोबडी बड़
आंगलै में बाचलो तो बिबै-रै साथै-मागै ही बंसी-रा हिरबो अस्ताह'र
आत्मन्द-सू बाच उठगा । मा-बेडो होला-बै साक सुचरी राजवा । दानू
देखी बिबा-रै चुप लेवना जाय-बाग कवा करवा—बंसी गाव री गैका
माग है । काहँ-कोहँ केवला-गाव सारो रन-सू मैव री-मैव हुबपी है
आबो अह प्यनिवां में सीम हा । बंसी बाल-रै हूब-रै बारतै बिबै-न
दानै पग-री भूड केर गळ माग है कपर-सू उबार रचवा ।

छोक दिव गाव चुबली देखा बंसी-री मा कबै आबगो बंसी हो
बनी माँक-सू दूब काह'र बाकी-रा बल इवा-रै चाह रिवा । मा
पोखी—बंसी ! हो बल कियो छोह दिया ?

बंसी—रापणी रै बागलै ।

माडी—तू तो गैको है बखी ता इवां ही बचिबो गुबिरो दूब
पूब केगी ५२ घल-नृग ग्या अयो ।

बंसी—आ मा ! बापही-हठी कमजोर है जल्दी । दूध-मू रुकै-रा
 दाह मजबूत है सो । हूँ हूँ-न दूध दूध पा-पा'र मोरी करूँ । आ
 म्दारी गपनी मा साचै-ई धम-रा जवतार है ।

मा—तू तो गैका है । मोहन मोहनी सार दूध बच कोपनी ।

बंसी—मोहन-मावनी ता आ लीजी सावनी ।

मा—हां ! दूध क्योंनी ? आता घना कैल माया । दाहरी-रो'र
 जिमावरी-रा ज क-जहावरी करी क्यों ?

[२]

मिथल-दाहरी बुबलन-ई बिचित्र हुनै ह । कैह-नै आह प्यार
 करती दग'र दूध-नै कुल जाल किया ईरका दुबल जाग जारै । गऊ
 माला-रा घर में हूँ तर-नो मान-मनमान आह प्यार देल'र घर आका
 कैवल मागा—आ घर में किया बीरो बाज मिथो दूधरै काम-री ता
 पुरमन-ई का मिछै नी जल देगो जलै हूँ-री न दाहरी ।

मावत-रो मा—मावुनी ! ये हूँ-न दाम-ईज बच्'र दूध क्यों नी ?

बंसी-री मा—नही कैरा बंसी लदे ।

मोहन रो मा—दो-बार दिन बाह'र है जाली । मिथ-रा दंडा ता
 छट जाली ।

बंसी-री मा—बारै जवे तो बीकणो ! सोमात्री-नै बुबा'र गऊ-
 दाम देव देवा ।

मावत-रो मा—जदे जलै कब दिवा ई जीवने जी गऊ दाम
 बिवा है कारै-नू दूध जाल काई दुध जले काई कमी ?

बंसी-री मा—हां बल ता बीक है ।

ज क दिन मावु-बहु-नै मोका बापगा । बंसी नु ई काम बगई
 गवा दा । हूँ-नै बह १ २२ दिन बीको हो । मा'को देल'र बनी ही मा

धीमाजी-मै बुझाव'र गऊ-बुल देव दिवा । बूझती बछी बंसी-री मा
कयो—ओमाजी ! गाव-मै सोरी राखोबा । बौझरी-री आँखियाँ डबडबा
बीजगी 'र गम्य मारी हुयो । आमै बोझो-बापही-रा सैतकार बरै
बर-रा बुझवा महाराज । म्हार घर-री धन-जछ बूझ गयो ।

धीमाजी गाव मै रोरी । बा मचकी । डाल-री बर करव छागी ।
अबकी ओमाजी मै बछी-री मचव को । गाव माछाछे हुरो । बिन्या जर
कय्या मरो मोझो रवि घर कानी नाथी । यथ कइछ । बा डेकी
बैकइकी बार निरन्ना-मरो बिजर केई मै बैसन साद बसारी, वन
ओमाजी-री विच-विच विचै-न बढै उज्जवा पग उममन का दिवा गो ।

बिजोदै-रै शोखै पकसै माँप-सुँ 'करवा'-रा बैकइका वरसय बंसी
री मा. बहु जर पावेला सगलाँ बिया ।

[४]

बंसी निव-रान कय्यम बैवम काखो । मै-मै रै-रै'र हई बल पाव
जावती जर विरदै मै हुक बछी । आँखियाँ माँप बंसगी । बैरो हुसो
हुवमा जाखै किपी खंड जिपी दुर्ग । न कखो धरा लई बैदो रैतो ।
मच-सुँ हँव कवाकी बलाँ करवा जर बैवतो-मा । तमै वन बढै बुच
कखतो हुपी ? वन बारै वन बैवतो हुपी ? हाव मा । जाव सुँ अबल
हुपगी म्हार जीते भी बुच जाखै तमै काई-काई हुक म्येपवा पइता
हुसी, मा ! बारै आँखियाँ-रो भाव बुच समझतो हुसी ? ओमाजी-रै
धरे बरमाई-रा कागर मोकका कभा हुसी । घासी बढै बुच परवा करको
हुसी । विचै-मै कयै-ई समाव पर सुग जाती कयै-ई बर-जावत पर
कोच जातो कयै-ई जातम-म्याली हुपी । विच विच बछी-री हावठ
हिगइती जावती ही ।

अ क दिव बंसी मै बराबर बुझार बखिपो रयो । राव-मै बुझार १ ४
बियरी हुवयो जछै रै जोर-सुँ बक्य कायो । रै-रै'र बैवतो—मा

गाम्भी ! तू कटे ई ? हाय ! म्हारे भीता-भी तने कुमरै-रो द्वारा देगल
 बधियो ! कहे-ई केतो-अरे ! गोपो-नै पकड़ा रे ! बारै नहीं दोड़ जायै ।
 कहे-ई कबला-अरे मा ! थां जाणां कर्हिं दाम त्रिधा ? केइ-नै मूख-रै
 आटे मारज-रै वास्ते भीमै रै घर भेज देयो कर्हिं घरम कपीमै ? तामम
 करजै-मू मांम जेव जम-मू चमल्य जागी । डाकडर कैवा के ह्यै रै
 हिरदै-नै देय जाली है हाईं केय हाज रो कर है । बैदजी भावा ।
 बधिया लुराक ही । हिरदै-री गलि में आईं मुणार हुवा । मरज-रा
 घाटी टको । दमी म्हाओने अर मांम म पदिया रया ।

[२]

आसाओ-र घरे जण-इ हांगरा हा । कुज ह्वा गाथरी परवा करता
 हा । कुज दिका त्रिने-का भावा मारियो, लोरी बालिया । दमिवा पदे
 दिमैम-म दिवकारी है र घर-मू बाईं घर जवना । त्रिम अर गाव
 बरछी भावर करती फिरतो । पामको-रा म जहवा अर मीम दुरवा ।
 बावको अवाक त्रिवावर क-नै आर र कुल रो कैर् ?

अक दिम बंयो लावइ में काम आन-र बिचरती में गरक हा ।
 हल में अक ज्ये कवा—भा दगा दमी भाईं ! बांरी वाय र बरछी ।
 दमी दददाप'र उदिया । गाव र गछी में बाव बावज-री बहा करी बज
 हावर जा'र बधिया 'र अयेव दुखवा । जग दुवा ज्ये केर पागल दार्द
 दारिया अर गाव र गछ -म बाव पात्र ही । हिरद-म भावा रो बग
 राकिव ई का ककना हा भी ।

मा ! मा म्हारी गामगी ! गावा ! ननै नहीं नरी
 मा ! मा ! आ पाम नहीं है मा ! म्हावा कमूर । ह्वा बावगा-म नरा
 देवना म्म्व हो'र त्रि अरे गाव बधिया ।

सादे-आळो

[9]

‘क्या मोह करने है छात्र-जो ?’

‘देखो कारो ।’

‘देख दिखाव सिपों में परो क्यों लपको है ?’

ਸ੍ਰੀ ਸ੍ਰੀ ਸ੍ਰੀ ।

‘नहीं दूँई कोऊ सराफरी सेधो-रेखो ।

‘सोम कपिणी ।

‘बड़े-समय का क्या ?’

ਕੈ-ਰੈਂ ਰਾ ਕੁੰਦੇ ਜੀਘੀ ।

‘आह आया ।’

‘वा म्हाराज ! पद्मसोई कौ लो किसी रीत है ?

(जहाँ-तै हजारी लजारी देख-सर) तै देख आली-करोला लो
 होले है । मल ओक ककविरा है । लै दस आवा ली । मल बाजव्ये हुन
 लो बाज है । सोरी आवा है ।

મહી અને માછલો બી ।

‘‘ਏ ਬਜਰਾਜਾ ! ਆਪ ਭਾ ਕਰੋ ।’’

(જોક ઈસરો બાજુનો પૈસો બાજુની-સુ)-જ્યાં જામિયા બોલાયા ?
પાસમાં ।

‘मक’ पक्षे क्या हाथी-बोहा बेसी ? (छायावाच -ने) वाक्य परो
राह-राह : क्यों सिम्बला पक्षी गीता काव्यको मिले है ?

धीमा ! जा बाधिया रे ॥ बाहर-से खोरी-से खेरे बाहर प्रगल्भी बनो
 ॥ बाधियो ।

[पापा महराज-रा घर । पापा महराज-री मा और आदमी-रा घोरा]

हो तो आठ आमा बीस । नहीं जै उदाव री धारी छकदिया ।

बाराबा में जबापा हा माजी । आठ आमा बीस जोऊ ?

रहीमा लाका री का खाने मो । हवे कइ कादा बचावा मो ?

पापा महराज—मा भाई ! हाकरी आग महरा आठ का चाखे मो ।
बाप से छकदिया बाणी ।

मै-मू कादा पापो का बचे मो ।

हाकरी—मै क्या करा ? कुरा बारा । क दियो भी जादला में छै
र बाप द

बापु कहै ।

हा बुझाव का बापु में भई कुल पारा कुल-केवा बेदा है उर
छकदिया बचाव देखी ।

बापदा पापा शिवम गारा हारे छकदिया भेरी वरम आमा ।
हमै गली-न पापा गलिया बजा बजाए माद मे शिवदाव ही ।
माद न ही बारा कन्है माद बल्लो हीर कन्है छकदिया मांभे
बापु बापु देका माई । बापदा जया पारा दला ।

माताजी ! बाराणा म जबा'र आठाना क्रिया देवी हो !

'बबा केपू' ! म्हारो डाकरो गारमिरी है हवे कवर म्हारो मोर का बाखी मो ।

डोकरी बोखी—गाली कभी राह-रा क्यू रीझर करे है ?

माजी ! जरक बाखी है ।'

बाखी तो नाक नहीं तो बांध खै बाबा ।'

काहै-आखो खुको हा'र बोखो—जाही बात तो कोनो । पल खैर माजी ! खो नकावो ।

बादा मालीजयो । डोकरी बहूसा बेचन कामी । हूँ-हूँ में दो ककड़ियाँ म्हारो पड़ी होसी । गरज'र बोखो—ये ककड़ियाँ को माखीबी कहें ?

'माजी ! राखी करन-बै दो ककड़ियाँ राखी हैं ।

'राखी है गाली है कभी ! कड़ियो बीबत-री बीहो क्यूँ तो ससो को हुकै-बो । आ कैं'र डोकरी ककड़ियाँ उठन करे । काहै-आखो आपरा सो मको कै'र हुरनो ।

[४]

पो ककड़ियो । हवा कलजो माव-खू नहै-बीसरै । राखी-बोखो म्हारी बुधयो । काहै-आखो जर बेरो बीरो काहो बेचन साक क्यूँ है हवे चौक-में जर क्यूँ बै चौक-में भरक । कोन चौक चौक-में घूना तपै । बोरा घूमी बिना तपन-जाखै-नै बिगा बिगा'र केपू ।

घूगी बिना बीर तपै

बै-री मा गबैना तपै ।

हूँ-में काहै-आखो कबै कर मोसमियो जर बीरा बतकर फिरिबा—बूगी है ।

५-मतीरा-आळो

‘छंड बाकी है ?’

‘और के छोड़ काचो हूं ।’

‘के मोख के ?’

‘म्हारै कयै निहको कालेला कपू है कयो, मोठी मर्य !’

‘बाजवी है गंगू ।’

‘बोख बाक ।’

‘येई लो हो ।’

‘बन मतो है तूई बोख-बै ।’

‘येई कण मुमन के हो ।’

‘बरे ! रोखड जोष अरु ! कोलै-बो धाबवते-ई ।’

‘बार बरिवा !’

‘काद-रा ? कयै अंड बाबिवा है कयी वन्धू ।’

‘तो हुआ बहा मारै उडै हुआ हां के ।’

‘माला मुबबोरी करै है ? डैर तो ।’

बीर सा जाया ‘जाल-बै जाल-बै कैर छोड़ मिवाव दिवो । गंगू बाबिवा—बोख-बोख बाकी कपू तो ।’

‘जेक-ह बात के हूँ ? कयै मोख-बोख तो को कयो मोख ?’

‘हो जेक-ई ।’

‘तो जी जै माली पीव है हो ।’

६-चेजारी

‘दुजगार भोख छै, बाबा करीदा !’

‘दुजगार जयै जिम्मा रखा है माजी ! बल्ल बल्लगी से देव जिम्मा
भेई है सिपा ।’

ना बाबा ! जारे न कसे जिम्मा न बाबावे ।’

‘जब देणो छै केजारी-रा ९) जर मजूर-रो १२) रा महीना
हानी ।

‘होसी कब नहीं ! बरूसा जाले माजी-रै-ह बाबै है कबू ?’

‘जाय-री लुसी-री बाब है माजी ! देव छी ।’

‘धरे करीदा ! राम मायै राज दे वेडा !’

कज जा-हूँक है माजी ! बला केणो धरै तो हराम है ।’

‘नैर है तो बलो-हूँ बाबा ! पल कर काम ।’

करीगर काम जागा । हुपसै रीसी-वाणी-री वेडा दुई । मै काम
बोहर रानी लालम वेडा । डोहरी गल-में सऊ बाबा-र बोली-जर !
हल काबो कावनी । काव-रा काम करो हो कारा कावना
जागता हो ।

बापदा छह-पह रीसी काबो जर बिजम कलाबुल लागा ।

डोहरी—अरे ! भी कोई है बाबा ?

‘बिजम तो पीदा कभी माजी ।’

‘जले मने को पापल’ तो बीजी जागा जोष बां ।’

बापदा नकराई-मू बिजम पी-र काम में जाग गया । बू-हुपसै-रो
रानी लालाई कजर-मू उलझै-री दल ।’

एक मजूर ने निम खाती । वै कयो—माजी ! पाणी पानी नी ।

“अरे ! या कोई ! पैदा तो रोह बलीबिया पक्ष चिखम बाली घर
मने कैयै पाणी पानी । माजी सारो दिन भारै कमर डी बेडी रैबै ?
कब ? बाछन जोगा ना ना अत्य काम करै ना मने करन दे । तौ
पापको-ई पी ।”

जखै पाँचो घर दुई क जेठ जयो मूलच डुरिबा । हाकरी जामियां
पाद-पाद जोवा अर पोखी—करीबिबा । ओ पारै कुछ गयो है ?

मजूर मूलच गयो है ।

ना माई ! इयै काम मुन चाह बिचै मने तो इवा को पामावर्बो ।

तो माजी ! निमाया-मूलचा ता इचोयै-इ कोयमी ।”

क्यूँ रे ! जइ थे पची-पची पावा पीमो भीर पची-पची मूलच
आया ।”

‘ऊनपडा है माजी ! मायै गलबही गवारा अर रीरी ई अबर गवाही
ह । निम ता खातीना कटै जायै ।’

खामीना कटै जायै ? मिई केरिया अर कुँह रैवा नी मिमिय
पादिबा जाकही माग मर ही । काज-सुँ बाँरे पारे-गुल बाग जवा ।”

बाही घर बाइ करीयै कया—माजी ! जमाइ-नी इचो विराज् नी ।

अरे हाँह ता ! जीं अर काबरा खालमा खालमा

‘दुख है माजी ! कोई थे-ई अेकखा भावर-ई देवा हा । हाकरी
बइ-बइ करतो इवा बगावा जिका सीवा मजूर-रै निमाइ में आया ।
मजूर माया भाव र बुकिबा-आव रे ।’

अर ने मिमिबा जायै मरम्बो ।”

जागे जल पीर दुखै है । माजी !

दुखै बर्ब-बो ! मिमिबा कावा र बन्धन गुमावर्जी ।

काम करती-करती बस बजी । मजदूरी बात-बा सस्तर-पाती सांभल
सक किया । जोकरी मूँडा मचकीकरी बोली—ऊह ! हने-ई ठुरल
धागन्ना ।

तो पक्षे कने ? ऊपर-धूँ बस बजस हूँही है ।

'तमा हुआ हुआ मिळसी काम करो ।

'रीस करो बाहे रकी बारै खेकछाई-रै-ईअ को जालां हो नी ।

अह बेगा ई जालां जर हैलगी पूरी मिष्ययो ?'

बस बजी-रो तो मरो-ई पक्षियो है । जवै-ई जोर बेगो रबी कर्ई ?

'पावला-पावला गया तो पक्षेमा काम बूँधी ।'

'करीषो ककल र बोझियो—नाक तो नी बाद काम खियो पज
धारा बारा कहरेबा कने कोयनी ।

माखी जोर-म् 'ऊह कै'र हुग-हुग जोष्टी रबी जर मजूर
बबा बनिवा ।

७-पेट-रो पाप

अकाल-में बाढ़-का चलो वहीं । जल पड़े तो इसी क कवा
 चला बाढ़-रेव में सक को । पाक कासी हाहाकार मचिपाही । सगली
 रें मूँ पर भय-निवासा हान्योही । आँखियाँ अकाल सामी कामीही
 कदम अगवाज बचैह जिवाजै गडवा रें माप रो बरमै कदम बचैह
 हर रामा लुई ।

अक परवार जड़े में मिथल, मुगावाँ भर टावर में मिचाँर सल
 अया हा मारग बें रवा हा । कपर-सूँ राट बळै बीचै पग । सगल
 दरिया-बकिबेर मुन्वा भरै । माँ नारीदिया बळै-में पादा समाव र
 पूर-वरको । मारग बैना-बाइमियाँ-ने बिगझिगाटिया करता बैठा हा—

बाबूजी ! जालो अकाल-का आवा । मुन्वा हा बाबूजी ! रवा करो ।" पल
 बा-री बल-री मुन्वा अकमुन्वा कर'र लव-सूँ मारर-माझ बाबूजी
 पंडितवा भाईजी गिरदलजी सगल अक अक कर सर'र रबी म् मिरक
 जाता । हा टावर बिकी रें हाक बर धामा लही माइती-रो दूदाहेयो
 हाव बाढ़-र बाबूजी ! जाला अकाल रो बाबूजी ! किरा करा" बैठा
 हा । बैदतोही माँ-सँ भावर अक जले रवा कर'र टावरों में हा
 पदमाँ-रा मुजिवा दिगवा । टावर राजो बी र पाय जाला पग इन्द-ई
 अक बहिवा ।

"माऊ ! कामकी बला में चिवा हुँ अन्ध मम् हुँ ।"

रे बेरो ! मर्द ने ।"

"ऊह ! अह हुँ घृणी की रह माऊ नी काई ।"

रामबा मा-री लहद रवा र रामबा-रा मुजिवा लोमल जालो । धूरा-
 अल म कागद पाद रवा र मुजिवा हुट्टवा । रामबा होली-राजा लुई-में

छर'र पग पड़ाइय छागो । हासको कुई छर'र मा-रै ससो मोछो-मोछो
मेक-मेक बुनको पूर मा'रु बुन-बुन'र बाग छागो ।

[२]

बाबूजी ! अकार्य-रौ भयो ।

'बाबू बाबू रस्ते गए ।

'पंडितजी ! भयो ।

'कैरै रै मोच वसती कोई ?'

तेहां ! अयो अकाले-रौ ।'

कनै-कनै निरासी रोह-रौ समहर बसवन्तो ?'

'अर्जुनी ! भयो ।'

'मज्झी कहा भई ?'

'मज्झी मिछै कोनको ?'

'छाछारा करो मेरी केव-सँ थोई रली है ।'

मोहर-बाझ बागवाना ! साग जीव मला है । कु ई निरपा करा बा ।

'हुदक भाग जायो ।'

कनै-सु मंगलवाड निकली'र किन्ती कला—साओ-साओ धातू-नै
चोह-सँ चिप्य बंदे है ।

सारा मला आला-आला मासिका पल जै गुला मिर्च चिप्य
बंदला बीच हुकला ।

भई ! म्हाजै चिप्य निराबी ।

बंद न्या हीव जायो काछ भाया ।'

भूक मरां हां भई ! थोड़ा निराप जो कुई तो आचार्य ना बाप ।

रक रक भावना बारणा ! क्यों भाषा बगार्य है ।

‘होमो साक्षा क्षियतिवा ज्येष्ठपाद ३ ।

अक नै देवो तो सर बीजा त्पार ।

‘अर माता-रै अडे तो गयो रज्ज्या है पार ।’

सगळों-रो निजर बंजार रसोद्वै बोझी पृथी र सता है र कया—

अरै माता बाबा ।’

बाबरा र सुगाया रै घांढो-बण्डे बाबै भूकै-रा डीक हुबन्तो पन
राम्मरै-रै बाप-रै बापरे रै बाबिया बाबी सम्बाळी बाप रही ही, मन्व-रै
मारिबै मापी बूमतो हो अर मरीर हरो-हरो जालो हो । पन भा बाप नै
कई-नै को बचापी नी । सगळों न अक जागा बैडार भाप बजार बाबी
हुबियो । राम्मकी अफी कर र बोझो—‘हुई बाक-सू काका ! मर रांड
कै र बिदे-नै सारै छेडी । मारग-मे नै काबारी-सू जलै जलै-नै छेयी—
हो बिला-रो भूको हु बोझा कावू-नै निरा हो ।

‘बाळ बाळ इन्तो नाप ।’

‘बाबूजी ! बिना दिरा हो ।

माग माग ।

महाराज ! अक पक्षी-रा बिना ।

बी देक कडी-नै सडा पाली जा ।

बिडकी र कककर सैतो-सतो बापका बजार पुरिया । मापी बूम
रही हो—बाबिया बाबी रस बातो ही । डीक सुकता बाधा हा । इन्त
बेहास होव रथा हा । अक हुकाबदार नै पुरियो—मिठाभी कर्ष घात ?
दुकममममम बिदे-नै गाव रो बापू भाव र कपिले-री डांड मर रै बरक
महा सेर-री भाव बतानो ।

‘हो बा मिठाभी ।

किन्तो r

अक सर ।

८-धरम-री घेटी

कमलमिठा बालर मंडली मस्त बाँर गुलबर्ता उड़ान ल बागी ।
 इत्तै-जी-में अक जना बोखियो कल्लो मंगल काम प्यो कु मो मगावो
 उस्ताद ! कई जना लागेई बोख डकिया—बाबली है म्हे तो काम हमै
 कोन बाता जी हा । सो पछै मंगली कवी कोई मुरत चुपलो है ! धा
 कैर हाट ऐसीसी हस रमिया-रो लोक खोर कलर मोलीचन्ग बीसियै-री
 मामो कैर बोमिय-बडिया-सुं बोखिया माख खाये पैसां पाल सिधै ।
 राह-रा । मज है खोम में बे दिन दाई लपी बीच मज उठाप जाने ना ।

‘बुद्धम’ कैर बीसिया जल बागा । इत्तै-जी में चम्पाकाक बीसिया-
 सिधका के सिधे समझयो क ? सिधो में जल ।” सी अतिथियो फादिया
 चीजियै-नै डकैक रवा हा । इत्तै-जी में जालन में बल-रा मित्रमिठा
 मुह कुवा—

‘मात्र-काक मज चीन पावगी

बाक कोई ता बँवना हो क अक जना बुझिया-रा बुरो में
 बाँवना हा अको मज खोल सिधो ।

“दावेका बुल जाये चुप है क माची ?”

उस्ताद अघार रल-नै त्रिवावर किशो बाले है ?

“कल-रा बिद है रे ।

‘ये रामक-नै जाला हा बेर-रै यह बागी बाध भावगी । बलि
 सिना अक म को र उचालन खाता म्हा मज-री मद्द साम् बेदो ।

अक ना बाहर बजार-सू चाखी ताजी चीज खायो जर
 ता मोबा रामचन्द्रियै-री हार-री बच्छा भौन क्यों कायो-यो ?
 वै री बुझान ता बच हो बाबूजी !

‘जाय पगौरा-जी ता पूरा बजतापूर डा ?’

वै इस पवित्रा जर मिठाजी कांछ्य जागा ।

चीज तो बोक कम्बर कायो ।

बाहरे बीमिया ।’

बेरो मन-मौजी है ।

‘पण करम-रा पायो है ।’

बाजकी है-तमास्ती-री पगारजी बिसकावां हरि दिन ताकी हो ।’

मनै ता बाबूजी ! काखी कड़ाकन्द ही दिया ।

देखिबो’क ? बेरो किसो क जोजो बाबू है ।

बाबूजी ! काज तो मज बाकै-बाकै जाय है पुता बारा दारि
 ता’र गाय होका सारी ।

बक्य है बाँह-रा किसी सुगर्ही बल उठाय जाया ।

कह चुली-रो बल-जी बूढ़े की मुहबा ।’

बल तो बायब साची-बी कयी है । दुकीं खातो माक उठायो
 जर बां वै बाबूजी वै बिगा-ई का मिछै नी ।

‘बाह रे उस्ताद बाबू ! जै ता बाय बायरे करम-रा कक है ।
 कोई बी-रा करम बरूक सको हो ।’

‘पण जेर भी

”

(बीच-में-बी) जर करमा-रा उस्ताद ! कय जेतमीजी ।’

देव मा सदा ।।

‘ये विरामय-मू सदा कव-मू हुपम्बा ।’

‘मिर्ज-ने-की काका-रो रीचा है पर्व सदा रे मिर्जा राकर करके-है’

‘ता सदाही । अता-ने की कुई गरीबा-रो मदद करना जायो-है ।’

‘आता-ने ता कोई संग करय काही अब हुकदा नाक देना ।

बहाय-र कुल राखी-में कबे ? अर माफी ता भा है कै-कै-है ।

कलै-की कोई समा-आयो तो कलै-की काही अम्बरमभाका । केरा द्रवगार

नाक राखियो है ।’

हा कैव गवा-आवा देवी-देवता आवा नैतरपाछ ।

‘मियां भा करा सदा ! मिमल-अमारी बाबा है ता कुई पर

उपगार करयो ओपीअ ।

‘रामूजी ! ये उम्माह मिर्जा बीसना उदाय कावा । मदा फिरकिया

कर दियो ! मरण हो-की समझी संगतबाह-ने मिर्जा मरम मूनी हुष है ?’

हवा रामूजी ! ये मासा-री बाप्ता काम करे है पुन चरम-रा ना

मिम है ।’

अले गहारै ता विद्वज्जी माको बल दादा दाद बैदगी ।

‘किमी ?’

‘करु सदा यमा हुबे अम सदा देना आप-र ममरपति बच

जावयो । अउधार में ता नाच जाव जाव । कदाप कुह दण बड़े ता

बाहो ह देवान-र पिन्हा पाडाव । बाकी ममाभाका आप-नी नाच

अ-र ओरो ।

‘मै ता भा जी करा हा उम्माह ? ये आपी कावयो ध ओ हरी

रा हपडका है । है ता नाच-साह मरवादी-ने माण पून-र गळे बाखिब

रावु है ।’

अम काम भी करनी रहता हुष भा ?

काम करलिया भाई रैं उद्दुआ-री बड़े कमी बाज-की ई-बाबा
मिम्बरी कोयाकन बगैरा भापां ता किबा नृत्यकन अर बाबा ग्हाता
भाइ ।

पण तिमिबारी सो भजावति ऊपर भी रैंबै ई ।”

बूसी समा-रो सभापति कुछ बृहन् बजै ई ।

राम्जी ! ई तो कबू हूँ ये-की हूँ मर बौछा माको मृतक
जावै भी कोचनी कहे कु भी ता कहे कु भी ।

“भापां-र तो भूच कमलकोर मिज्जा मै बां भावकां-में ताकतिर
उडावली ।

“डीक ई पण ता-की कुई बौछी-बचो सुचार ” (बीबने-ई
बाबा कयैर) मरहो-में परको भी भावका सुचार-सुचार-में । बा-में
बा भावकाकी कय किम अकाय भी ?”

“म्हारो सौमल भनि लागका रगका-उठं मिज्जाका बचमा । भापा
रैं तो बटे-भी कावनीर ताकतिर उडावली ।”

“कुई रंग को हूँ-ई भाव लो लोम पूरा काम करै कोनी । जतौ
जावै त्रिकै मै-ई मरलो पड़े ई ।”

“अद्-भी तो कौबू हूँ पिछ १ कने गुर मिम्बर हूँ कौबो अर भिवां
अर सदा-में बूझवा बचाव ।

पण उरठाइ ! मय भावै कोचनी ।

“क्यां भावै कोचनी ? कोचनी तो भा सुचारकाई है ।

“काम रू भापां-रैं तो सागी बूझैकाका अङ्गना मरु करो त्रिको
महाने मरु तो राम्जी मै सोती मिळी ।

“अर हूँ उरठाइ राम्जी ! जनि भी कयलो पड़ेका कोई समा
बमा बाको जावै तो कै दिवा—अवर तमिषत डीक को रैंबै भी
हागावर बिसराम बैकुण-रो कयो ई ।”

उस्ताद ! कुछ बाख़्खा

(बीच में-) अबै जिन्ना रंग न भी मत जमाया । आरक
राहा इतिबद्द मत बणा ।

“अर बाबा ! धिया-री जागा तु कुछ बाख़्ख-सूं ।

अबै काळ गाठ-रो ऊ-री बसी है ?”

‘अब है धीगलम रामू-पी-सू-भी हाज हा ।

‘नहीं उस्ताद ! मोठ-म काळतू रुमिवा

बाबा जी भै धिया-भी करता रवी । हा काळ धिया-सू भी
मरुवाज करा ।

“माछ कोहू ?

तब जावज ३) । है काळ रमाहू-भै बुझाव र त कर अर्बूबा ।

रमाहूया पछे भी अम्बर जाबोज । चार्ज रुमिवा पांच-भी खरी ।

पण हूयै पाछनू नवरज करण-सू ना तब काळ र मीक पर गरीबां
रो सहानता करणी घणी बाझी ।

अर है भाया गझाभी-वा नरको ! हूय गरीबां रो मदद कर है ?
मत ऊपरको दुष-दुषी बजावै है । नहीं बण सेह माठीकाछको अर
चदूखाछको दाभा जणा कोई दम जागर-नै चान का बन्धन मकनी ?
जाग हस्तारै री थोड़ी चारया निज-री मंगाव भी है अर बिना
चोर है ।”

“म बी है ! जगो भै ता जिन्ना-भीज करणा जाबीज क कोहू
इप्टेसन बप्टेसन भाष जाव ता ११) २१) २३) घने सू घना दब देना ।”

“ब-ई बलो पण ?”

‘नहीं आगर रुमिवा-में दबा हा ता बाही माना री अम्बर है ।
६६ गाव म

सेढा ! कपे तो ना चिंङ्कती कबै-म् आला के जिया हीसे हे ।
 'जे पका पीर है ।

"नहीं बरखा ! पीर नहीं कीर (कंजूस)" सगळी इत पमिरा
 रण-रण-रण १२ रा हलकाता भुज'र सगळा कालिन्दा काप कर ।
 बड़ी-रै सामो ओपी अ'र पीरे पीरे किरणक जामा ।

[२]

प्रामोद्योय-री बूझी बाज रही ही—'जामि बुझिया-में है हम तो
 उड़ाने के छिजे खेडने-हुदने और बल मवाये के छिज, रोमपी छां
 रोनी ही रहैगी हरबम हमने तो पन्था कबम इसने-हुंसाने के छिजे
 इसी-री किछोळ-रा पुंकरा छुट रहा हा । बाहु-में बारमे पाठकां बाज
 हल १२-१ जका-री डोळी काज भूमी । दवर केज कागा—

भूला हां मुंह म्हा भी दरायो ।"

'बाज बाज ।"

बाजक भूला है ।"

'के चिंङ्क इसता बाप ।"

भुज है ते मर्यादा ।"

मम् बल है ।"

काज काज माझ में । काई भीज डोक के जामि ।

कई नू रण-में मग करण भाव बलिवा ।

'जमे जामा हा

डोलगीओ ' के कर्त हावनिर्घे ते दुम् देवो हा ।"

(मुर्गी जलमुर्गी कर जाये बाप) कहा है कंध-रा राज
 जवामी है बापे पुर्ब कागो ।

बालक भूला ह ।”

ना रहे कोई कसो ? बीजा जमी आर मोला काह भद-ना-दे
ग्या है क है ?”

सिखा बहना ह ना जालो कामा । हाह दिवाज बिना रह ना
ता है बब रता । कह बालक लीहें बिबा कर हा ।”

हो, रहे ना कोमिका हो काबनी र दिवा ज सैदा दुराव हा ।”
तह दागी गुम ह हा जका कर बाग बाबा घर बा जया—जया
। । भाहें ? बब माया जयाह हा

“ बा बालक है हाग बहना कर जया ।”

नाह म बालक भू भ बला हा, जका धो-न दया कामाव हो ?
है क बा हा बालक ह ना लीव हा दया ? क है
हो ? बा भद बहो हा बब धन ना लीव हो हल लया भद क
र बाहें ।”

“ बाह है भाग बर, जालज भवत धिन घर दिवा

“ बिबा जय बस । लीव है ब हा बाह हा । बबाल देवा

ब ना लीव हो ह भ हा हा । लीव हवा भ बा दिम-म माकका

मा आँखियाँ भरती-भरती बसक-नै गोड़ी से किया जर मगछी रर
बासियो । बसक-री मूली-र हरिबाड़ी आँखियाँ रामू रै दिरै में सुन
री जर दो कणमणो हुए गयो ।

X

X

X

X

‘साध ! मूख मरू हूँ ।’

‘दोच दूबियाँ काडी-रूँ हो की बेरा ।’

रूँ-रूँ ! मूख मरू हूँ ।’

‘बापदा को किसी मन्हा मन्कन हो लैमछी री मा !

पस बीमा आँखियाँ-आँखियाँ-की मोकछा बकछा दा । पस दूबि
रै छरराँ ठोड़ी सुन-रूँ को पैस बीमी । आब आँखाँ-री भा दूदा दुदवी
ममछी-री मा ! किसी आँखियाँ देनछी दानर मूखाँ मरै ।

‘रायाँ काँई जर बरै ! राम भय गयो ।

[३]

कुरी सपटी मारी । भऊ कुरी बरैर थील मारी छरीर होच-होच
हुन ग्या । आँखियाँ-रूँ माँसू पदन छागा । लही टन-टन कर ० बसक
रामछी-री आँख सुकी । लपन-री बरना मिमैसा-री सुधकी रोड-री
दाभी छेक पस आँखियाँ-रै जागै कुरावो-रूँ धूमवी । मायो मन्क-मन्क
काय छागा । आँखियाँ बकन छापी । मरीर मारी हुन ग्या । दूदा बा
माचन छागा—मरीर बाकक मन्हा मूखा रोडी-रै दुकदे-तै करै जर मरै
दुमै बिगत १ माक अछाया । दिरै री किसी निरावर भर लमन-रा
किया दुकदन है । मापही दागी ’दिव-री हरिबाड़ी आँख भरी
आँखियाँ

माचन-माचन मायी जर न बरीदा मारन छागा भर आँखियाँ
मू गंभी मोर गी ।

रामूजी भीड़-में अलग-रै हाथ-सू धाल'र कपड़ा बाँट रहा हा। पल
चिबा-री आँखियाँ भीड़-में कभी नै धुँद रही हो। घण्टाघरी भीड़ रै
निचर अलग रै बल् अकेलाअक चियै-री निजर कभी अऊर पड़ी। अपट'र
आगै आगो अर अके पाँच अरसो-री खोरो-मै गादी में उठाप'र
चुड़िचो—

‘बेटी ! मिठाई खाओ ?’

‘नहीं खोली खाऊँ ।’

‘नहीं मिठाई खा बेटी ?’

‘भूँ भूँ ! खाली ।’

‘नहीं मिठाई खाओ ?’

‘नहीं कुली खाऊँ अ खाऊँ चिबै दिन दूरी खोच खी ही कमी ?’
झारी अर ॥ देनख आगो कुली कटै थी खाऊँ-ई तो नहीं खाऊँ है ।

(साथै हाथ खेर'र) ‘खाऊँ खाओ बेटी !’

खाऊँ

झारी अर निज रै अर आँख-में आप'र अर में छे अलग आगो ।
मिठो भी में खारे-अ काई उठरा उठावता बाँटिचो—

अरम-री बेटी अलग अलग खिबा, अरम-री । ? यैस-रै धाँसुआँ भूँ
भरी आँखियाँ-स झारी-रै सामा आप'र रामूजी बीजिबा—दाँ अरम री
अरी अरम-सू अर-भी गाँववाक पाप-रा पराखोन होखैका ।

६—सिखमी पूजन

{ १ }

'मा हूँ-ई पूजा करवा देतू ।'

'परासा देदी !

'क्यों ! अब मा बाकसी-ई देतलो कई ? हु-ई देतू ।

'तू-ई पैर देदा !

मा ! म्हाभि-ई बराका दिरा ।

'मा देदा ! कक जाव ?' छे देखिबो को हो नी जाय-री हो
काके-री देदी बकमी हो ।

ऊ ऊ नहीं । अब क्यामछे-री मा बकका क्यों दिरावा ।

गैका ! छेई-री देकादेली नहीं करणी ।'

जे मा ! बकका नहीं तो पै सरप-बाकी निकदिबा-ई दिराव दे ।'

दा देदी ! हूँ जिम घर-में सरप-वा सुगम हुय करे ।'

हीक घर-में कदिबो वय बहान्न मन-सू । बाहर बाहर-में देर-र पकका
माधन कागा । वय मा बाबा कमी-ई जांगली चरी बडे-नै देकर
सै-रा-सै पुन हुय मा घर हाकी-होई अउ-बोडे-नै नैन-सू देबो—
मा देखै ई पका मा देख ई मका ।

{ २ }

सिखमी घर-में होवा समोवा । पूजन साक बाएक कूँ-कादिवा ।
भीर को सायन कमे हो-ई कई ? हरी-में हो हीक बाबो । सिखमी
कबो—पूजक-री सामगरी तबत दे ।

दे-रो पूजन ।

खिलमीचीनो ।

‘बारै-स बत्ती खिलमी और कुल कुली ? पण तं मापण ।

‘मा ! मा ! कुनै दिन जाहाज मल होवा । मैला ! जहाज-रै घर-में बाव-रो कमी है । मिय घर बाढा उल भर बाव-रा बुझा ।

‘तू किसी-हू बल-में हाथ । तिरहे-में थोक डूक उठे है । काई हाथिया बिज्या मंडा । किसे पूर पैसिया बैठा है ।

‘ता बीमै पांच-पचास बारै यात्रा-में मगल बावू कमें जब अंगण हा । प-मी ता कबो हो के वो ग्हातो पका भावका है ।

‘ग्हातो ता है पण हू लाजव ब-रा क्येवो । तू मोकी है । मगल-रै भांग्या कायमी ? ते-सू ग्हाती हाजल कुली है । जान दे लैर ।

गोबळूक वेला कुली । होक खिलमीची-रा पूजन करल बैठा । कयो—मा मा ! तू मा हो-र पकरात किषा करण खागरी ? कटै-रै समगरी-न । हाठ जर कटै-रै मायो निरल ? मा ! आज किताक भारी साणी पूजा करसी ? कोई कली-नै हाथ र पूजा-रो हाठ जचासी तो कोई बूम-र काठै बजार-रो कमाजी-रै पाईजा-री सामगरी खापी ! कोई कांड-होव-रा व्याज उपजावणमाजी पूजी-नै क्षेमो बाखसी ! तो कोजी घरज-मरजावणो बारै फुडा-रो डार बछमी । पण हू ! हू ! कोरी सचाजी-रे बारै । कैला-कीर्वा वो पीप पदयो । जव तै मधै यवाप सचाजी-रै और की दिथो ही कायमी तो हू-ई बारै काईक बडामू । तब जर मन-रा कल जाक्या-रै पापी मू जोब र धारै बरग-में बडामू । मा ! कथा तू ग्हाती का थेट अंगीकत नहीं करैवा ?

[३]

बीजे दिन होक दुपारै दिन-बहिजै तांजी बिजलान्ध-में पडियो रयो । खिलमी समझाव-गुणव-र सितल-औजन करावो । पण बा

पाखा भी बाध र बिहान्जो-में पक रहा । छिन्नी पड़िया—ये कैसी तो
हूँ बो-बार जागो पगे पड़न साक जाय भाजू ? देर तो कायनी ? बड़ी
जासू तो बड़ा-बूड़ा और तरे मानसी । तीक करो-तु ताबे
कचर बड़ी म्य माथी अब भी मोछ जियै । म्हासो बिना म्हास दुर
रहो है । हूँ मूँहो जिना पड़िया हूँ । छिन्नी दुरगी । होक बोहो देर
कु भी मोचरो रहो । मोच हाथय जागो भर बीद कपर कर छिन्नी ।
बै देखियो—घर-में दूध बालणो होय रहा है । रपिया-री बिरना कुय
रही है । बा भर छिन्नी बल-नै मेको करन म काग रहा है । मोयन-
में रपिया-रो मेक घौलो-बीका जिना कुय ग्यो है । बै हाम्द कय
रपिया बजावै है कर हुंमै है । छिन्नी बोली—अबै आपो-री ककठ
सुचरी ! ओ बोहिया—अबै आपो-नै कुय होय समझ सके है ? अबै
जिनी-सू कमली को रैवा ओ । मगन करै-करै आपो-नै बोहो होय
ममझन लागै है । बैनै देकाव देसा के भै पजीसे-सू होय हा मय-सू
नहीं । हत्ता निच पहुँच बिना कुय वापसी धी । छिन्नी बाध बड़ी
म्यवा । होक-नै और-ना ताबू बह रयो धी । छिन्नी मगन-म
कुचक्या । ओ बैद-नै केर दौड़यो म्यवा । बीर कुलार र और-सू
बैक-र बक रहा हा—अबै आपो जिनी-सू कमली का रैवा धी अबै
आपो जिनी-सू कमली को रैवा धी ।

मगन दिन छेई कुलार बराबर बलिया रयी । छिन्नी बाध
बराबरगी । मगन दिन-म राज बीक कर्म बैदा रैयो । राज-म ओ-भी
बरे जला बरा । आ मामग्य राज भर आ भकली छिन्नी । कलै-भी
बापही पग बावनी ता कलै-भी मरीर जिनगी के ताबू जिना क है ।
कलै-भी मुँहा मामा ज । र गुच्छ-गुच्छ भासू जावनी । कलै कोभी
भीज । पीरज बंका-जिना-भी का हावी । हाथ बलबल-रै काँटा जागे
माग करै म-काभी निरधनिपा हंगर-सू गुबग्या मार न बह बोभी ।

मानवें सिन हाकिम बार-सू हुणो पाबिवा—बारै जावो । निजमा
 बारै गई । हाकिमे केवो—बारु ! बाबूजो-मे मेर बांरा दमकन होमी ।
 हीरु खिलमो-रो हाथ झाल'र बार जावो । कांयदे ९ डक फर होर
 हाकिमे मै पछियो—काई ई ? कोई रजिस्तररी कोरस ई ? नहीं
 बाबूजी ! यशमी बराबो अर बार गियो । कांयरां भाइ ? डरबी-री
 कोररी भगी ई । खिलमो-बी लुटा ह । हीरु माथा झाल'र मोचन
 कागो । बै-मे पाद जावो के बै बकर माथा बेछिया-रै पचाव-सू
 इपिया आबार कर रिगट छिया हो । वो बार गिज्ज खागा बै-रा
 हाथ ब्रजन कागा । कांयरां भाडा निरियाका जायो । माथा धूमियो अ'र
 वो बम-सू चिन गिर पबियो । हाकिमा यचराव'र कुकियो-आ ! बाबू
 जी-रै काई हुचम्मा-मे देवो देवो काई हुचम्मा र ! मगल मन्दा-री दैस
 भावा अ'र भा रचना देख र पाछां पगां बैदुजी बै बुझावज नाडा ।
 खिलमी सैगमग हुयोहो हुग-हुग जोप रही-ही अर चियै-री अंतवां
 नांव-सू सर सर र मोठी हा दन्ता अकल पसि-रै बर्ग में पड रया हा ।

पलमे-रो माल

[१]

मरली दार। इमी तुला ।। औष भर चौक-में बारा-बरा लगाने
मेन बदलापुका-रा। कमलिना दा। इवां गम माझी ही वन कसै
कसै ही गा तुमने ।। कचरी गु बार बाध जग। मने कारी-ने भा
मू ही गख। लो-मारापक-री देह। वन माईता-ही जमी माझी ही
जिई कर मर मर लख बाधना दा। गुलब-बाँकद पर दा दारो लाने
मक मर मीम मागल माक दाव-गाव स्वत ही जगो। कसै-री मा
दिनाक दिन गुलाब मजगो। भावर हरे-ने दारो दाव घाम-ई बिचो।
मावर-मीमने-रा काम बाँधो। दारो दाव भोजाओ-न गुलाब र दोष सी
गजन बुद्धे ऊपर लपिवा कदाव र काम नीदान चलिचो। कपिवा बु ई
मावने-में भर बु ई धर-मरक-में सेने छला।

भा बाव लो को ही मो के दारो-ने जमी-बार कोई को हो को।
रामको-रो दोष दा। मक केरी जिई-रा मोर गोरम लीक-बार बोना
अर मक भीजे केरे-री निववा बहू। वन जिमी-पू-बीक-बारम-ई को
मिळी ही को।

बोही-बोही करार पाँच सी गज जमी बाधने मेळोजती अर भर
वसने-ने पीती लामो अर भावर मक दिन केरे दिग्मत करार दे-ने
दिवो-कपो बाधे माझी जमी गुलाबो ही। कु ई माध र ो काम
दिवा करा ।

हा । हे किली-ई गदमे में मकल कीव लो । भावो वमो-ई
ममलपान-री पूछो ।

‘हूँ किया था-भी मना करूँ हूँ । हूँ तो कैयूँ हूँ ये भी कबाड़ा करा
ईश क्यों हो ? राम-राम करा र बाछ-रोटी घर-में छुई जिन्सी जबादा ।

‘काई बूढ़ उठे हे बार । मने पूछो-ई हो’क मऊ हूँ क जोरू हूँ ?’

‘बा-ने छिपी-ई बार कबा कै म्बारा बूबो-फू का मत करा । वरा
थ सुजार्ई ही का करानी ।

‘जारे कबो-भू कोरे बरे ? वन बूब पूछै ई ? घर-म हो सुगावो
रो राज ई ।

‘ओ सुमावा-भू कोइ मनकाव ई, जारे म्बारा जोषा ।

तू कय-कय घर म रेबै ई । ना रे म्बार्ई । जारे न कते छिरजा
म बाधेरे । आपो-रा निजाव पारी बहू जागै को हुबै भी ।

हेलो काकाजी ! माम ज्ञाथो । ज्ञाता-में ईवच मत करवा ।

काप-नी हुंसव । ‘कबा बह-बह वम्बा घर-घर ओ-ई मेवो ।

तो कइ तरे मामो-ई । काकाजी ! ओ हूँ पारै पगो-रे हाथ
बगळ ई ।

‘जसा-ने तो म्बारा पांच हरिवा-रा महीमा हे दिवा कर ।’

हमी म्बमी कबी लीरन कोव नी ये जालो-ई हो । जागै जाल’र
मने मिछै ता म्बार्वा पहरै कपड़ो ही ई । बागी क्या पोयै क्या
निचायै ?

‘तो बसै मने बडे-ने भाव र कबा मतावो हो ? अए पारै हेवक-
बदक-ने काही-ई कोव नी तो हूँ म्बारे जवै जिवा करणू ।

काका ! पहरै हरिवा में भज्जा ता जारा-मारो निजाव कर जिया ।
हेरो माम ज्ञाथो ।

ना रे म्बार्ई ! जाला कोव-रे नीचे हादी का ग्याम हो । ये जारे
भर उठे म्ब !

और धीरी मरजी और का बाबू ली । पल में एक आवा । बा
करे गोपाल होरे मन-सु उठेर पीर हूथो ।'

[२]

गोपाल बेकसी पीठो बड़े-भांरी है । दूधवाळै-ना मांझर राम बहना
सुचारना है । बैसी आसी । पल भरे हा । बागवाळै-ने कई कसा ?
म्याजवाळै-ने तो साफ-साफ कै हैसा कै एकम बापी-गपी कर लेवी ।
बागवा-ना बोक-अक कर र सारा गया हाव ! हाकुरबो-नी
मरजी ।

कई बकली-ओकव-ना पईसा रामसा पछारी-ना है । कपियो बड़ा
है सा । पल कपियो-ना तो क क-ई सुक ग्या ।

गोमथी आरे-में बहवी-बी पल बहवा सुकव आतागी । आलियो
मांघ कोई बीजो मिमक हुबैका । बिबाई-री सेरी मांघ-सु ओरे वा
भांने कोई-न-काई । गोपाल बोक बारोहे तकिने-दे सावरै बेकाघर
भीत सामो बोक रथो है । वा बोखी—कि-सु बसा कर रवा हो ?

तही तो क ?

दूधवाळ हा म्याजवाळै-ना कई कै तो रवा हा ?

नहीं जी-री भरमवा है ।

'भांने किसी बल कथो कै के सोक-दिकर मठ चिवा करो । पल मे
किसा माग आथो । मन-रु-मन बाता करता-करता गैका हो आगुला ।

'तही बांनने करा हा ?'

भात्र मूठा कतरिबोहा किवा है ? बांनवा-रु रोबाड़ी बाई
हीने है ।

अबुत्रे द-काळो पुरीत्र है । मक-में कई-रा-कई पीर

काल बेनोई-रै गयी-ही । हाथा जाड़ी करण-गू माव ग्या भर
क दिपो के सामान हू लोक हेम् । कपिया होके-मुम्हे ह्य दिमा ।

'तू योकी है पत्ते मात्रवा निकसैछा । हू जानू हू रामना-मे
किताक पानी है ।

[३]

बीक-मे नइही देही प्यार-रो रीति-रिवाज पर चर्चा कर रही-ही ।

'मेरा-बाल है माँच तो मगळ-हूँ सीदायै है ।

ता आ गाटा गुहकसी कीकर ?

'आचार मिळसी जिसै ता हू-हूँ गुहकयो रैनी ।

'पण ओपार हैसा बुल ?

'हाद-बोव रा व्याज कमावजिया कमाहूँ है अक ।

'पाछा बमूकी ?

'घर-दापरा-यूँ ।'

'जब घर माँहवा काँई गुमावजो हुआ ।

आका जग-हूँ कमाव हो काँई करारुँ नी ।

काँई करारुँ ? आपनै समाज न जनिवा-जवमजिया सगळा-न अकल
रा अजीर्ण हुयोका है ।

काँई करो र करवाहो ! साँपरतैक माँचवाँ मीच र अचारो किन्ना तो
गन हैरा रैनी ।

'ये ता एवार् हा'क ?

धी धी ! धी धी सगला जगजगत्ता कर दाकनी दुर्गा-न-ईश बैच
ही । हसी झ हूती तो हू परैसा माथै कबो करती ? हसी कैः सोमयो
दाबरा सामी भाक्या कसी । गोपाल बाबैसोक सैव करी हरी-ई-मे वा
सगळ ही जग ।

झिजमी दूबदाळी दूब देव'र रुक्मिणी—सिज्या-नी दूब केवैला
काई ?

केसां काई ! पालमर दूब दे जावा कर-गोमती कवी । गोपाल
गामती जसो जेव र कोळिया—पण ?

पण काई ! जे-नी कै विवा ना क ये वा जे-नी मरीर-नी सिता राखी
धीजी वाट-तो फिर कोड हो ।

झिजमी-रा वाव काळ-ई दूब-तो केवो करण-रा बैचो हो ।

'तो कर दैस' ।

'कटे-सु ? जारै जग जिमी जाल है ?

'बाबै काई ? हू म्हादै कजळी जग रुक्मिणी कवाव जामू ।'

'बस कजळा मर कोरिणी जे-ई सुवान-रा होव जाला वाळी
जकिना है । रामजी-नी मरजी ।

काई दूबदाळी-नी दे देसां कर कर-नी विघातक-मे लाग जालो ।

'जे काळ आर्जुनी बाळा कबो पैळा हुवा हा ?

'सावा बापक-बै ।

करा बापिबा

माव सुदी-रा

जबै तो स्वाच जाला-ई । वल जाला काई करसा ?

'सगळ करती जिवा-ई जाला करसा ।

त-ई ?

काल बेगारें-जी-रै गयी-ही । हाथा ज़ाही करण-गू मान गवा भर
५ रिबो के सामान हूँ छाड़ देनूँ । खिपा हाथ मुझै ऐब रिवा ।

तू म्येही है पछे मात्रवा निकल जा । हूँ जागू हूँ राममान-मै
दिनाक पायो हूँ ।

[१]

चौक में रुकती रही खाली-रो रीति रिवाज पर खर्चा कर रही-ही ।

‘अहा-बाक हूँ मोच ठा मगल-हूँ बीदावै हूँ ।

ता आ गाना गुड़कली कीकर ?

‘आपार निकसी जिरी ठा हवा-हूँ गुड़कली रानी ।

पस आपार हूँसा कुल ?

हाद-दोष रा व्याज कमालिवा कमाई हूँ बक ।

बादा बमूसा ?

‘घर-दावरी-नूँ ।’

‘अगै घर मीहण। काई गुमानयो हुआ ।

माली बली-हूँ बकारा हा काई करा-हूँ जी ।

काई करो ? आपनै समाज म भलिपा-बलभलिवा सगळी-म अहल
रा अजीर्ण हुआ हूँ ।

कई करा र उल्लावा ! लखरौक ओकवा मीच हूँ अपारा किबां ठा
मन बेहा रैवा ।

ये ठा लाल हाक ?

हूँ-मै बीजो-हूँ काई हूँ ?

‘ब अमनजी ।

‘मै पछे किता पां मू ज्वावा रैता ।

‘आ नहीं हुये के पछे तिरि बन्धाव देवा ?’

भूल । अठे रंग मञ्जीरिवा रैवै है ।

ठा पैछा ‘भारक उठाला ।

‘हा है ठा डीऊ । आ-ई काई लूट है जखो सगीर बर-भू मल-
सल केरा नारेख छालवा ।

‘जकी-ई और बाबा ! पल बटै ठा गूगो काके ह ।

‘अरे मल्ला मायसा ! सोच-सोच’र आ-ईअ काई साची ?

अरे ! ‘वरी आधी करो वरी ।’

वही उरसादा ! ‘वरी बाबो तो रगरो हुन जाईका । पार का
पडका भी ।

‘तो कबै पार ‘जागा’ उठाल’र जेक-वै राख रो ।

रिठा-पूरधी बाळ है । बाळक लो-

किन्ना कलालो करो हो ? अल्ले मखीरो-रा करवा को दाई उठवा
अरे हा भी पार का डी इत्ती जखो मांगीबाबा हो । कैवत-मै-ई कैवे है—
बलस ऐक’र गही निममै अन्ध बागिनी मीनार ।

‘गरालो-बडयो जेक-ईअ डीक है ।

जाळक इना मल करो, वा तो राखो-ही ।

‘वे तो मुकवै-रा कस अमेध’र पैवै होका करवा जाला हो । अरे !
हू कैवू है ‘वरी’ आजा गही पुरसा जिरी समाज रसलक-मै पूजल भू
का पचैका भी ?’

बल तो लोचो कबो हो । पल टकावला किन्ना मलमपी ?

बार पड जाली के गही बला आ सोचा ।

‘पार बाळक-री नीमल हुमी जमे ठा पड-इ जाली । हुकम्मा
अडामे म ला काम को बाळका भी ।

‘तो घांरी समझ में बरी कित्-री हुणो जोईने ?’

‘घाई कोई व २) री ।’

‘बपी है ।

कपड़ा-कटा समेत ।’

‘अब ता कई बपी कोव नी ।’

‘बपी कोपनी, यारै कैबा-मू हूअ ? गारबा हो जावेका । बरी व
) ३) रै सोव रानो ।

‘पस उस्ताह ? कोक मावपी कीकर ?’

‘समझा-सा ।’

समझासां काई ? पैका या हीत जत्ता रै घरा मू बज्जानी पवैसा ।

ता रे उस्ताह ? काग सान को बरैबी । पवै ‘इकक-मुकक-री
सावब बैखी बाखी बात बुच जावै ।

बाजनी ह । पाँच-पचास जावसिवां-री गुह बुच अब काम जाव ।

‘अब पार बजनी थावपी है । उडीकनै उडीकनै कसकां रा बाका
ता बुच गवा ।’

‘साथी बात है । उडीकियां ता काम का जावैबी ।

अबै थापां-री ता लेककरी-री दिम्मत कावनी ।’

‘बस ! भीगबेल-म हूअ कूक निककनी ?’

ता ये हू अजका नव-री तेरह कर जिवा हू बहा बैम् ।’

‘अके-म काई करक पवै है । मावे पर पावड़ी घर मू डे कर मू दो
रत्ता हा ! मूक-र का बाटी नी । अठे बीजा-रा घर ऊवै पावपी-मू का
बाटिया है नी ।’

रंग है ! रंग है !

‘देखो कलक ओक आगाँ मेका हो’र सारी बार्ता-री बिसा-मही कर
लेप्पा । अकई-रै घर में ब्याँव हुये बाने से-र-से समझावन बाबता ।’
‘एक ऐक आवा बरैका ।’

‘हो तो बाको बसू जिहर करो हा । कलक हकमतबी-री
बरोबी में बाँच बनी सिम्मा-ने से मेका हो जाता ।’

‘डीक है । डीक है ।!’

[४]

ये तो कभीने चिसमिमा कर बडीवे चौकई जाँचता दो-तीन पंच-ने
छोगाँ पूछिया—‘सुनी क बडी ? सुबभक लोग मर्यवा-री बुराबी
परमात्माका छोड़े है ?’

‘हुन ।’

‘आपा-दे-ई मौनका ।’

‘सुनयो करो परमपरा-री डोक बरै-ई मिरी है ? हा दिन बाँदरवाँ
बचा’र दे जाती । पछे लागी बाँठा कर लागी हुवाडा ।’

‘रोस झल जिमा, बाव तो वे डीक-ई केवू है ।’

‘कई केवू है बरो-रा गुरुका ? मर्यव धूरक हा कई ? हवा
हकूमिमा-से-ईज बाकल बनी ।’

सदास-अचान हाते देकर मोकका कमा येका हुन रहा कर अतरै
अपो जिती-ई कुकडी केकल कागा । पंच सगळी-ने आप-दे रग-में
रंगन-री बेसदा करता रहा । बार्ता केर सक हुनी—

‘बाकबी है आकर ये दला हा । का बनी देखी है ।’

‘भकाई कई कबो, कुरोची तो बनी जानगी ।’

‘कई है कुरोची ? मिता-पूहबी रीत पर बाकली कई कुरोची है ?’

‘पल के बोको-ईक कोयली का नहीं बजे माझवा है ईश-रो !
 बात का पक्षपात दो बी ? केदा घरम-री शीघ-ईक तो बाने-ई कोरसे
 रज केदा सुचारक—धींगलिया पंच ।”

‘आपी कौरी हो बाबाजी ! के दो-चार मौझी हाथीबल्य हो
 मिली ई ये दमिया बैठा है नहीं अबे के ली गाय ले ।’

‘आपी तो मझौठा-री बरबादका कहे-ई को झोडा नी ।

‘कोइसी जका गरज में जाती केदा ! मझौ तो जो ईक केयो है
 ले सलाखन जमे हुबनो नहीं आबीले । आपी-ई ककलुग-में बरत-रा
 ठीक चरज तो दूद ग्या है बक बाक-ई बाली रजो है ।

‘तोहा सलाखन जमे-री जक ।’

(सलाख कोर-ई) सलाखन जमे-रा जक ।”

[५]

‘आ कर्तु करो ही ? के-ईक इदमावली-री कोबीबाजी लिखा-बही
 न तोइ-र जंघा बाकल्य बाल ग्या ।”

“कर्तु करो बाकली है । बर-में केदे है—बार बाकलं नहीं देयो
 तो कूमे-में बक-र सर बाकलं ।

‘कीर पल के लो बका रवा मयकजी ।

‘कर्तु केदा कर्तु । बाबाजी कहे है—लिखा-पुरबी रीत कोदे लो
 है अमक गाल-र सर बाकलंका ।”

‘ये मुलका ।”

“मझरी-ई मा कहे है—रू लो रू उहालबी बाकलं है रज मझरी
 मौबरी को उहालक रू बी । ये नही माके लो बर झोइ-र मोमर बाकलं ।’

“अबे आता बली करो बली ।”

काम कर'र के दिवो-जबे म्हारै कराय को है नी । गौमती जागीरी
सू केवो-बोका लो ओर उहर बाधो ।

पला-ई उहर ग्या ।

'पल हविषो-रो काम लो हविषा-सू-ईउ नवधाक । अण्ठा
किना कोई बरे ।

'को कृष महीना पोत ग्या अर धारै हाक अताबक-ई ली
'काम सरदा बुक बीसरदा बेरी बुच ग्या बैच ।'

'तो न्हे किना बाँरा कसिका रत्ता हाँ अर गुक चुका हाँ ? कसि
रूच कोकर ऐसी नव'

पल-नव जबे कछे नही-मात्रा कसा कीचिधे को बपुडे है
बजाल । पछे हूँ उचतिचोको बाधो करकावो-ई होऊ का ।

(हिडको-रे हाव जगाव'र) 'कई वरे-ई मात्रा कालो रामसा
हैको पचामो मल गुमावो ना ? के कोई कोक भी हो नी ?

'पल-सीका लेरी बुझाऊ क मेरी ?

'तो बे-ई बलाभी कोई

(बीच-में-ई बाव कल'र) समझ ग्या ! का ता सौरवक होकर
है-नी । मात्र मजदूरी-री लौक बकल-ई को रपी नी ।

लोबल-ई अक ता लोकरा नही बीको डेव माँको । घर-में ऊ बा
किछा करे । बेवाचल म्बरा बचवा-सू लावै । ग्याव ऊपर कई घर-न
मरम्मत करानी हो बेरे दामा-बै-ई कारीगर मजदर अर बूने-बाकीबाव
रोटा फिरै ।

जेक दिन लोबल बरणी-बरणी घर-में बसिबो । काले हैकै हो लोग
चम मजदर घरको दिवै बैठा ई । हरी-ई-में ईटाचल-रो आदमी बाव
कको हकै-रो मात्राको कर ग्या । घर-सू बाकिवै हैको पाव'र बे।

मिन्नस्त्री जिह्वाजी दिवा । गोपलक बूझते हाथों काकिपा-रामसा-रो
 छोटस । हाथा ओधी कर र तगाधगोरी-भै वा यकिपा । जी कराम
 हुब न्नी । जेय हो हल्लत न्नी कराम । काई बेइ होसी नाठिया ।
 नाक देख र बाज-में सळ बाव'र बेइ जेयो—सावनीत रवा रात बिजळयो
 होरी है ।

‘गोपलक बहराय'र मावनी री मा-नै डेयो—अबै कोई हुसी ?’

ठाकुरजी करसी जकी ।

मनै बाक कौपी अंगारो हूँ-अबमा होसै है । तू काई कर रही है ?’

‘ठाकुरजी-रै बास्ता पाहोस्वा-नू अमो मांय र कापी हूँ अर रोठ्या
 कर रही हूँ । कमी-ठकी रोटी बे-ई काप्यही जी ?’

‘काप्यही ! हूँ करणू-ई कोई कमै तो ताँवै-रौ पईसा-ई कावमी ।
 जेय-नो बल्लत हूँ कौकर होसी ? हा देख ना अल्लकल-रा सोपो हूँ
 जीपीजै जा । पा-गुळ तो घर म बीज-नै होबैका ?’

मोवनी-री मां ऊपर में जांफ्या पू ज्ञान जागी । गोपलक बीकिपो
 तू बावची काई करै । साकवात जिलमी ही । पय म्भारै करै जाप र
 काई पुन को देखिपो नी । जिलमी बीरज बंवावनी बोको—हिम्मत
 मय हारो । गोपलक बोचो-रै जिगमे-नू जांफ्या पुंखय जामो अर
 जाकिपो—हिम्मत ! अर किसे जर-री हिम्मत राजू ?

मोवनी-री मा-नै बाक बात डकली ! पय समी-ई जे-रो मू को बीको
 हुब न्नी । जी करको कर र ओरै म गधी बूझते हाथों पैटी मांय-नू
 एक सोमै-नी कडो काकिपा अर पाहोतल-नै हाजाय'र २) दपिया
 डे जापी ।

जेय इयका कापय जागो । जीज्ञाजी मावा । पीता गुप्ताई दण्ड
 की । मूँदे-म तुळसी-वारणापूत दिवा । जिलमी अल्लकल-रो जीपो
 कलज बीको । गोपलक जार-नू देखी मादिपो—काकाजी !’ जेय

धमिली कोकी भर पाड़ी-ई मदा-री बाएन मीच-ली । घर-में रात-में
मच गयो ।

[*]

अमां अमां बातां हुन रही ही—बापई गोपल कमे काई हो ?
देवई या का वृद्धी भी के सु कटे-सु सुभारा करसो ।

लोचन-रै उमां मे पीचन लालन-ईन मुलनन ।

'काई बाएन महीन-सु निकमो बेडो घर-में दार-बोली कर
२ ६ जीव लालनबाडा ।

उस्ताद ! बां-मे लीचन अमिले दूचा को आली बी ?

पली-ई आली आई । एन जोर काई बाडो । देव-बाक राकन-री
काई-री होमन कोननी ।

'रिम मली कमिना, जी मावा-रा नहीं कवावा-री कम है ।

किताक दपिना जाना हुनी ?

मे-ई काइ कर ली-वाच सी ।

'एन दान पिता मेका भर बाएन महीन-रा डीमन तो बाकी-ई
बडिना है ।

ता बापका मर देवी—'बांकी मिराननी भर बांकी घर जाननी ।

'बां-मे सोचना ता आलीन काई बहार कवावी कटे-सु ?

'बर नदान मारीजा ।

जी काका ता दान मिरान द-ई गयो है ?

'बर-न दान-दुआ कीदा है निकमो गवाता बेडी है । ये लीचन
काई अमिलना है मावा वृद्धा ता गाए-र मुई मायका बास काइ-र
लावना है ।

‘इसमें कोई फर्क है । माँ-दू भालों-की मेहरबानी-में बाप-की कमर टट बाँधेगा ।

‘पण इतना कामी कहे-मू ?’

(मित्रता बाधते) डाकू-की आँखें ।

भाऊस नहीं जा कोई रोज बाध पड़ो ? जक ना बर-नी बीच जाये बीबी कर-ये-रु रहर पालनी-में कुलीने । मरदा बकिना दूक देव-ने जाग को रेबेबी । बी कोई बर- है जका मरिवा धार जीव-ने है जोम जाव-ने ।

करो बी जाव-नी इये कुली-न बंध ।

इहाँ जाव-क क ताव-का मग बन्ना । बाड़ी नर दाव दिवार / काम करा ।

तू तो बाप-करो पावे है । कागें बिक-ने बरि है ।

मैं तो बीबी । तरे तू बिचार कर दिया । दामें मित्रता-मू बन्ना लैकीगत कर-नी । जा रीठ इये कय-ने बी-ने काम-नी ।

है माँ-ने ?

हो ! कर्त-ने घर-में मर-नी हुनी-मू बैरा बाप-करो, बी जाव-का-ने बाद कम-कर-ने बी बहीं ल्याव कर बेंदे जव-त मित्रता दूक नहीं जाये इल बास्त बैने जेक-नी कम दूर-ता ही । इल काव-का दाम-ने-ने घर-मू पारे बाकी मग-रु दूर-ता ही । घर-र मग-क मज-रे मू-ने है ।

ता इच तू कोई हुपा ?

‘भागे मुणो ! जह सारा जणा मित्र-ने है बाता । भाव-ने दूक-में बाव-नी-नी-ने ल्याव हा मित्र-नी ही । जह बाव-नी-नी लीव-का क

'बूढ़ी'र साग ?'

'परिचा कटे हा ? जीबड़े-में ई लून को बाजवा हा नी ।

'जमे तो बाम रो बकातो-ई होवती ही ।'

'अरे ! बिछै-रा दिन बाजवा हा स्वादिवा बंछै-ई मांभवा हा ।'

'मैं तो सुनी के किछको ई देवा हा ।'

बुड़ै-बड़े-बै । लको-ई ककवा-ककवा ।'

बगामन ?'

'मछी-में धव-धर बिछावा हुआ हा । कछे कड़ी-रो तदकी बाज देवा
हुवेका समै पूरी हा कोवनी ।'

'ता लगी बाणो-नी कु बाकी तोवानी बाजही का कुरीन ।

जावक नहीं । बाड़े-रै केडकाळं चाई जीमा-जोमाओ ।

'ई तो जी-ई मौन-रो जागो वाव बांकाववा । वन नैर घनी उराई
तो दख बायी ।

'जमे के मगके इवे होन-बै लोचन-बै वा स्वार हा क ?'

बराबर ।

'वम बगामन मग करी । बंताववा सो बाउका । वरमू सुगमै
काछै-र पो लमक भिजा होव र भाड़ी वरद सीब'र सी करलो ।' 'ठीक है
-ठीक है क र लमा जमन बाव-बादरे भवे जागा ।

[८]

गामाक लकवाळ बाव बीबा-सीबमो-रि वा ? भवे बिमार हुनो
बारा है । वा पीडन बंजलनी काछी-इवां बबरावां बाज बाये है ।

ठीक नही बबराई ? बिमारी जाऊं उलतो काग बरहा गावे
है मर बावने-वा नाम डका कर देरे है ।'

मगवान मगली आली करमी :

“कहेबा। एव डा वहीं मैं-ई कोई मगवान-रो कोटी बिबो है
मको म्हादे-ई माथे ऊपर बुल-रो बूगर काप परकिबो है। जाकर
कामको है माडो तो कोपनी।”

‘बिबो कोई सचाम करमा।’

करमा कहे-सू ? जातरा बरापा दुख रवा है। कोई पक्को-ई को
बिपै है नी”

‘महीं इत्ता हुकी मठ हुबो। बोरी नौकरी क न जासी।

अदीनै जोरा सज जासी। गवाडो गन्क-देवी-सी हँची आस जासी।”

“(मिसस्रा बाबर) बाबणो ठँबा ? अचकड तो कहिबाहे हँड
कार छेकडको पिणकोई-समये ”

‘तो कोई करी ?’

‘मक तो मग-में इसी जावे है कै बावै बिना कर्षा सुमिरा अक
दिग मडे-सू काको मूडो कर जाऊ ”

(रोबडी-रोबडी) ‘ना-ना, बोरी वगा-रे हल्य कगाऊँ हूँ। बोरा-
मारा मेकाई दुख-सुख कास बेसा। एव मनै खेचकी मै जोह-र ना जावा
परा। हूँ मुर-मुर-र मर जाऊँका। कारे जोरा-बोरा कोबा है हूँ
हुगर्ज-रो जाऊम हूँ। जाता कधी पिणले रो-ई साबरो को है नी।

‘बस जो मोह-ईव तो मारै है। अबै म-सू जपमाव सपीअ
कोनी। बाहरे संसार। ना जावै हवे-में लगाऊ बिर्चनी अर कचम ई
मरिषा रहिवा है। हूँ काके बावै माझे भूषा सगळ-रे अडे नाऊ
राग अथो वग काई इस नू मग को हुबो नी। सारा वाक्या-रा दुख
म्या। किन्ही बिबो-ई तो लाडी मोडो ऊतर। जवै ता माई बकर दुख
क्यावम आवा हा. अडे पक-ई कोबको मरो तो क नीको।”

आपनी-से मगवान पर बैरा रोजगार ओधीजे ।”

मगवान-नी बचा-भू तो कल्ला कधी-ई हूँ । असे तो मने मिनव
रे आने-भू दर कागव काग लो है । सेने ए-तो गहारी-ई रैबैक ।”

(जायू पृष्ठते-पृष्ठते) धी-ई इपां कैवण जाग गया ।”

आ गहारो नृप है । ते बारही म भाव-पूरोवे पानी-ने कारे
आस ” गोवाळ कीस पक्षयो ।

गोवाळ रै केहरे अर आंख्या-नी रंगव देयर मातनी-नी मां घुज
उडी । वन कहराह रै अचारै में कई बाव बैरै माते में बीजकी री
मक्योरिका मारगी । बै-रा मूंछो बोधी बोधी बैरो-भू बीजो बीजो
अर काखो हा र शरीर जोका जोक हुन लो । जोरै-बीरै इककी कलई
अर मयबायन । पल्लु-ई उबिबारै ऊपर आया । वा छट जोरै में गयी ।
किबाह इकिबा अर कई बीज पैरो लां-भू काह र आवा-आवा पय
इवनी कुन आखे कटे परी गयी ।

[६]

गोवाळ-रै घर आगे आज मीमी भीड़ काग रयी ही । चियै-री बैरी
रै स-मरेवाका बायो बै'र बैदा हा । ओइ कई कगा हो तो कोइ कई ।
अिचा मूंछा उछी-ई बाली ।

गोवाळ-रा वन बैर अक जमी बोमार्पा — ‘माळका । बैई रो
बलमा नदी गुमायना आओजे । बाली-में से नाला रवे है ।”

आप-रो गुमा'र परावै-रो बलमो की हल्कीजे भी अरवार ।”

‘बरायो नृप ? मगो सवेरी अइ हुवे है ।’

‘अइ-ई ता मोकका बरमा-भू मइ में भू ग आम्बिब बैदा हा । वन
असे गहारे म्हायन कायनो । आकर बाई मयायमी ”

(सोन धरुँ बीजा जग बल बार — 'मूँहें मोचम ओप्री बल
मही बाइलो आयोज । काहें भाव'र को मरिया है मो । हाथ नाई बा
बस्यो हा बटा है

भीर बसै कोकर गाय ? बाइजा-रा मुवाता बाइ-बरी । गीत
कर-ई बसिया हा काह ?

मोता जग हीम भाव २) य भागवान घना जट-मू गावजा ।

मैं उद ना बगाव हा बल बाइ बरी र गीत-म हाथ को घाँविया
ना ? मैं धवा धीन हूँ बाइजा । जट ना गीता बका ग्या डर-म
हा । है गारा गरी गुन-को ना ।

गल हावा भावको य काहें गुती म दाहें बरा हा । य ना
हावा हा

हा ? बाइ-ई ना हुका विरहा जट-ई हसी-म बावा बरिया ।

जट-ई ? गरी-मवा बावा बरा मैं बराव बराव रिया

गरी जवान मभाज ह बावा जट काहें घीरी बर का घायो
है ना ?

गुन । कपो भावा जगम है ज ना हसम बरा हसम बरा
हा ह य ज भाव बने ईव गुनाव को ना । गवमुन

नरमेध

या

समाज-रात्नीरो

[१]

‘आज करसो समीची ! हू तो धारो गुल बोवठी-हू को मूख बीप’

‘वहीं मातका ! म्हाई इसी कई बाठ है ये तो मोठा सिरदार हो

‘मोय तो ये करसो जब हुसां इमै तो (जिम्मासा नाक र) कई

सुई इलका जेव नूव-सुई हीन हां ।’

‘गुल बीये है ? जे जिम्मा सात्वक सिरदार जियाक है ?’

‘आ धारी कालकी है । पाकी कमेई म्हाई चीक बीसिया पधारी पक्षे देखो म्हाता माई कई बीये है ? पावरो कवे है—वेई-मै कलक-रो-कलक कर बिचो है केरा कूटा है जिम्मे इचै-मै पेरी इचै ।’

‘हाक ठई कंवरजी-नी इसी कमाई कई है ? है तो जालो जाल र पधरे-ई बरसा-रा क ?’

‘कई करी ? हमके मात मातीज ज्यो वही जमे म्हातो कुगमिचो जाल-वरली-री समजिया नव-रो जार सुगमिचो तो जव-रो-ईज परजीविचो हो ।

‘जबके कडे जाला पडे-ई भाजक जालो है । हू तो बीचू हू म्हाया करजवाळा री कळां मूळा घर बीजा पग कुचै ।

‘सिरदार ! क्यों करो हो ? डाकुरजी साज बोली करसी ।

‘म्हाई तो ये-ईज डाकुरजी हो मातकां धार-ई पग पकदां हां ।

बारें आगे-हुं लोको बिजावां हूं । आज डाकुरकी रै मंगलवार ह ।
 'मंगल मुनी मरा मुनी । अर तिय लीज हूं । बिग पूजा मूरत भजा
 वा तेरस वा लीज । आज-हूं सीरो कराय हूं । बबान लोह हो । कंधो
 मज्जा मरजी जाये अह किया । म्हे म्हारा हाथ पग लो भोम बैवा ।"

(हुंमरै-हुंमरै अर अकनासां रेवतै) म्हारी पूवकी लो छोरवां आगे
 कहे हूं के पना-गैवा बाळ-ने-हुज परबीजीस । हुंमै एको स लीजी !
 कदाय मे पना गंगा बाळमा लो बागछो बारें परै जात बासी । नहीं
 जल कथा पूवको ?

पूवकी अब बरसा-ली छोरी काई कमल ? 'हूं' केर बारें नादगी ।

अबे सगीजी बोका और मेका मिह'र सुखनार्द-हुं बेदी-ली मां-मै
 कथो— बीनजा-मै बरी इसी कदायां किछा पना भाई दन्मी । म्हारी
 बैव लान टिक कर राखी हूं—सी पीगव रा-बीगव तिमलिया भै
 बदवा-बदवा कलकां अर अकाऊ सुरक्षित-वत्तावाकी मारमीह्या ।
 दन्मा के कैद री हाथ लो हुंमै कवयो मिह'र ! वन म्हा'र । बाज में
 लो कैद-मु-कायू पायू का रवा बी । छारी-ली मां राखी हो'र बाळी—
 पानो डाकुरकी ! अकां बारें गला-ली काई कमी हूं मोलीकायजी-ली
 पर हूं माराज ।

छारी-ली माया आगे मिरकर बाळी—नहीं हुंमा-मु'ह काम का
 बाळीमी । म्हारी पूवकी मे लो काईकिषा जना सुवाये हूं । दन्मल-ली
 काईकिषा म्हा'र कथा करे हूं—म्हा'र लो काईकिषा बाको सातरा
 काये माया !

'दन्मल मुल ?'

हूं कायजी म्हा'र मायू काई-ली बेदी । आगे दरगज'र'वा रै
 कदाजी मे वरनार्द हूं बी । सगीजी ? कथा जनाऊ ? 'आ पीगव-रा
 पीगव अर मुंहे मु' बाळ किया हूं ।"

“याही है वही मित्रर क्याव क्यों है ? व्याध-मगई भोग-
मोसर रीन-रकामा जे हूँ तो मामा-कामा करन नै । म्हासी जगरी बैन
बेने है के म्हारे तो जे-हैम सुकदका व्याध है ।

‘जारा बैन बड़ा भावक है जारे मित्रा किराक हुमी ?’

एन से तो म्हासी बैन अर बैन री बूही सामू-रा मारा क्याव हो
म्हारे भाषा-री मान राखा जयजय बाँह हो । (भाषा बच’र वम
पकरी है)

इथा मल करो । को जा जवान सुधी कधी मल किया ना ।

गामधी हरकावधी कही अर गामा-जाया पगा-सू बर काली डूरी ।
रस्ते-में बै-नै सगीजी-री पासोसम हीरकीजी मिली । मिछे-नै समी
हकीगत कही । ‘सूँ-’री काम दे’र सगीजी-नै बच-में राखन-री
मोखावम ही । वा बोली—इमे हूने-में कोई करक पड़े है ? ककराई
कोख मरन देडकी ।

[४]

हमारे हिम हीरकीजी-नै कानैसीक सूँ- विरीजी । पाछाजी-री
मुट्टी मरन करानी । कबे क दोसू जना बडी-र बरबाद नै बचावक
कामा । जोरी-री मातो पुझिया—कंवरजी कहीं मल है ? जोखाजी
क्या जगन-री लीजी पोकी पूरी कीकी है इमे बोधी बेसो । हीरकी
कोर दे र कथा-ज्ये पड़े कहीं हुलियार हुचो-ई समये । जोरी-री मातो
हसर कबो पम कंवरजी-रो कामको जोखो है अर जोरी दोखने हाक है ।
कईई । बोच-म-ई बाग काम’र हीरकी बोली—जो-हो-हो !
किसी बात करे है । जो-रै बरबाद सगका-रा जयजय जोखे कामा-रा
हैम है । कवरजी-री दाधी वा बचसा-री बचसा है एन दाहोजी है
नेनगड्डु हाई ।

तो-ई ?”

कायरी ना-हूँ अगारूँ मै । हवा बसू दूब ता ह काहूँ ? बड़ो बड़
 रडा भग दूरा साया यया गृवाग

भार भर अ हा-अ-र अयणी ना ?

हाह हाह । अउमावत ? कदा । ना कना व भी कान बूह हूँ
 मन । दूगो गय प-रा दूब ह भर अगारूँ हा नीमा किआव-से भय
 ह । अहूँ कवा आवीअ ?

हा दिना अ गय कना मारा दूब अहूँ दूब ना गरी मोकना
 अहूँ दूबो भर पदका-नी भय हा रयी प गयी ।

भाग दूबक काऊ गुन हा दूरा वल भूवडा लववा भूवका-ना
 हा हा भा बा भग मरना का काको-हाल नाह ना बार बायी-ह
 वरवा भुव । वीम है भग लवक ह भावा हे बाव वलपी देवदे
 बागवा भर कन हा किआ भागवा-हूँ भा-रा हाप-नग मारी ।
 भाद वरमा-ना गुन अ वा हूँ कदा भाग ना हावत ह वरवा । अहाम
 हाह । कवा कदा भागव है कन कावह ववाहूँ-ववाहूँ हूँ भर
 अ भाको अ व-हा ल हा व-हा-हूँ भाग-हा दूरा-ना भा भर भावा
 अह वीअ ह भावा भावा भर कवा हूँ व-ह है ना भाग दूरी ही
 व ल हा ववाहूँ-ववाहूँ ।

बोका ठै में ला ददिचो कोबची कोई सुन घेसी । म्हे लो म्हारी जिरी निरम हा पत्नी ऊपर थर बण्णार्वा हा । बारी बेक-री सांछक संगत घेसी ।

दिन कोबता किमी बार कागै ? सत्ता बेको जाचो । रामछै-री मा बर दादी-री बीइ बडमी । सगळे-रै मामने जोगा लो बल जाचो जने लो नो नारायण-री देह करे ला कोई करे ।

मोतीबाकजी सगळे-रै दिखवार्-रै हाथ बगलता फिरें एव कतिर कुन लाजे । सपाई-सू पैदा लो मल्ले निजै-बाळा कैला हा मांसू कल्ले कल्ले में म्हे किता ल्वाला हा । एव मोल्ले ऊपर सगळ माळो कल जा बची-बची कासिस बनलें पर बर रै मल्ले इतिवा मिजिवा । मांज क कल्ले कै कदास लागी-जै ला नही बड जाचै ।

लोभी बी जाचा । उऊमचा गैला बडालन-री सदा डैरी । क इतिवा रोक दिवा बर बाडी-रो हिसाब वल्ले कर देवण-रो कनो लोल-रा लंडू लाल्लियोवा हा । ऊपर-सू इभी देकान राखी ही जाचें ललो-ई जाखी कोबची । एव जसका-में जवै मधुवा-रा गोला हा । बडली-रो बांर माडी हो ।

हाथ-काम केरीजिवा । इतिवा कड-भोक कर'र कटव होबड कामा प्वांर कै मने मांड कोब बर कै मने कोळ जोळ । बरी-रो मोरो वल कोळी पूजी-कपी बीभी मू हुटै लो कोकर हुटै ।

भाकर बरी-रो दिन नेको जाचो । परसू बरी है । जवै कोई करसा । मूहे माडी केल्वा जाचगी । लावडगोड कागी । जाकर रामछै-री मा मल्ली पर मामी पचावत कर'र जळ लो सुकळाचो । शिमशिमो बोरिवा बर बांदि-रा गैला लो सीवार बड जाचो । पत्नी मोरमोडवा बर वल्ल्या मांसीजी बागुवण्ड भूषाजी कर कोडकिचो मांजीजी समजिचो । रामछै-री मा कचो-व्याच-रै पल्ले सगा जै देवाप देवा कै गैला सेवाम बड'र कामा लो होचो जिण-सू बीजी-रा मांग लाव ।

[५]

रामछ ही जो घर बाधो पंजाबी-में जावला । अहीवै लाठ बहीवै
करो । रामछ-रा सासरै-बाध गला बैसल-सु सुकर ग्या । सखु बैसल
दिपे-सोनाह महा पद-र काले कला है जाला भर गुरी-में चादिवा जाला
है जाला ।

अहीवै रामछ-रो मापी सूबा अर मापी धावत जगादी करै । बल
सापी ही होय-बीम महीना-रा कबो हो जको चार बरस बीसला
मरलाव करै हो कब तौरै करै ।

बीरै बीरै धंधो पूरल जालो । मालीजी, धूबाजी अर मालीजी-रै
बरदास-क हा पड़यो । अरै क्या हो ? कछ-रो बीर बरलो ।

बर-री कछ-सु माफी-बाक आवर सूबाओ रामछ-रो मा-न
मूहा-मूहा कौन जाली-अवै कस जो कछो भी चार-बांध दिवा-में गहारा
उबझो कर है । हुवा रीला कोई जावद-रै हो दिवा को बानी ।

‘कहा क्या बोला हो ? जावद-री कोई बात है ?’

‘हो बहै किराक इहारा ? महीना-रो कबो हो बरस बीस ग्या ।
बोत-नी मा-न कोसी-में मूहो बाबी बल हुबगी’ ।

‘जावा हो । वल गहरो बगु तो बल कलबी ?’

‘अबै रोय-बीकर बौह जाला ? ना मीजार् ? सवायली-रै बहूना-री
बाल बल राम ?’

‘हो ना सवायली-रा बहूना रवा-र दिजियां हो ।’

‘अह गहो काम कदिवा जको गेह कियी ? बुदिवा म बजार् हो
रबी-ई कोपनी । जल दिवा जका ला देतिवा ।’

‘अब-रा अवादिबो’ पहाप हैसु । मिनल मिनल-रै कस
ना जावना दारिदा नी ? गे-ई कहे ई ना काम जावा हुमा ?’

—कम थावा उधारा बाव । जाली नसम-री कमार्ह-रो दक-ई का
बियो गो ।”

‘ता बत्तरे घरवाछी-रा कजीवबादा तो मग करो ।”

‘तने पूव छेला-हुत्ता बारी काज कै धारी बगो-री काज ।
घरे जावा तो घरवाछा कबकी-मू जाले अडे घुंछा छेवर बावां तो तुं
रिक्का का ऐवै गो ।

रामन-री मूवा हुक्क-हुक्क आंनु नमन छानी । इरी-ई मे रामके
री मम्मी जाली अर बुद्धिबो-मगोत्री । आज क्यों बिरात्री हुबो हो ?
आंनु पूवनी-पूवनी मूवात्री कया-यांरी देव मने गो लावनी । रामजी-री
मां बिगार बोली हो । हुं तो डाकज-ईव हुं । हुं ना मिमनी-म-ईव
लाइ हुं ।

देगाबिबा क ? अनूध बार करवाछ-ने दहे ।”

मम्मी बोली । होय ना किबे बाई ! हुं तो बार उबको करवाछ-ईव
आवां हुं । रामजी-री मां कबो जक जक हो गदारा धै अर अंक ल ठोइछै
इमा जलनी वबो बोले ई देव । आज काज करव बार बरम
तो हुव था ।

‘गदारा गावो है ?

मदी बाई कमर ना गदारा-ई है ।”

हुं ना क्यू हुं बीजने जो ममाव गदारी ब्रिबमिबा । ममाव-मू
गदारी-गदारी बमाव हो । आज जाने-री काई होय आव न फिरकही
परना बडा है ।

बैल ! धारी जागाईं इत है । मार'र रोवज-ई को देखेगी ।

“रीम ला इसी जाले की बाणी पड़े बीबू देखा बा सगाई-रा
सेना पाया बगाव हैक ।

“जो हो ? हमी जाक-री पजिवाली हुये अकी लो क बे जॉई
कर देखावे ।

‘ओ अही कर देखाऊ ली म्हाते जौरे-जै काऊ । रांझा येकी होवे
कायगी ।’

मुवाजी बोली-हाको भी गोमती की ! कुन कोरी सौयन कवा-म
मुनै । बा-रो राम करै लो बिपा नहीं अबै के-इ जालो-पीलो ।

[५]

अबै रामजै-री मामी-री चारी जाली । कैरै बणी पृथिवी तै लो कर्ई
राम बाई-रै हयई-दरे-ओ कलाई का है ली क ?

‘क्यों ?’

‘क्यों कर्ई ? कमीलबाबा हुनै है । बाई-री कपड़ आलत-जागा
जावली छिई है । केव है बाई सवासयो-रै मेला कपर केरै-रो स्वांग
छिचो । बा बायो-ई नांग लेवे है ।’

“देसी ला नरो । बा-रो बैन हो-लीन महीना-रो कबो हो अको
बाम बीत ग्या ।

‘अप, तै लो धारी कमानो को देवीके ?’

“अई लो कंसाला-ई है ।

“ममे बिना पृथिवी-ई ?’

अको कियो म्हाते पादे बाबा-जै के जाली ।

कंडखिचो ।

‘हुबोय दिवा काखीपार । मूंडो बखिये-नै पूर-ई को खामैनी ।
हू तो बीबर-ई म्हारी छिरी सिराऊ हू भर लने नामो होपसी क्यों
जातो है ।’

‘तो कोई हू लामगी ? कय-ना हुबहुपायो जपायो है ?’

‘जगाव छिवा कारै दीमिया ! मने तो ९) रै नीचै देव
दिबो’क’

(बीच में-ई बाव कट्टर)— ‘जाव बेना-बै तो दुखाल जावो ।’

हां बस जो-ईक काम बाकी है । तू-ई क्यों जाने परी नी ?

‘धारी छोटोछी बाईसा-ईक करमावा है कै का तो हू-ईक भाऊका
बर का बही बहू-ईक भावैका ।’

‘यज क्यों ?’

‘काव बेना-बैनां बिदमिद छिवा ।’

बिसनूही-ना कम-ईक हमा-ई कछै है—जा कै’र किसनो
कनका पैर र बाव निकलियो । बाई-रै छिरता-छिरता पया-नो पानी
निकल क्यों बह कही-ई बनी गरम-कुसामर-रै बाव छोटोछा
बाईसा ममिया ।

रामबै री मा जाँचनां भरती बोकी—बिसनूही ! मं कोई मिनक
का मारियो है नी जको तैं क्यों कै बही बहू जाने ता हू का भाईनी ।

‘कोई करा ? राव-तू बाव मकी—बिसनूही कठर दिया ।

‘हू राव कक हू ?’

‘म्हारी तो मामो कपलक-रौ बामरा कीय नी । हू बाँदा-बाँदा
बाव जोहू हू ।’

ओहो बाई ! देख कर ओहना ! नगद हाथ जोड़ दिया हूँ
जोड़े-ई है । हमें रबी मीठाई जको चेह दाब जाइ दो । कोई कम
मदारी रीह ही लूटे कोबनी ये ता सगळ नाकी-बाक जाम म्या ।

मदारी नाम बोच ह-ई क्यो कैचो हो बाईजी ? रीम-री ह-में
कोई बात है, याप री त्रिपल हो पाकी मोग सी-ही ।

'हू किसी काच'र मरगी ? मदारी हलै दिव-वका हसीज है । वा
में बाही माही कनै लने-रो बहयो कोबनी । पूत बीबडलो । बसने
देव ऊपर से बाजा बाले है । ओक कमी गवाज बाछा पत्तो कांचे है
तो बीजै पानी ये बरबाका ओमका ऐचो हा ।"

गोमटी कील पड़ी कम बसका मरती बाजी—हुल अवचावत-रो
हूँज जावे है मौजत । किसी रोज सुज'र ऊपर हीरियो भर जाइ
मारी जल्दी-में भुक्की झाड़ लो । कारै-सू रामको धापो । माती ऐलै
है तो आत्ममारी लुक्की । राम मिछलो । कडीनै-कडीन ऐल'र २ । रा
कोट भर कांचा-री कोकी-नै कोली-री कांता में लुकोच'र बम-बम ऊपर
बहिचा । मामे कवा-जीमले बवा ! 'दिया-कागल-सू विपद'र जाम्-
म्या है । रामका हा तिठी-जेका मवाज लो ।

[]

"कल रीह मैना "

"मैना म्दार कनै है कोई ?"

पा-री मा रीह लने-सू मांगका । नहीं अइ ऐलै है'क सींदो ।"

पिठ-री कांच-री रीसर । ओक दिन मार मूर'र पिठ छोडाचो ।"

"ओर रीह मामी बाजे ह भिसरमी । लेख काक छेवती जावे,
नहीं जने जी काह नाजूका मने जाने है'क ।"

"कई करा मैना को मिलौमी ।"

को सिखैनी क्यों ? चारै बाप-रा है ?

गैबा खैदा-ई हा ता परजोखिया क्यों हा ?

‘सक समस-ने था उछवावैशिधा-ने लुपान्ज-ने ।’

‘आ पारै-ई घर ही रीत है । गहारी मा भेक भक सुई तक सीम’र
हालनाले-में घर राखी है ।

राठ ! अछूटा मनै-ई मैला । छे धारी छे’र रामछे
बूझी-ई मछे-में खेक साठ जमान सिखो घर गुदही पकड़ र बीसछे
बीमनै बोरी मकहै-ई चारै काठ ही । अक चीक बिकळी-बीबो मारै
रे ! कोल बाग रत्नाराग मेला हुच था । रामनै-री मा सरम-ई बमी
में गवारी । हाथी माछे पही धामू नाकपी-आन्वली बाछी—ईश
परमामा ! मनै बगो उछावछे ।

[म]

रामछे ही मा अछास केटी घर-री इसा ऊपर विचार कर लयी ही ।
भीकनां झर रही ही । रामछा कछे-ई सरकन-ने गया हो । हाथी-ने
ठाव भावधानू । बेइ-ने काले ता कूल ? पाछो-पाछोसी कोई पक्को ई
गही बीव । कछे कुडी कोछा-री तुगाव गही ।

पाछोस-में रबीवाळा नारायणजी-रो बेटी-बरी रत्तवाळ रामछे-ई
रत्तवाळी करम-रा आळमा देखन-ने रामनै-री मा कछे आत्मा पल रंग
रंग देल’र कई कल-री हिम्मत को हुची नी । खुशियो-मात्री ! आज
इत्ता हुची क्यों हुच रहा हो ? रामको घर में कोयनी कछे ?

रामछे सो काळजो सिखोव दिथो ।

‘गहरी कावक काम मनै मोळावो हू जावी रात-रा हावर हू ।

‘आ बेरा ! गळी-गुपल घर सामरे-वीरवाळा सगळ-ई मूळी

तुम्हारा फिर है पैसे कुं तने बाहर नै कोही क्या बाबू ? बरबाद-रै
माग को छेनै नी तो छोड़ --

(बीच-में-है)— काकी जी ! ये मने छोड़ समझो हो ! ई तो
बाँर रामक जियो हू ।”

समझयो कोहीनै तो नहीं । बाँर बाबू बर रामछै-रै कप में
बरमेको हो । ए तो बाहर हो । ये दोन्हीं क्षण-में कोबनी जमै-
है

रामछै-रो मां मांस पुण्य बागी ।

आ छोड़ो मग करो काकीजी ! जनी तो डाकुरजी-है मने बाँरो
बेडा बजाव दिखो ।”

‘हू तो घसी-है बेडा बजाव नै स्वार हू पल में मिरमाज-रो
बेरो बने पुन ।’

‘हू बच-सू ! ग्हारै मा कोबनी । ये ग्हारी मा ।”

आ कैर जिसे काकीजी-वा का पकड़ जिया बर दोहर कबकी
अल्पजाल-सू बैद-नै बुझाव जालो । बैद कबो-बरो मधी डीक हुन
जाडी । हरी बैदजी-रै सगै बाबू-र बचाई के जापो ।

बाकिनै हेको बाकिनो—रामबाबू-री चीडी है ।

हरी चीडी कैर काकीजी-नै देख दा । काकीजी चीडी पाकी देवता
कोजिया-बाँच बेडा । ए ता जने रामक-सू-है बचो है ऐ सू जियो
पक्षो है ।

हरी चीडी कोकी बाबेजी-री हैं । जिलिया हो— १२ दिवा-सू
जोर-रो क्षीनोदाह ताव बह है । सरपा दूगरी है । चीडी दोरी-झारी
जिनी है । डाकुरजी कोबी करमी । रामछै-री बाबू समचार बाबू-
जी बाबू-र बदाव हुयो । डाकुरजी कीकर बार कंगामी ।

हरी फिर बाबू ही कैर उठियो तो बैर कूजै माँच-सू कर्त चीत्र
पही । काकीजी कयो—बेडा ! क्या पकड़ जियो ?

भी तो दुकमा है :

क्या रा ?

“महा-समाज-रो ।”

‘क्यों हुआ बोधे जह्नुवाहां में पड़े ह ? बारें बाप’र कलें बोधी
सैगन करी ही ? जूपा कबिवा जालनन दिया । वज टंकन ई क
सबो नी ।’

‘पारें कलें कलेंही-रा कागज-बजर हावला ?’

‘बनो-ई कलेंही है ।’

जा कौर काकीजी कक सैको पुरणा बसयो पारें मांव नूं जार
हरी-बै देली बोधी जा बज-मावा लूं ममाक । हरी बोधिबो—मा !
पारें डा कौन नी जा माने-ई वन माना-ई ह ।

बेटा ! तं म्हारी बजल मान हुआ तुलन में मन पड । माया रा
समाज मनीरा-रा भारो ई पार बहेका नहीं ।

ना मा ! जकै समाज-म मातावा आम् तालै डाकरया आम्बद
विना तहकै, ओसर-जुकता-री मयकर करपीसी रीत-रै घट्ट-में
जीबण पीसीजै पंच जाण-बूमर अणुजाण वखर पछया घर छने
पाणी-मू बाझै बिबै समाज रै युवका-नै काई हाथ-पर हाथ परिये
बैछ रैया जार्गीजै ? कब ली पारें बिभा मूरख घर करम इल्ल संमत में
बीका को मिळैका मो । (बिसाला बाब’र) रोम कल रया हो जणै
मीरो सारंगी वजाय रया हो ।

बेटा ! कई के जालर पंच पच-ईज हुवे है । चारी मानवा
बा-री कुछ सावसी ?

“बै पंच कावरा है पंच हुवे जका लो समाज-ने चाकै रसी बखानै ।
बै पंच लो समाज-री गरीबी भर जालरया कबर जाल नहीं ईबरे

मरने-परने चुकते-रुकते पर साँची-नै चरर कर शोभाती-आमना-ते
 चसा'र बिचारी धोबी-मर्दाना रै चर-बापरा-बैबेच'र भजवा बडले
 मार'र जोधार जालाही पूजी-नै-कहाली-में रांघ नाक है । मरबापरा-र
 चारै जोषना-नै-ई मार नाकै है । जे पंच नहीं समाज रा 'नीरो' है
 'नीरो' । जेठा जेठा हरो-रो मूँको ठाँवै करना कुछ लो भर होठ
 फड़कन जागत्या । बी बेग-में घर-नू चारै निकल लो ।

[१]

जोखो हूँही हिम्मत होवै तो जाले जालो ।

'सोच'र जबाब देसा ?'

हमक जहाँ सोचलो नाकी-ई है ? मरिया पक्षे डागदर-नै
 सुझावने-नू काई जान ?

(मरुद-री जबाब)— साँची है साँची है ।

साँची साँची-नू काम लो चलेनी । आज मा-रै दुष्ट-री साज
 राख्यो है बडे धारी नाकसी सरसे-र भिग में जोमोले वृषिबै
 दांताबाजा टायरां सुपकां भर अपजाबा-रीगिया करची है । जोखो
 दल तार है ?

भीर-नै भीतर माक्या भीर जागे जावा । भर सपकां स्वर्ग-सेवकां
 -रो लुची-म नाथ लिखाया । जेक जोर-री गरजवा हूई-योको 'सचा
 समाज-री छय 'हरीशंक-री जय' । रामबा-ई बिठाराम-रा कुबोही
 हल लो लो । जवे बेरे हिरई-में गंदे-मैले बिचारा-री लड़बाही काद
 रै कपर आज समाज-परा-रा बीज कर लो ।

[१]

भीड़ हुरिया । गूहवा विचलियो । जघा जाला । भर बहरतै जेक

मारो दिखलहु हुय ग्या । अबै ता रामको जक मिथल-ई हरी-मै नहीं दावै । बहुत-मै खिलसी दाह समझै । अहीमे स्वयंसंभवा-रै हल-रा गम का कण्ठाव ली बडोण हरी भर रामको दोन-री-बहुषा की स्वयं मधिकारों-री जापोलान ।

रामको-री बहुत राजी-राजी पीरै-सूँण छापर मूवाजी मामीजी भर मामीजी-रा डंठा निबडान दिपो भर मामू-रो जी मारो करत दिवी ।

[११]

रामको भर हरी 'सेवा-समाज' -रो कैदरेण खबर हारै विकटिवा कारै-सू दादानी रामजी-री करम में पूय ग्या । बारै दिन बादरामका स्वयं सेवकों-सू बिरिपोका भरै भायो । इत्य क्या है महु सुदिवा-सुदवा रवार है । कड़ाका बहिया है पच भर रसाहवा कड़ा है । बेटी जालका काज हुचगी जर बे स्वयं सेवकों-मै बीचा-बूर हां मठवा मारवा कड़ाव ऊया । समक उचबै मरीज ग्या भर हकता-ई रै ग्या । हरी-ई-मै पच बोझिया—देरा क्या दावहापां करो हो ? हसी बल ही ता काज भारी मा दूबां कबो छिया ?

रामको कड़क'र बाकियो—बारै बैकलज-सू ? मिबल नहीं देखिवा जने दुगाला-मै मिसली बाबी ?

'क्यों भूला बैकल को काई ?'

हवै-मै काई करक है मगल समाज-जी लो कर ग्या ।

'जबै मरे ग्यात रै पचा-रो हुकम को मान ली ?'

'नहीं ।'

'देख पद्यतमी ?'

देखी बासी ।

रानी कारे बूढ़ बडासी ? साम्प्रत-रै माऊक मऊकन भोजन क
करे नी ?

सरपा साक जकर जकर माऊनी-नैभोजन करारुका । ब-रु बडासी
बर बाक-र घोरन करन-री कठै सम्प्रत-री जिन्या है ? कठै भिम्या है
यठै मगरी अनुसार कथो है ?

कथो करन-नै को माये नी ?

‘सगळा-नू पैका मालू । करन सदा सिन्हा करन बास्ते हुनै है बान
बास्ते नहीं । म्हारै बर-री दसा बा-सू क्वाची बोली-नी है ?’

(बेनी कथा)—‘बास ता साची बर करन-री कथे है ।’

‘कैये है बूढ़ ।

‘हरी जानै बकर बाझिबो—माऊकी-नी बीतासी कथो करसी बांरा
गाला-गाला बोहै-नी गाली ? घर-टापर-नी बेच-र दवरा नै
रऊन-र दारीजी छरण-में बोडा-ई मुछी धीसी । सगली-सू कपर कर
किचा करनी ? भीगली करन बाहै नी हुये है ।

रामछै कड़क-र लवनेवक-नै जाळा री—साधिया । बूढ़ा भठ्यां
अर मार दो कड़ावा ऊंधा ।

जोर-रै पमाकै-रै सागै-सागै मिथ गरजना हुनै—‘मंवा समान
री अब ।’

भाठो

[१]

सरहो-री रात, किरमिर किरमिर झंझा पड़े । घर-रा बारणो
बड़ी बड़ी लुके-बकीड़े अक ठरै-रो बाक मक-सी बाग रची । लुगाणा
रो लुगलुस-रै बीच में रै-रै र क है मुर में हाथ मरी । जोर-मरी-री !
हरद-मरी आवाज लुकीड़े ।

होय जना-भेक कहुँक डकठो भीस्वा-रा भर जेठ मोरिबार
जिहै-रै हाथ में काकडेण, बारणो भोख र हड़बड़ावना दाबाप्रापा
दूर पड़पा । कुत्ता केव जामे लाई जामा । डकठो डमरबाळै
जेक साँकड़ी अचारी गळी-म बड़र बीमै बीमै जेक घर-रै किबाड़ रो
कड़ी लड़लड़ायो । जगळै ऊपर-मु किथो लम काह'र कैबा—डैरो
आयी ।

हवा होना-रै सगो जेक जयेद लुगाई बाक रची हो लीमं अवा
घर-मै बड़िया । लुगाई हरद माकिवै में लची भर थोड़ी देर मु भावै
डठरी पर निरठ हाथ'र । डकठो औग्लावाळै बुद्धिया—मोनयो । सिप कन
बाँक ! मानडी मूडो कटकाव'र गिराला-पूर्ण मुर में बाखी—बाबाजी !
'भाठा बाप बड़ियो । बाबोजी निम्कारा जोगला बाखिया—भैर !
माय-रो बाग हारा ला गोडा रिक रवा । निठ मकका केरती-केरती आ
संजोय ब'बियो हा, पल माग-में आडो किलिबियो । कहुँक भर्तुँ' जिमो
होवना ता लमै हाडो करणा र मक-री हाँक ।

बल काटनी आवकी थोड़ी गहारे लगीच-री बाज है क-री राय ?
भैर बारही जीवनी रैहो । लीची पारै कन-ई मेह-ई आयो ।

[२]

माझो घोर हाड तर-तर बचन कागो । वन जो माझो सत्तेज
माझे-रे बरबरे गरम फुरतो भीर वैद्यकीमाझी-रा मज मोबळो हो । जो
माझो भक्ता नही वन माझे गोबळी धुकुमार नहिक्ता ही । बरबळी-
ई माग-म्हू हवे-रो नीच 'अहिक्ता ही राखिचो हो । वन जो मज
धुगळे -रो-ई री गो ।

बरबळी मागळा ई हवे-जे 'तीजा केता । बया जाह देता ज्यो
केता-‘आ जे रांड तीजा वया माई कावै बीजा’ । काळी जेव डोकरी
रै सारी मजो त्रिको मोसिका-मोवक हवे-रो-ईव सायी ज्यो हवे-जे
अहिक्ता माई जेर वतळावता । रांड भर -मो कैवळगळी-जे समझो-
वता जे रांड-रा मोव नही विगावतो बोबीजे । वन जोवदिये पवे
दांड ज्यो जी को-रे जाव जायवी । मागळा मुंडो मजकोळ-र केता—जे
रो मजकारो-ईव वजो माई जाह जे । मोवक मज-ई-मज बीवर
रै ज्यो ।

[३]

मोवक हा वजो डोकवळी-र समझदार । मर म्हा तो व-री कदर
का करता हा नी वन बारबळी-में जे-रो सिहा जमिचोवो हो । जो
मजिक वन कर-र माहित-मजमेकन ही 'माहित-र वन'-री वजो
मजकन-इवक मज कर पचे हो । डोक मज-मागळो मज माहितिवक
जमावजे-म जे-रा कांवर मजळा-म्हू ज्यो रैतो ।

भक दिन मावक-री मायी जाह-री जेव-म्हू मिळत भावी । गोजा
भाय-नी वाजु जेवा मायी जाव-जाव र रम रवी ही । मोवक मायीजी-ज
पग मागळा त्रिक । मायीजी माय हाव कैरिवा भर वज-मिळई
जाव-ज-नी ही । पुरवी बीजा जर तीजा-जी-ई मिळई ही वन माई-म्हू

माही । बूझकी तो चुपकी ऊसी रफी पय बीबां अर लीबां मरमोखिये
 राई मूको कर'र बैसो गे-ईं भाई-रै बराबर पांती बेसो । मामी बोझी-
 रांझा ! ये भाई-री बराबरी बिनां करो हो भे ? इयै-री बेछा यासी
 बाजी ही मर भांगी बेछा ठीकरो । जामो बांन भाई-रै बराबर पांती
 को मिछै बो । जारयां मूको चडाव'र मिछाई जंक बी । जीगल-में
 लुरगो । मामी-ही कयै सभाब-नी । जामा-रै जक-जक अप्यइ कर'र
 बोझी-रांझा ! कु-चन अर कु-सीछा भाई-री बराबरी करसो कबों ?

मोचुन पूदिबो—कु पय अर कु-सीछा कीकर ?

“और क्या बेछा ! जारो होषतो तो बै-रो फिरिबाबर-ईं सैरा जारयां
 होष'र इहां मामै चहै । जन कठ कुचव-ईंज ई । धोरै-रो होष जोरो
 पाणी-ईं करै ।

दाबर दाबर सैन बराबा, क्या जोरां क्या ज़ोरी । क्या धोरयां
 ऊपर-मू पड़े इ अर जारा-ईंज मा-नै पेट मांघ-मू जिकम ई ? क्या
 परमात्मा जारयां रै हाथ-पग जाल बाक जारां-मू कमखी पड़े ई ?
 जुनिबा में धोर-जोरो दोनां-री बराबर अकरत ई । जेक रै बिना बीबा
 अचुरो ई तिकमो ई ।’

आ बात तं कबी जकी टाक पल जामा धोरा-ईं डुर्ब । जामा
 अर-रा पालकी घर-नी डेनुको डुब । जारयां-रा कांइ ? सांवरटेक दाकुर
 जी-ईं नीप्यां जमाव धीर्वा ।

“कीकर ? जीगल-ईं ? आप-न मल-मू इज सलझखी ? दाकुरभा
 बा-नै केदल भावा डुब का ?”

बेटा लू गळा ई । जावर जुनिबा-मे पूय आ जल कय कम
 बही ।’

ममहादल तो को कबै नी मूरली-रो गुल छाहा । ममै ता हेराम
 भाई ई ये मादत होष'र लपान-बीबापुन-यै दुरभांन बिनां राबो ।

बोरा हो क्यों तूब देखे । बर बोरी क्यों कोस केने । बः । बिना
धोखा बिचार है ।"

"बारी बेम्बा है तू साथे उचकल्ले बेरा । बगल-रो बसो तो इसो
कोचणी । जवे से धंगलेनी मलिबोका बारा नवी बुलाई करसो ।"

"बही-ईं तुम-री बात है, कोनो जिकरमे जवे 'फटकी पड़गी भाछे
आल पहियो' केने । बोही-सी बही तुम' अछे बे-ने जाह-पार-ने-ने
'राउ' बिना बठकल्ले बोनी । पल से ता जखी हो पाने तो जखी जल-ने
हूनी हीन बही समझणी ओपीजे ।

"अरे तो हया-ईं समझली । मिठा-पुकी चाक को कोचो भी ।"

मोक्ष समझ लो के आधा-ओड़ी करणी जाखल है । जा भेक-रो
बही समझ-रा दीव है । मर-से बही सुग हुयी । जो जल-रै मावके
रै बर बीसी हुरियो । बीका बलिबो-ईं हो के काई देखे ईं से जेह जने
कबेरी जाक्या जाक यू हो करायल्ले हाथ-से सोरो बिना मुँहे सू
गालपा-रा गीठम बोडयो बर-बार हाथ पीस-र एक हुयार्-ने मारल ने
उचकई है । मिथल राल्लोवाल केडा हुबोका हुगार्-बापकी बर-बर बूजे
बर मेळी-मेळी हुयी । बे-ने हया आली बर से एकियो—अरे माई !
क्यों हूने-ने बही-बही मातय-ने उचकई है ? मिथल कबाल बिना—
'कई बठकल्ले माई ' रोड बही मिथल है । हूने-ने चाप बार पल्ल हो
के तू पाडोस-पा-र बरै मल जाया कर पल रोड किसो मल जावे ।
बडे बलिबो बिना देखे-ईं बही । बराने कवे बेडे जने बर-रो बल
केवल-से मल जाई । इसो काम-ईंज क्यों करणो ? मोक्ष कबो-जे तो
सोच हो, बिना भेक-बीजे-सू बोधिबो बमूज-र मर को जावे भी ? जा
तो अछ ठरै-री कर हुबगी । से भी तो पा-रै मलबो-मलेबा-से बैड-र
हुक-मुन-री नाला किया करो हा । पल्ले जे पावसल कवे गया परा तो
काई गुनो करियो ।"

जा रौंड मिमली-री-बराबरी करेगा ? बड़ो भायो साथ पल
करकवायो ! या मिमा जंगलेकी लीं तो सगली वृत्त बिगाड़ी-ई है ।
माझो है रौंड-री आठ घर छोड़-र बार चली जायु ? रौंड-रा पग को
बल नाचू की ?”

“ता माई ! समझा-र बैजा आलीये । छुगई ऊपर हाथ उठावयो
तो महा-पल है ।

या मिमा रौंडिया मिमली-ई ता इयां नै मायै चाल राखी है ।”

(उचक-र) ओह रौंड ! येर पाडासथ-रै घरे आलीका ?

“महा भादयो ! अबे कोई इयै-रा जोबू ई देख है ?”

‘मरज है रौंड-नै । बड़ो कलखो ह । जा रौंड मरसी ता इयै
री मा बीबी जाली ।”

मीच मांव-सू कई जना बाकस जागा—कसाई ई हुप्प ई
पायो है ।

बीजा बाकिया-रौंड-री जाल-नै मायै जही चालकी । इयां-री तो
पूजा उठारी न जायो पड़भ्या कलका उठगी जेह पूजा-ककड़ सी
हुपमी बेह ।

मीच मांगै बच-र पड़िया-बचो बई ! लू बला लोचो-मांघी
काई बल है ?

छुगई सरमांडतो बीमै मचरे घुर-ये बोली-कई कठाल माईकी !
सगला बीजा-ई है । पूचै-मे कपिया धार-र भावा है । अबे म्भारा गैला
बेचन-री कैबू है । मिम ऊगे-रा पईया आलीये । किमी काह मांव-सू
बाज ! हु कैबू हु ये तो कमायो कोबनी इरी पूंजी तो रोह्या
लायुज लाई रंग दी । जाज हु बिबयी धाई-सू बल घर रपो ही ।
इयां नै बेम बड़भ्या के इयां-री-ई बल कर हु । मने जमज दूक ला ।

“हैं निरुद्ध राह । करौ पर-पुरम-सु बल बज्रा सचकारी ।
तेजो उदारो है 'क धा-रें वास-रो ?”

‘आ-रो कोकर है ? आं तो बरी-में बाह दिवो ? भवै तो बर्ष-रो
हैक है की-बल है । अर पैर इसी काई बल बीमड है उके बासा
केवो हो ?

तनै काई पचावधी है ? तू भारै वास-मुन्हे काय । आयो बयो है
राह-रो मर्छ बजर । कलम काई है कोरी सैमप कगाव है ।

मोह मोह-सु दो-बार जया मोह-नै समझावण जगता-ये कलम
क्यों मायो कगावो हो आबुन बा ‘मूरख-नै मतयो सोरो समझा
बनो हारो ।

मातम है मज ई-मज बयो-ई कलम काई बल कोर काई बावै ।
मू है-सु हुक-रै मागै निरुद्ध पवित्रो—हाथ है सम्राज । अर लीबो-ई
बर-रो रसा बिबो

(४)

माया अरै बडो हुको । बरवाकांर आत्म बानुजियां दोला-री
हाकर न्यायन कमी कर्णन बल-बल-में पै-रो मात्रनो बिस्व दिवो
आत्म जगो । बाकक बावसा लो हुपे-ई है, वास-रै हुकम-री लम्बीक
बडी हुती पैकांर मही करण जग आर्य ।

अदिकता-ई बई बीज केवल-री मही करती उनी लकांर अरका
बडो कमठी उनी मार । इली-ई मही बावरी इलपी ला-ई मडो
राह-रा कपडाम मिळण । बावरी कोरी-रो अमान जगवो । पै-री
पुरती बचकार्य तथा कर्मग मित्र मित्र-री रसाद-री मर हाथ नही
मडनै-रै कारण काया-कायकी-नै लाकी कारण जगती । कर्-रो बावो
मात्रो हो लो मावक-री उको पै-ने पुषकारणो बाह करतो अर लोरी-
में पैरलनो ।

जेक दिन मोहन मौको देका'र मा-रै सामने बाण होरी—बायाँ दिन
पर बाँ-ने उबयाम मारै इधै बायें इधै-ने मधुरसे कबो नही भय
देको ? मा इधैबाय-ने काखत समझ'र सुजी-अवसुजी करगी मोहन केर
कनो-को कई उबाव को बिघो नो मा ।

मा बिय'र बोली—कहाँ जम र करसी ? कठै-ई 'कमावण पोहै-ई
बावलो है ?

'मल जाली कलै मकाई-पुराई-रो ज्ञाव हुय जाली । मासु सुमरा
री सेवा करसी । सगळ-सु मेळ कोळ हान्बसी ।"

'माबो का ? उहा'र तो भलाबही कोय बी ? या सम्पत्त परमान
पुत्र कोय बी ?"

'किमे सम्पत्त परमान ? डाकरी-पुराज-री तो कसूर कोय नी
बाकी सानेका सम्पत्त-री तो है । जानै मुगाया मिकला-सु बली भणिबोही
हुवी बी मा ।"

'अ रे तू तो जातिया-मत-रो है । बे पीटिया जोरया-ने मकावै
है । जोरया मयन जाली जमे द्वारा कहीं करमी ?"

'जोरया'र जोरा दोनों-ने मयका जोपीले ।"

तोता-ने तो कमावणो है जोरया-ने बोहो-ई है ?"

"कमावै तो कहीं योग है ? मजमे-स हिरवे-में जानयो हुआवै है ।
देवक-ई है— भणिबोहै-रे चार भाण्यो हुये है ।"

'भोका भायो मत लपा हूँ तो भण्य-ने को मेळ बी ?

तो बाबा ! मत भण्यबीना । पीजा-चिरोण्य कमीहो कावण्य तो
पीजामो कै नही ?

"हूँ, बी पीजयो को जोरया-रो चरम है ।"

“तो घो-ई चोखी तरै म् महरसै-में सीकावै है ।”

‘हेर देखो पति-री ममती सासू-सुसरा-री सेवा मा-बाब-री चाकरी दावरा-नै किया सोमना जे सारी बाना तो बोरया-नै सीका-
बजी बोयीजै ‘क नहीं ?’

‘जै बाना सीकावो तो चस्वरी रो लगभग म् वैखी काम है ।’

‘तो जै बाना महरसै-री पोष्ता-में लिखिबोही होय है ।’

‘बता मै किसी पोखी पको है ? किस महरसै गली ?’

‘वे कैता हा बी जै गहारी य बुराता री बानी गहनै इहां बाना-
री सीका बिना करती ही ?’

‘है ।’

‘तो वे तो इहां-में लपक्यो-ई हैको ही ? करेई मोहाम-ए कने
बडाब-र सींग हैवी ता कोय नी ?’

‘अको ?’

‘हवै बास्वै महरसै मेज्ज-री बकरत है ।’

‘आ मायो मत जा ! देखो जाली म् बाना-में कोतब को है नी ।’

[२]

मोहम री लीजु बेना कमरा दिन्ही-री ‘अवेजिदा अर रिता-
दिनीदनी’ बान काखी । लीजु जाली कपडा सींग-में सुख-में-मिहारे-रो
काम कायल कमीदा कतमी गंजी मोजा कुल्हे-रे काम-में जता
हुयगी । जै दाये-ई बरलो काम-र लूगो-अभी रिचनी बन्धव छेती ।
चोखी-री भांग भांग री किनार-रा बेका बन्धव छेती । मछी-गुवार
बाना-रा कपडा मुण्ड्य सी हैवी । दावरा-रें बोली दीया बन्धव हैवी ।
गछी री गुगला जवै बा-री काह करती अर बा मै लपकनी मपकनी

को हो नी । मा-री यही है खाइकी केयो ही । रात है है सगळ्या
 ने रामायण-री कथा सुनाली । बोला-बोला यह गली । गली-में बोली
 मरमग हुचन छागली ।

[५]

अब दिन हलती भीरवावाळी होकरै—मोहन रै यही है-री मा-ने
 कयो—अब मोहन रा र्वाण कर बबला आबीजै । छोग यही रात
 पयानन जाग गया है ।

मोहन-री मा जबाब दिखो—ये जल्मो । पण -- -- का चुप
 रैबगी । हाथै संकेत समझर कया—हां ! मन हूँ-री बाप रो बराबोही
 मांगन्य बाद है । पण अबै ता मोहन बीम बरमा-रो हुच न्या हुसी ?
 भा कर डाकरे जांगळया माथै हँसत कर'र कया—भी ! हाथ पुरो
 डगलीम-रा-ई को हुचा नी । हो-लीन महीना धरै है । पछै बीमचों
 बरम मागमा । ता जित-ई मयार्ह-रो केटा तो करली बोबीजै र्वाण
 बाच-यै महीना यह कर देता । माहन-री मा बोली—देखी घोरपा-री
 फिर करली बहली ।

हां बावरा-जै-ई मगळा केवै है बोह-री-बोह करली है ।

‘बीम जोखन्य बोबीजै ।’

‘बीम तो जोवादा स्वार है । जान-में बला-इ बाहर है । काज
 काज जी बाहरै बला-रा मांगा दिखो हो ।

‘हां कोई कपळी दिखो ?’

‘मैं कयो—हां-रो मांगो मिर बर । बोरी-रो कोई ? पैट नून-र-ई
 मर जावै । बोही बीमना-नू सका करीबा ॥’

मोहन बीच-में-ई बाज दिखो—ये बोरा तो दादाजी बाज है ।
 कोई मने न गुचे छातर है ।

नहीं देता । जेक अंगरेजी-नी कड़ी भर बीजो साठवीं फिजान-मे मले है सुगन्ध है ।’

‘मा बाराजी ! ये ग्वाली-ई रक्क-में तो पड़े इम है । ई बाने बोली छरे जायू है ।’

‘वेरा ! काकजी कने सुविचा’ है । रावर सीरा देवी ।’

‘इय-में नाका ‘सुविचा’-ने । कोरपा-रै कमर भर रो दुप दुप जाय का । कोरपा, कोरपा-मू बनी पकड़ोड़ी है ।’

‘ये इयै-नी कोई छुप्यो हो, पा-रै जचे बचे-ने दे देवो नी ।

मा ! कोरपा मेक-बकरपा को है नी जको बान्नी जड़े-रै छरे दोर देवा । ई जायू है ना कोरपा-ने । ना-ने इमी भर कड़ै-में नाकमी सिरली है । इकम तो जाय कोरपा-रो-ईम बाकसी रक रक तो न्हे कोरपा-ई दे देवा ।’

‘नहीं केय ! लने बाराज किवा बोहै-ई छरे है । गोपीनाथजी-रै दो वेदा भर जेक मलीजी है ।’

‘काई मले है ?’

‘दो जमा तो चण्डवीं फिजान पास करी है भर जेक बारवी ।’

(सोच-र) ‘हां ! हां !! ठीक है मने जण छिया । कोरा सैया है । एम मा ! कोरपा-रा देवा तो डाया कर रक्को ।’

‘कोरपा-रा देवा कुछ बजायतो हो । इया-ई रोठ-रै रक्ते सुगन्ध भीक्षामी बजाय जाती ।

(जम्हो सोम छे-र) ‘बाहरे समाज ! ग्वाली बोवा देर-र को करो भी मा !

या वेरा ! ‘विप किम्बा दुप जायै । दणै-ई कोग नेरै है ।’

बह-बपा जयेद गीरी बचा बपा न रोहिनी- ?

जब जाया-री खोरया-नै तो बारबो-तेरबों छाता है ।

मोहन मान भा । बाबा-रा ध्याय करना तै हुबग्या ।

[*]

ध्याय हुया-नै धनो बल्लव चीत ग्यो । मायब चीता नै बिदुपी
परीक्षा पास करत ही । खोरयां जातरै गुवा-सू सामरैबाबा-नै मोहन
बिबा । जब करै-इ सारया रै सामरै ही गळो-री सुगाया मोहन-री मा-
मू मिळती हो कती—मगीत्री ! बैरयां बूब पी'र जायी है । हाथ-री
बतर कर सेव्या हुयी है के जान से बाबी-इ को रक्के नी ।

मा-री घाली हरक कर भवेय-सू पूब जावली ।

[८]

बाग-रै भागै-भागै दुनिया-री रंगव-इ बरछनी जाय है । मोहन
ववा बल-री पैसा-रै बयोग-सू जाला जाला 'महिजा मजल बागव
हुब भा ।

अक दिन मोहन बीबिया-बीबियां जायी भर मा नै कथा—मा !
बाबा तो अक अर्थ-री बात देवाह । मा बैरै-रै भागै लाबी-लापी
हुरी । मायब अक भाभा मंदर-रैकने जावयो । मा अर्थ-ने भरीय'र अदीने
कदीने ऐमल छागो । बढिया बाई दिदी से बारा बरबाह 'छी जालि-री
अपसा कर भावब दे रयो ही । हमारों जान-सुगाया बितराम-रा
बाब'र सुभ रवा हा । मायब बढिया लायी आगली कर'र कथा—
देगा मा ! ' भाट माथ-सू पूब म' है ।

मा-री बाब्या हरक कर भवेय-सू गीको हुबगी ।

मिनस्वापणो

कन

१३—डाढापणो

[१]

रमेठ-री बाँव कुकी । सघेर-री नव वन कुकी डी । रात-न बाँव
हैमिस-रै रंगक्यां सगै नमक देकर मौकी आली हो । सगुद बाँव न
हमसत बपली कर सुरस-सु रगद रगद-र दाँत-नै नमकानन बाँवो
पक्षे सिनाम कप-र हो-बार कबान-सु या राम-रा बाँव के-र बीमन बैसे-
हो नै रूपकालै होको पान-र कयो — बापूजी ! बाँव दूसरी ठारीक ।
राम बिराहो ? कबली नहीं पान-र रूपकालै कोकी देर वग सोम्या
हो-ई-में 'बापकी मर्सी-रै आसनी आनाम दी—बापूजी
मिड से हो ।

बापूजी-रो बीमयो हारम हुन लो । कई कात्वा कई नहीं कम
कर मुचलीनयो बोल्वा-कमल बा बैरे कबल नहीतबल-नै बाँव
राम के बाकीजी । होम् उगावणीसां रसो बापियो पच बा-री बाँव-
बास-रो ओठ नु बली बीसवी हो ।

[२]

रमेठ-रो मिड बाँव वसुद-में कात्वा केया करवै पर भी कताओ क
हो की । रै-रै-र कबारे-में आलिया मिनापूरा-री नमक जिवां जेयवठा-र
प्यल बायो मिडतो हो । तबला-रा बपिया मिडता-दा ७), कर देव
दा वृषां रै बैवा । ओ बायो जिवां पूरी हुन ? मिड पाद-वर्ष हुन लो ।
मिड पाँच बली कर रमेठ सीको कर-रो रसो जिवां ।

घरे घाब र केर बिम्बा में दूष ग्या । करै-ना कीई करै । बार कर
र भक बाने छपर बिम्बन ग्याः—

मनमनमाल ओड मम

मेहरी रिम ।
आहमेन पैम ।
बामद व मकीम ।
बद भद बाहदर ।
बहम मावन ।
भदेही मिडापो ।
रिबुट ।
रैकर ।

बागडा मदर्म

अदिचैरिदक हुप क्रुम ।
कोकोनम हुप-ने र ।
गुल-भीवर ।
गिन्दर ही ।
मिन्दर दकरपीद ।
रदकिम ।
आजा बादी नीम
गुले वगाध मेक ।
वड देवद देवा आहक ।

एक-न-बूट-दाग

रिबि न ।

पंच श ।

स्त्रीपर ।

इन्ने-रै बपान आरै-सोचै-री कृष्णवृम्भै-रा बालवृम्भ-रा परवृम्भ । अबै तो संबरजी-री अकल चक्रापी । ममापिबो बैराग्य बाधे भर भागै आप ही दया ऊपर सुग जाची । झटपट लोडन दिवो बर लकनत बाँधन बेट म्यो । चाक भावकां भयैकां र मायै मदरास-नै भावपरो-ई जी की जाँचती हो मो ।

[१]

कमल-रौ मा रसोई सु बिबर र बाबुजी कबै जाल बैठी घर कैच छाती—सररी चमकती है सीरकथा-दयावां बलावली है । सगकां सारु सी-रको कपडो-ई कावणो पवैका । कमल-री बालवा अंक चोली-बोडो भी जालो है । रडैय धिकाई-सु लयुजिबोडो बैठो हो । तड़क'र बोखिबो—बा-रै बा-री-ई पकी है बीयो कोई सरा'र जोयो । म्हातो तो देवाको पीयोय रको है बर बारी करमास जमो-ई बहरी है । कमल-रौ मा सिक्की से का सको मो । भाँकवां भाँच-सुं पाँचु नाकटी बोखी—रो पूर तो म्हे-ई माँगा गला-गाँडा धीरज-बुरत तो बा-रा भर पत्ता । कबै बर-री कल कलाक जमै मूँडो लोड जू मो । परमहमा हुगई-री कल-ई बोडो बहरी । रमेक धिगर बोखिबो—बा-रै रोप-ई बानै बनिबो है । कबै बर-में नाक' बातो लोचन चलिबोडो-ई देखु । रोयो-ई है तो लक दिम मिकी-ई मयै रोप-बोव'र जातो बोडो ।

“पूको पा-रै मूँडै माँच-सु । मकां हूँ इसी पापनी हूँ । इम ठरै-री कल कैसो तो म्हारां बिहरो दूद जाल जा । धे बैका तो बरबो करवा बको कोवनी, पवै बीजां मयै कसूर मयो ।”

‘बया देकां म्हारो काँई कल-बैठ करयो है ?’

‘य कञ्चित् श्रीमन्वा बटाप छापी जका-रै दिता-ई काम बाक मकै है । बे घर गिरस्ती-री काम-री जेक-ई गिनम छापी काय नी ।’

रात-री तीन बजो ताई बेर मांरी कटपट-कटपट करता रहा पत्ते रोन् बट-र मृता ।

मार हुआ रमेरा बडिवा अठ-सूं पला-ई जिता अठ पड़ो हुयी । अटपट कपड़ा पैर-र सेठ मोलीछाछ-रै धड़े गयो । लंबी कवर सी रुपिवा कबार मंगिया । सेठ कचो—जमानत बीसते गिनम-री बसाबुनो पड़ैछा । जबै सो-रा किनै मिछसी । मास-रा मास इस रुपिवा लंबी-रा बैसा पड़ैछा । रमेरा भोजिबो—हु कोई पार हु अको बीजै-री जमानत बचल ? बे आज-ई काम बड़िपो र आज ई भूख रहा । बामिवा-री कोई मीठ !

सेठ कचो हवै में बिगल-नी लो बाल ई बीनबी आ लो बैबार ली बाल है । बेर अबार लो सिबालो कमल सोच र बैबस्य हैम् ।

[७]

रमेरा मोलीछाछ सेठ-री बे सुरोपती-सू बड़ो हुकी हुको । बा-सूं म्हा-सूं जडीनै-जडीनै सूं रुपिवा पैसा-ई बे राबिवा हा । करै लो कोई करै ? सोकल-सोकल बे-ने आप-रै जूमे आपलै गोपल-री धार आपी । सीबो बै-रै करै पूगियो । सगळी रुकीगल कपी । गोपल बड़ो अजब हो । झर-ई पैरी लोख-र ली रुपिवा है बीवा । रमीय-री आंतरवा आसील बैन छापी । बीबी बेर जडीनै-जडीनै-री बाला हुले-रै बाल गोपल मीठास-सूं पूछिपो-यारै मावै किछोक करको है ?

अप्राजब कोई लीनसी-आली लीनसी-रो ।

कोई मावरो-मोमेरो जपना मुक्यो कासिपो हो ?”

नहीं बान्ही माहीनै पचीस-तीस इत्ता रैबै है । इन ठरै साक
भर-में इत्ती रकम भाबै हुन गी ।”

‘यो सार्ध अम्ब-जराय नै राक ।

‘भा किस्स बैबो इबै में किमी जिवस जाखत है ।

मोपन्न किस्स बाचन जागो—रूख परर हुन नुन बौमेड बैसडाल
सुनै बंगाल बैजीडेक हेबर जावक पंपरु फलकत वुट, स्त्रीपा
हैकरचीक रैसमी । कबो बाहरे रमैत । तू पो बडा-बडा मापन दिवा
कर है पडै माती अकक डंभी किवा हुकगी ।”

कीकर ? रमैत नीची नस करैर बोकिची ?

‘बन-करी जिवसां जाखत है । चीक-चीक बोकी जूता ? अेक-सू
कम को भाबैबी ? बीमती ठेका-रै बहक कपूर मिळिबोबी मिरो-नो
ठेक डीक को रैबै बी ? बीर कवा-कवा बैबू ? बीमती हुन-पेसड कर
नुन-रै ककई कौई बीरोग नीस-रै दावज-नो वपवांग डुरो है ? चीक
बार जावत-रा सी दावज जाव भाबै ।”

‘जाग तो चक लखे है पन

“पन कई ना-से तो घर निक्की करयो है । रैकर-री कई अकरत
है ? म्हारै सानो मो तो हु ना-रै जिला रैकर-बेकमिवा-मे पांजी-बै
बीचैर पानी काड वु । घर-में-ई बंड-बैठक जायक हु । बैसकीन-सू
बैरो कई कमकेडा ? म्हीर-में अद बक हुबै तो बान्ही-ई बैरो बिखकन
जाग जम्बै । बाबी सुनरता तो कपती-में बक हुवा-री है । बरवाला
बाल-कपडा-नै लामे कमका हुप साक रोती रैबै वन नै अकक
करक-सू डम्बे को भी । मोची तो बडे हैस रै की मिमन-री भीतत
कमार्ह पात्रै ऐरा-रै मुकालक में पुण्ड हुबै नै रे बीगा-में कबो
डंभी इत्ती है । नै कबो बिबावती करचीके जीमन-री मकक करैर

बास-रै पना करार बापै-ई कबड़ा बापै है ? बोझो काई इसी कज
 एरी कज-रो बांज-ई 'जीवण' है ? इसै-जे मिनलापणो कैवूं कम
 हांडापणो ?”

[५]

मिहक-रै सुबार-री सारी बाणं अक सगै मंझी नहीं हुन जावै
 जिये तई सुबार को हा सके नी ? हुन छरै-री बाणं रमेरा अक बार
 नहीं अनेक बार बोझा-रै मूहै-ई सुन चुक्यो हा पय बोपड़िने घटै
 होर-ई को काली ही नी । पय मावै पर करज मोलीखान्हा सेह-रो
 बेहुरीदो घर-में रोरो सुगई-सूं करपट कर कर-सूं पाई गोपल-री
 मीठी फटकल ओ सारी बाणं सूं रमेरा-रै मन-में गिहानी पैदा हुवगी
 अर करवव बुद्धि आप ठठी ।

बिबि रो बिबाव ई कइं इसो जल्प पवै है के बल्ल-रै सगै मिहक-
 री बिबार घरा-ई बड़क जाव । जाज रो रमेरा कवै ओ रमेरा को रवा
 नी वज हाक तई बै-रै काला में कवै-कइ गोपल-रा ओ जल्प गुंजिया
 करै है रमेरा । इसै-जे मिनलापणो कैवूं कम हांडापणो ।”

१४—सच-वादी

[१]

बड़ीयें तो मीढ़ों हुक्के बड़ीयें उपस्थान किसी हाथ-मू लुट जाय
मोड़न यकी सामो ओयां अर इकबदाय ८ मन-ई मन का कैर उठवा-
ई । साजी हम बगधी ।

यो धम धम बोके उठरियो । पर्यापिचां पर मिथियोहो मज्जा-मयो
पग-रो डोकर-मू अंचो हुन म्यो अर हम अगभाय-मू बे रा लपौर डुकरा-
डुकरा हुम म्यो ।

यो लीक'र वृक उठियो—किमारी ! जे किमारी !' वन किमोरी
हुके लो बोके ।

लीक'रो-ई गली-में गयो । किसी बुझियो—आज बकल-मै मीढ़ो
कर दिया । मिर'र काटै कातो बिर्छै पग बाटै-मू मरीज म्यां । किमोरी
गली-में-ई दीली बोवली जय जवादा बिज'र गयो काहियो—किमोरी !
जे किसोरी ॥

बोरी हुकक'र होइयो कातो पय इगाम-में मिथिया हाप बप्पव
अर लहकोगाय मक हुकी—

‘राज ! कटे बली हो ॥’

“अटे-ई हमारी ॥”

हैको पाइते गली वक म्यो कैके है अटे-ई हो । कही कुपी ।
बरा-यो कैरे बरे बकलो हो ।’

(बूझते-बूझते) ‘कोऊ काटे-रे बरे ।’

‘जो देखा इत कपी बोधी ! (कान पकड़'र) कैर बोखसी हूँ ।’

गल्ली-में ऊबोड़े ओर हाथे मिनन कइकर कयो—वयों हाथर-ने मारे है ? मायन कइलावा हो'र थोड़ियो—काका ! मने कइ ऊपर चडली घनी चड़े कइ-रो कइमे मूँको र बीछा वय । अर छोरी मामी मोय्या काहो ।

[२]

महीने-री दमकी लगील । कइ लइकी गइ-लइ-लइ । छिमारी रो मा हातल-मू ओयो तो धामे मूँको बी लंबीबल्ला कला । शीव'र घनी-ने लइक हो । मायन होऊँ-होऊँ कयो—छिमोरी ने मेव ।

छिमारी भाषी । मायन ने-रें माये ऊपर हाथ फेर'र कयो—अ । बेटी ! पारना लाख'र मूँकी-ने केव इ के काफो घर में कोरनी ।

छिमोरी मुकक-मरक'र बोली—वयों काका ! कइ वयों बोझो ? ये घर में हो नी । हरी-ई में घडोने काफे अर बहीने आ हाता-री अर मोय्या छोरी ने लालन रोहो । छारी बीछी बइली अर बारनो लाल'र मूँकी-ने कयो—ओ काफो केव है काफो घर में कोरनी ।

१५—प्रभु-रो धरम

[१]

गहर में रोऊया ! हिन्दू-मुसलमानों-रो बूँगो काली-काली । 'असल हो-आफर' कैर मुसलमानों ओक हिन्दू-रो दुकान में बाव लगायी बावहो दुकानदार जी कैर नामो कारै 'मारो आफर नै, मारो आफर-नै रा हावो ।

हिन्दूजी ओक मुसलमान रईस-री कोठी-में बाव डी । कोठी-में माकक मरी-ली कोठी में जोकर धक मुठिया-में बावो । कारै मारो तुरक-नै मारो तुरक-नै रो हावो ।

इने हाके-बिबबिब-में एक मुसलमान डोअरो तुकरो-तुकरो बा रवो डी । कारै-सू रीको दुबो—'मारो-मारो । तोषा-तोषा कैर बा ओक घर में जीव कैर बवो ।

[२]

कलैबिया-री थोली घर रै लाली हावो करण बाली—काहा तुरक नै मारै काहो तुरक-नै मारै ।

हिन्दू घर-बाली देवो—अहै कोई कोबनी ।

बीब माँव-सू ओक बाली गरमियो—रवो जीवली माली मिरो डी ।

बीब माँव-सू बीबो बीबियो—इहाँ दुबो नाम-ई बारा-रै मिर्द नै चिरा कियो है ।

ओर-सू कई बला मेर्या-ई पूर उठिया—बर कुरै-में बारी कोबनी पर मेरु-ई बंध बाव ।

१६—पराङ्मुख

[१]

काहु १—उझरो बारी ! जो देखो सामने-सु काहको भाव लो ।

काहु २—यो बारह है भारी ।

काहु ३—बापा हमैई कोपो गल्ही मारयो है । केर कोय कर
सु ।

काहु ४—(बीच-ई में) काह रे खोमनी बली ! बडो बडे
परमात्मा ।

काहु ५—बार-बार हमरा मोखा कोरै-ई मिछै है ।

काहु ६—जो देखो वे भाव रथा है । दुस्तिबास हु कायो ।

काहु ७—(तरवार काह र) मा ! काह बारी सिमोवरी पत
मिराज कीजे ।

काहु ८—उछोछा ! सरबारा-ने वा मरर हो । को-ई दुख दि
काई हुमी ।

काहु ९—सांघी कय है ! काह र बजरी पुराणा बावुय है ।

[२]

“बजरी ! वे चारिने कोये ।

“बदरमी ! दिगमादे बायो वे लायी में ।

रबामको ! हगूने कायो ”

हीरमी ! बागूने रूमी ।”

“रहीने काई दुखम दुय है १”

'पल रस्ते-में बाँ-रो कुल-कपी मिछानो कइ कहें हाथ हुओ ।'
 "रामनिवा एक बासी ।

"बूढ़ी माँ सुन-सुन'र जर बासी ।"

हाथ ! हाँ कुप्ये-रो मास कुबाब कछे परापी भाँत बल ।"

'बाँ-रोतो हुओ क बहों बासाँ-रो तो सरसरैक हीजे-ई है ।'

'तो बरबसा कहीक-ई उड़ीक-में पूरा हु बासी ।'

'घोरे रै कारै कबिबोदे किनी सुनर-सवार जै सारी बाराँ सुओ
 भर बदे-सू किरकर घाँई-भाँई हुन लो ।

[४]

इधर-उधर करतै बासली-में बैराब-रा माया बल रवा हा । सरवार भर
 बहक जेक बासी पही हो । कारै-रै कारैबाको सारी सुनर-सवार बदे
 राक जगनाँ बबपूत बलिवा जेमे हो ।

काफ़ी रा उँठ कक जेक कर र कबै सु बीसर रवा हा । कारै सु
 बग बाबिवा बल बास रवा हा ।

बबपूत-जै बैक'र बाँ-रो माँओ उयकिनी कई बला बोझ'र
 बोझा—जै बबपूत हो बायबा सरवार हीसै है । सारा बला बैक मिदिवा
 भर पचाँ-में मायो हेकिओ । एक जमे हिममत क'र रुकिनी—ओ कहीं
 किओ सरबरा ? बबपूत'री बाजी-में सरवार बोझिवा—बरजी
 साबसिबै-री ।

तो जे-ई बाँ रै बरबा-में रै'र बलम सुधारसा ।" जा जै र सारा
 बलाँ बासली-में जापरा माया बास किवा ।

हिम्मा-रै हकडे मूँबारै में भी मैक बाबली-री बिछल मूरतो घामै
 मूँओ ककराबोही बबपूत'रो हाँओ बाँसू बाजनी भास-रै पचाँ-रो
 पराबोत कर रही भी ।

१७-सुरेश

सुरेश सेठिया कायबी में बचपो एक छुरसी सिरकाई'र जाय जमियो ।

अक अक कर'र गिराक जायय जागा । अक 'पीपर्स सोप -मा'वी

तो भीजे 'अरजिनसब-रा बैत्रीदेवछ देवर जायय मागिया । जोड़े दो

'हैर अर बीपै रैकर अर दो 'नकटावां मांगो ।

सुरेश-रै मन-कपी बचय में डक-री कटाव अर अर्वा-री मा जेक जेक
कर'र हाकिमो । सिगोर है बूँदे-रो बायक बजावतै थकै सागरी-रै
सम्मो जोवा । चार भाकनां हुई जायस में 'अब रामजी-रो को ।

देखियो तो भागै से 'पबांठिया 'लीमिया बायूवा । जो डैरयो

'पबामियो हन बासतै बै-रो बै'रो पूछ गयो । अ'र सेवखई में आंयो

मूँको कर'र पूछो कानतै-कमल मीमो खिलय जागो—

१—पीपर्स सोप

४—हो

२—हुकै बंमाळ तेक

५—रैकर

३—हैजकीन बीम

६—नकटावां

जोड़ ही तो २२ हुआ । बूँदे-रो बायक बजावतै थकै मनमन में-ई
कयो—पैर कुछी पयवा ना ।

तांगो आवां सामल करीजियो । कायबी रै गुमस्ती होकैसीक
सुरेश-रै काय-म कयो—आकै बिछ ही केमें वा कराय दो ? बिचै
दको-में जबाब दियो—घमकी पड़खी छारीक का समझै । तांगा दुरियो ।

सुरेश रा अमरा-ही बोक बिचै-रै अर्वा-में रै-रै'र गूझ जागा—
घमकी पड़खी छारीक को समझै ।' माथे में बिचूक ही बीजकी जेक
दकाले मारियो अर कवयना-रा किबाइ लाक दिया । बिचै देखियो
बेसिपर दिवला-रो । अ के'र बिचै-री जानी जाय रयो है । अक काभी

बरहै-में ऊधोवा धर्म-द्वारा अर साध-वाग-रो हुकमद्वारा निर्देश
कामी सैन कर रहा है । सुरेय-में अक छोटी बातों को भी
भीर लुकायी ।

कल्पवा केर विचैरी आँखों-में सुस्ती-री सझावो देरी । जिसे देखिबे
बैठक माँवकी खिलमीली-री लसलीर सजीव होव'र आँसु गाल रही है ।
मोहै आँखरे झीरा बिजावोवो आँर डाल में बलीतो मिथोवी डाल
हँसती कुखिलमी अडीवै बडीवै काव कमाव रही है । सुरेय-में कौनो
बात प्यो । अर सली-वी मीठ खुली । हँसै-भी में वो वनिद्वारा
कबो—उठसियेगा वागु साहब [मकाम आ गहर ।

१८-अध्याय

[१]

बडीयै करये बरियै-री रजिस्दरो हुषी बडीयै सगाभी पकी हुषी ।
जल बचल छानी । सगळै कर'र १२ जण्यै-री मंडली बनी जहै तें
जोझाबी जर नार्है वालधी ।

अक छारै सै मांयवै-यें हकचल मचगी । दोळी दोळ बजादल
जानी । तुगावां मेमळ राग बुघेरो । नू नू अक बाजियो । भेक छीज
बराती-री जोगी-जै मा पोही में छ'र केरा तुबादल हुषी ।

[२]

राम कसियो । छामै में बाइछ-रो अक नूनो मी किसो हीन जावै ।
अक-हुसमो । कपडी गांन-बाळ्य मज्जु दुरिवा । गाम्ही-रा मा-बाप हें
दिकने का कटै गवा जिछे-रा बावा को बाबुदियामो । बापल जोडी छारी
माभीता-री हर कर'र रोचल हुके जर सुमरो बिये-जै गोही में केर
बार रमाबल छे जावै । तुबादलम्य छारी समी जांगळी कर जेवै—
धा जोरी बाबैजी-रै केरे रो बहू है मखा । मागे माता-हैं ही-ही हुसे ।

[३]

सीबुछ-रो रौठलो राबरिवा सदस्य जागा । राम्ही-मी बापडो
मीबुछ-री भेद चर ग्या । बाबजी माथै-में लकीरो छिया । चर-रो आग्र
हुवगी, देवकी हुवगी । बाबही छारी गावजो रांड हुवगी । चर मयाल
रारै हीनल जागा ।

बद गईं सुद जलई । पूरो लोक गुग बीज म्यो । सोमरी-रो सार-
नी सरग-रो रम्यो बिचो । काखी मुसरो भर बर, दोष जीव दबिवा ।
मुसरो लोक प.लो-री पौ में ७) दबिवा मर्तने-रा बाने न्ये-से
कहो मझे बाखो कई ।

गोमती बहाली में पग चरिणी । कुदरी इसी जामि चरै मंगल-
चौराह काही हुआ । ब्रेक रिज काक-में धार-रो तब बैचर
झार-मी खरद हुआ गी । पन कम सर में बलियासी गहर जो ।
सोचन कापी—इसै कम-रो मेर छित-रै बैजूका । जाका-में
चोसता कुद ला ।

[4]

धर म मित्रक सुगाथा-ही भीह । कोई नैह तो कोई बान्धव-नै
हृदयक हो कयै । बाबाजी हयक जानै ।

सेहजी-री सुनीस हाकम बार हासावर-नै भाग लेब ॥ बाब
बमकिपो । बाबैजी-ई काज क^अ मोर-सू बैयो—म्हारे कपिलो-रो
मिन्को ॥ १ बाबैजी बाब लोका^अर लोक बार बहु बार बीजी बार
मीव नामो बोयो । सुकीक जलो बय^अर बाबैजी-रो जगुको कागद
द्वार बैबाय बिपो ।

बाकी लीखी—मैं हीन वाली मांमित्री । गोमती गंगाप्रह—रो गुदको
दिखी । सन्ध्या-में बोल्य रहन जाती सर करीर उठो बहू लो । गोमती
हक-हक हुए गी । पार्श्वोत्पन्न हवन ने माँच-म अठार र आंगन में
हमारियो ।

गायत्री सैवमैव दुर्वाशी कथी । सामरै जर पीर शोन् नानी घोर
जंघारी । जंक चीन बीकडी जर सैने कोरी जाल गयो ।

१६ पत्र

[१]

मिया माथे पैसा। अऊ अणान रै-रै र डही तामां मरै हा। बीच बीच में हा-अऊ होवा पाणो रा बै-री आंकवां मांय मूं हातर जमी माथे पड़े हा। बै-रै गोकुल कमळो मूँ हें माथे काळ चोळें काळें अर पीछें बाण ही लुवां अणाम-री उधळ पुचळ ५ विरलण बलाय ही। बै अऊ बभ नि मढाव अर कणन-अरी आंकवां मूं मामनै-री इरी मरी जमी मामो लोवा अर कदकदामो-नही। कदे-ई नही। बैर अडक र उडग। तादुन लला। डिर्वाकची आवी। कद कहे सोचर पावा पैठ ग्या।

[२]

कहे दिनां री मूली-हारी मा अऊ कमकुदें आंकवां मील्या रही हो। मूं-मूं करनी पवन काथे ही। हा-नीन हावर हाही त्रिमो कहे चीत्र गार बैर-री वळण पुसायल-री कोमीम करे हा। अचामयक अऊ बापद झरही मारी अर बांरी-र हाय ही राही ये र वा जाव वो जाव। र्वांरी वृको। अणान रा चान हू वा। अर आत्रेव आवा। र्वांरी-नी मुचकारी गारो बैर मांय मूं बिठावो। रानो-रांनी मूली र्वांरी पाही मळ में तापगो र्वांरी ना गुरका हुवी ५५ अणान-वा ५-५ रावण बाग। आनम गिळालो दुई। रोम अचो। र्वांन कोमर बाण्य—
किम ही त्यान। किम-री त्यान हू हुना कळ हू। आत्र मगळा रात्रा हरेन धन-मे बरा मीजा माथे हे अर हू आनम त्यान अरचना दिव हू। इशारा वृक्ष तिया टावतिवा आत्र अऊ हूड रोरो मे माथे हे। देम। देम। वचन-वचन। वचन-वचन। आनि। आनि। वचन-वचन। आत्र कोरे मे अऊ हू हे रावण र किम अऊ उतारे वाचन-वचन। देम

[illegible]

ਭੋਟੀ-ਜੈ ਸਾ-ਪੀ ਗੋਈ-ਜੈ ਚੇ-ਰ ਚੇ-ਭ੍ਰਿ ਮਿਥਾ ਸਾਜੈ ਪੁਰੀ ਕਾਜ ਰਹੀ
ਧਰ ਫੇਕਾਜ-ਮਹਾਸਾਜੀ ਚੇ-ਰ ਕਾਜਾਫ਼ ਭਿਕਾਜ ਕਾਜੀ ।

[2]

दिल्ली नगरी-ई साक-तो आस काई कथो । बर-बर परिषां बर
बहलसाक बां बांवासी है । चाक कापी बासा बासी है । लैबाई-ई
सुर-सू दिसावां मूखे है । गोरी सिंहास माले सखे मूखे आस दिल्ली सख
रणी है । साता लीम आस आलख-रा दिसावां केर रवा है । जे आलख
है समन्दर-में जेक जलो, जाली जेक जलो हूँ, हुली है । जेई मूख-तो
हंग जेकी पक्यो है । जो कीं किसे है बर जिलर बाप है । सोखे है
केर किसे है । किसे है जेक जिल-जंजीरुलो दवा-रो दुपखो माल
धर है जिसो सावर-मंतर । ई जिहाजुड माले ई सो सगळे दसमदर है ।

[•]

भोटी कामरु काय अचानक-रै हाथ-सें दियो । अहम शायो—

वाताहं ओ पञ्चाहं पोषीं शुभं इत्यादि ।

मिहिर विजयम दिप्य माहः कर्णे कलमप-राज्य इत्यु ॥

‘परक’ मूला बाप के परक निम लग करे ।

१) मैं किन्ना बोलूँ ? इन्हीं दो महीनों का यह इकट्ठा

जो प्रताप भाप-रै मूँह-सूँ जहवार ने 'बादशाह' के'ह गजबगई सो रामो क्यबप-रा बेरो सूरज भावूष विमा में करी ।

२० वीर कुसळोजी

[१]

गढ़-रै बार-बार कुसमर्जी-री चौक-रो बेरो हो । गढ़ दुधमर्जी-रै
हथ-में बाण है बाजो हो । सरदार-सामन्ती मर्क-सू मोक्ष्य बज
गमीम-सू बाण मिळिबा हा । महाराजा बारभरसिंहजी साम्ने
बाकरी सारी गढ़-में बिरबोहा बैठा हा । रसद निचट रही हो । हम
करी राक्षस बड़ो बाको आहिवा उड़ोह रही हो कै कद बाण जामै कर
कद हूँ पीकाले-री ल्हाबीवठा-में गळनाउ कक ।

[२]

बेक—भार्य ! कोई कुछी ?

बीबो—कुछी कोई ? सरसा र मारभा ।

टीबो—कुछम-में उड़ीया हा । वही जे-ई बोका'र जे-ई मैदाव ।

बीबो—आतां फिछाव तो जग्य हा ? मर्ग-रै आवै ।

बाचवो—(पीच-में-ई) जारे कावर ! मरमे-सू इरै है ?

कदो—जडे तो कलकल मावै बांच रहिबो है खून-हरामी को
होवां बी ।

साचवो—बीबो! बनिवा-रै फुल-री कपी-ई को आगम
हैवां बी ।

जाडवो—जे-री मा सूंड कापी है जको बनिवा-रै सामो बोव जे
बाचवां को काडवां बी ?

बबो—जहाँ-रै जहाँ तो मा माझी जे क्यू गढ़-में कोई जीतो ई
वद जाय नी ।

बम्बो—बन हो । सुना तो ! आपणा भूकरके-रा सरदार बुसळांजी
तो को भावा नी ? बोली बा-नै-ई जदक तो पूगाणी ओभीजै ।

हम्पारबो—कटे बैठा कोई करे ई ? कटे तो सिर पर भाव
वणी है ।

बाबो—आरे तो पैरो ई जहाँ तो फिवां जाया ?

तेरबो—कच कछे ? इहाँ । ओ देखो, ओ चाल्यो ।

[३]

डाकर सादी मक्का-म् नैडा अक बछरही री इरिचोही रांग-रै
वारी बांध रया हा । जालबवाळै मुचवै-म् डाकरा-रै सामो ऐलिचो जर
अहे-अक-म् बीडा र मारी हकीगत कवी । डाकर आलेबाळ -रै सामो
जाया ।

[४]

कई हाँदा नै पैर छाप रया हा । कई पूरा री बसाळां बजाय
रया हा । बीडा मसाळा-रै पैर चुपड़ रया हा । गांव-में बाळमेळ-नी
झग रवी ही । रात बघता-बघता बा-रो काम पूरो हुचो । हाँदा-नै
बकमर ऊभावा । बा-रै सीगां माले अगली मयाळां बांध र बा-नै दोर
दिवा । आरे-आरे बुसळांजी जर बा-रा मंगळी बाळ रया हा ।

[५]

दोळी-रा दिन हा । जावपुर-री चौख-रा मिवाही बीरंत-म् बदा
'दा-दा-ची-को कर रया हा । कई मस्त दार हागाजिया कार रया हा ।
कई हाळी मंगळापुन-री रवारी कर रया हा । इरी-ई में ता ओर-नी

हाथो मुनीसियों । सगछा-रा काम रुका हुआ । मोहनी बणो
ममला ना है कामी आली हीसी । गनीम सोचिये—ये रहा
समाजकी है बड़े नीच तो कुल जाने किसीक हुए का ! ग्य-ग्य
चामके बड़े आलो गथा क्षेत्र में मगलक मचल आली । इरी ई-में
अब सुन्दर-सदाग ऐसी-सु आलो हीसियों अब कलकल मुनीनी-ईरा
कालीरा काका ! पायो-ई !

[९]

सूर-रो सामान बेच-बेच-रे जोध कुमलौ की-ने सावासी दे रहा ही ।
पय हुसलोनी आके काली कसा राग-रै पक्षी-त पक्ष-री रानी सचकल
रहा हा । मोह-अर मोह-रै मेक-सु ना-रै हिर-ई-में विजोको उठियो
आली बरस बड़ी अर मुँह मोच-सु ने कल निकलिया ल-रै नीचा
बीकलै अर अद-ई मोच आली अब सुरज सरजल कोब-र निपकम
में कागसी ।

कुलको रुई कोर-ने निकलो किम बोकाव ?
नहा कल व पाकड़े निपकम उगे जाल ॥

२१-जय जगलधर घाटसाहू

[१]

धोमी-धोमी-हवा मही-री छहरां साँ रम रही-ही । रंमरु तर-तरै
री रागवली गान्ध रवा हा । घाट माथे दैडी मंजली मल्ल हो र गुलधर
घाट रही-ही । मगझा-रै चरां माथे कमल भर दिरहै-मे उभंग-री-तरंग
बड रही ही ।

अछाधेक मैद-गरजवा दुई अक मारी गळै-रा अगधवी मरिचोहा
मवदु का-नी में वरिषा-गाछिओ । हा छहर बास । मारा रा-मारा
भासकिवा छर घडीमे बडीम देउल सागा । दुई-दू में तो अक छंभ
घरग काछी कंजक बनिवाहा । रगीमछां धीवरी बागनी मूरठी भाव
धमकी । हवा रबी उ धोमी-धोमी बासल छागी । दंगरमां-रा सुर
बनुरा भर डीला दा र ५ व हुक्या । काहँ वनर मिनर र भावरै
मवदां-री चट-मू गगळी मे जगा र का ममहरमी मू नी अचारै में
साहँ माहँ हुकगो ।

[२]

कमछा-मे बास माग्या । काछा-मे य बाव बागनी भर छीर-रै
गज-जुध-म घाट चुगी । जगदी मावमे मारीक बाव धीरै-री मयार्ह
दिनर र मगळी जागा जगदी कदकवा-र मागे मगळ रवा-मो अडे
मग हाव बरिषा । मगज-मो भावाउ दुधी भर जैजली मार-रा
काछा मरिचो । मिद-गरजवा दुधी-वरिषा काछ । वरिषा टाउ ।

[३]

काद-रा बागरी बरिषावी मरिचोवाहा । बाव दिवक रो बहल मं

हजर काँरे रुकी । भागै होणवाळै परिनाम-र हर-सु बादर-ता ह्य
 पाछा पक्ष जग्या । समहर-में जहार मायो जर बान बपमा हज्ज
 जागी । करै केषुमिबै-री जोय में सगळी-री जाँक्याँ जग्यो । एन पै
 जोजम-मरिवै मार-नै कुन मायै पैळी ?

परमजमा-नै पठ राखनी हो । भाकर चऊ-रै हिरवै-में जोग-मत्ता
 जर बिजमीलाखजी-यो परचो कुचो जर जय्य-नै हज-री काँ लम्बा-पै
 डा पकी—इन्कुरजी-री दबा जर भाव सिरदाता-री मरठ-सु जो मर है
 बठाव-नै त्पाव हूँ ।

भाकर-री छेर जीर-सु बह जाणी । घूह-रो तलस बनिरो । साय
 सिरदार मिसलसर कया हुआ । सुजरो हुआ । लखाता लकी । कुवाँ-
 री करनी जोय सु माही नायाँ-रा दुफ्फा-दुफ्फा उठ्या । हचै-ह-में
 वो हिम्बायै-री पठ राखखहार-री की । जंगलहर बाइराह महाराज
 करखसिह-री की । रै लम्बा-सु जाकत भूँय बनिचो ।

२२-जाज हूयी

[१]

चन्दूबाल हाभीरुस री दसवीं किछाम में पड रयो है । बाप पोव बरसा-री छर ५ बोहर परकोक सिचम गयो हो । मा छाम्म बहिवा-पाव बट'र पयो दोरो वैनै हूयो वयो कियो । आत्र वै सतरवो माछ पुरो बट'र लठारवै में पग बरियो है ।

चन्दूबाब-रै हा काका हा पण बा-रै-रै छाल-बाल्दी ही । बेरी मा-री मरत करम ओगो काई का हा गो । सोनू प । में वो अक भी तु/क-रो हाठन घर-री मात्र बर-री टेपुकी हा ।

वो मा-नै वो हीमव बंवावठा-ई हो के अक बरस देखै हू माफरी छाग बाऊआ वसै धो-नै कयो पाव-बही-सु मायो कगावना वदेखा । पण बाप-रै दोपा काका-रो-भी जी जमाव बूवा हा के कयो मीदावो हो हू जमाव छागानी वै आता रै रोरी हा सोमा मायोवी । दोरो सैवो-मण अर गुबकतो मावण जिया हो ।

मा रै लवै कई म्पा-बुवा हा जिन्को दारी-रै भीमर बाप रै किरिवा-करम अर चन्दू-री जिन्को-में केण छाग बुको हा । लव वयो हो बच्-बारावण-री दह जिन्को मू म्पाव-महूी करो वो दुकड़ी गयो । चन्दू-रै मजालेबुछा-रो भी गढा दारो-मारा गुबकतो हा । दूदे में बदे-भी मू तापे-रै पड़मै-रो-भी सापरो को गोभी ।

चन्दू रै घर-रै लव अक बाछ-समा ही । लव-नै वो बदे परव जाला पाा कावण यणी केका घर में म्पा-वा-भी कीक को दुगा होनी । बवाही-री वा वा दाता-रो गरम बट'र वा मांग-मांग र के भागो । गामा-वा ओ हाछ हो के अक काही रै बाछ अर घाली के महीमा वई

ब्रह्मण्ये वेदोः । एवम सङ्ग्राह्यो ह्यसौ हो ये कर्तुं ओ मैत्रा गिन्तो को हो-मणो हो नी । सदा चोक्तैर चोचो-य बीजा-वन्द्य राज्ञो । मरुतै-सु परै भावतै-की पक्षिणो पैर चोचो रै परवर्षा भाक्तैर चोक्तै-ये उपकारे होयो-ये एतरी कपल दंग देणो ।

गङ्गी में साँदा-सलां री चट्टु बैया राज्ञे रघुर्न ह्यत्र रघुतो । कई-रो मोक्षयो काम कर रेंवतो । रुई-केरै-रै कर में पायो गङ्गी हुणो तो चट्टु-मी बळ-सु बड़ो भर पाँता । कळी-रै चौबूटै-सु रौडर साय काय रेंवतो । सागळी-रै मूँडै जामानो हो कर जाँल-में पाखियो की का रचकतो हो नी ।

चट्टु-री मा-री बाबैर बैया ही कै चट्टु बैयो परबोचै । एव बोरी हुण्टी कां होवी गलोच-ने कृम देवै । मित्र मित्र बरि-भरि दिवन्त्या-रै हाव जगपुटै-जगन्तै बैजव अत्र कामा पायो हुणी ।

चट्टु प्याच-री चरचासु माँच-की-माँच हुणी होच जाँवतो । वा लोचयो हुचै-की कर-री का दमा है जळ जीव वचन-सु पैर करचो वच-की-ली । कई सु बैजा-कपका जाली । कई-सु भाईरै-बाला चीमली जमा कत में वो जेक दामरियो है दिवा जळोचो बडालै कर हो । एव रकम-रो भ्यात्र की वो जालसी । कई-सु बैसल । हुँ संमसु वो हळ हो परल्ल-नै । हचै करजै-रो कोर चिलोत्र जाली ।

मा-र सामनै कई-की चट्टु कई-रैई बाना करतो जव वा मैत्री-बेडा ! होमल राजो डाकुनयो सागळी ठीक करली—'जिन्न कर बाळ्य जव कर करिच-ना बैवाळ्य ।

[२]

जिम्हू रै कर में भूषाजी सिमिबोही ही । जाई कई-जई-जई करतो हो । जमा-सु सजळ जीवयां हुणची जापी । सेडी-रै केरै-रो प्याच हो । हुण्टी जीवयां परयो राजदे-में मरुणो पक्षियो ॥ पूर्व रुई-में बैसवा पाँवो ।

सेही हुगाया कौ मिसरी भर कुल-कायक बढाया ।
 पण धनका विगडती यही । जो-रा बुझाविया असपताक बाढा । डडे
 पतीश-री सुपार्थ कई ही । दोष-खिया बिना कुल बरवा करता हो ।
 के-ने हाथ बिना दण हो । अम्यताक भाषा पैका मामूली दया पाखर
 रकाव दिवो-पक्षे धनी वरत्र भर हाम्राजीही करी कइ मरती हावज-रो
 क्यो । किसरु रै जाक्यां यानी अडचन-रो बिचर मडग्यो । कुल कल भर
 बसी । कुल रोटी दगायो । कड-सुं चो-चोपदर दूध बाम् ।
 पतिश दूखता-ने महीनो-माव हुवावा सेठ ही काम काह र अघर
 रे दिया घर में कुलको भी कोवनी बापकी छोरी कमनूही पाटा
 सुग 'र बाव' कई बाखीर कई बैका छोरी-सु कावज-सु काँध
 ताबै जसी कहे सुदिवा सुचरती जायी । गोपै कैयो हो हुं
 हावदर-ने के-सुन र जरस्ताक-सु-जीम रोटी घर दूध रा मुदन
 में बदावरन कलाय "सु । कावज छोरो धीम-चार बार भिरी पण
 गोयो किमा बाव 'र मू डो-ओ इलाक काव । सुपारक बमिया किरै
 है जर बल री मयन-जी काथनी । बीमा कोई सैंबो कोयनो । के मै
 हाथ मिता दण ।

ने बावुव कर को क अरनाक-रो ओपल जाय कोवनी । पा-री
 दवा काह को करो नी । जाक्यां में बडीवा मलय सम्रा । ये-उहे
 पूतक जाल पण मयत कोई नहीं करै । बिगा-ओ नही के रल-चिरल
 ता ममक हो छेपै । छोरी कावज दानु छोरी दुबनो । किसरु री माम
 री कैरो कई-कई जाव जावतो । पण किसरु रै मुन-री मार्ग कुल
 पना दूध जावतो । देरा दावर-दूधर मयक मयवता जर बैबे भिबर
 मुनीनो कोवनी । टखरी बै दुपारो-मिरावक-जी मोवीमनो अहीबे बर
 में भू दरा निदयो करता हा ।

गळी-में मित्र-बैठ जर मयन-पूतक कलिया मोक्या हा । नीना-रो
 पण होवतो । जालमा बरमाजमा अक है री बरवा पावती । रामायण

बाँधीबन्धी । समयक पूरक आँखों का पल झुलझुली बहाव'र हरकत । रात
 रा आँधीझात हुआहा हा । परन्तु दुःख में पड़ने की चेष्टा होती-ओ को
 हीनो । काँची सूँझै-री जपाऊपी ही ।

किम्बू बर्बा-भी मैरु-ओ-रै परसाव सुखिओ माँह्रिवाओ-रै
 आका मेडिवा डाकोसिने कतै गिरै-गोचर देखावा नर ब्रह्मोवाओ-रै
 दाम किओ पल आँखों-रा पट मिळ-ओ गवा । कबै काँई मीठा रंझेक
 मिता हुबन्तो । पीरै पीरै ककड़ी-रै सावरै किरण-दुराव अगो ।

कतै ठो अकल-रा बोज भी नहीं । बड़ीबै छोरी परमात्मन सभै
 हुबगी । कई सुकड़े-सू अर कई बपनिचा-सू अर-दुराव करै ।

कसमूही-री साआम्बाँ सँ परबीबम्बाँ । कानिचाँ पेको हुबै कबै
 के-बै कबै 'बातो बाप उमै कइ परमात्मी के कसमूही । अने तू छोरी
 थोड़ै-ओ है । देख ! जूमी तू । कसो गाव म्हा-सू ठो बार
 आँसव बीबी है ।

कोई बचराओ-सू किम्बू-मै छोरी-बै परमात्मन से हमारो करतो
 ठो कोरै कइ पापरा ओ बाप सिरकाव देवता के चोरी थोड़-री-थोड़
 हुबगी कबै किताक दिन तू आरी राखमी ।

बंदू-री मा-मै लड़क अगो । बै माँगा-ताँगा करवा सद किया ।
 किम्बू-री मा-मै-री केरी-री गार कवी । किम्बू भी चारै-री शोभा
 सुनी । अत मिना-भी सगा मित्रणै-सू कुओ जी-मै अवी ।
 बडोमै-बडोमै-री निठ-री कैव-सुखी-सू आकर अक चपरी दिन
 होकारो भर सिचो ।

बन्दू-री मा-रै अगै दारन रा बार नहीं । बडोमै किम्बू-री भी
 बिना हूँ कमती दुधी ।

एक दू दू बाराँ ही जूवाओ मेडो दोष'र दोनू सगा-मै सरमै-मै
 जिन-जा बरकत के-सक कर दिया ।

झिम्नू-रै गानेजी-रै सीठा-रै घर में पोते-री बचायी हुआ। झिम्नू
रै मामे-री बेटी-रो दूठे जाण्यो-जाण्यो हो। वै यौको देव-र सठ
मेदाजीजी-रै झिम्नू-री हकीगत कही कही—जोसबाळ घोपळ बात्रे
है; बोरी-रा हाथ पीळा करबाळ हो तो झिम्ना दाम-रो कळ मिळसी;
झिम्नू बापकी भांजा है। सठ मळा हा जर गरीबा-री बास्ता जी-में
भोकी जाया हो। ज्वांर रै मातो-मातो झिम्नू-रै रोटी-गाली-रो जुपाव
भी सदा-री बास्ता कर दिवो।

इस ठरै झिम्नू रो काम तो पार क यवो। चन्दू-री मा जमे
दापरो हो जिहो अडाल गल र व्यापू-री जुगत बैठापी।

ज्वांजीर-रा सादा। ज्वांम-रू-जी बीत-ले माभदामृत बाप।
जोत-जी गोखै गही। रंग-में मंग होखल जातो। चन्दू बरा-में इरम
जर जिला। मातो-मातो बचन-मिळळल जागी। चन्दू-री गळी गुहाडवाळा
जळ पग ठमा भूमा। कने भी कोर्बा। पदु जालो तो कहे-को काई हागदर।
बीड-जै वरिचल विदेम गराज होखल जागी। पारा सैन्य हो
माल माल सगळा-र मापने कब हीको मने खबर मत बरप हो। म्हा-रै
जी-मू हागकी छाव रवो है। पल पने चदिपोर। बोव दूठे कांकर
बरीमे चन्दू-री मा ही जाण-र केरा के कांकर-जी केरा भुप-र देव।
हागदरा-री मुप्यो गरम होयल जापी।

लीज-रा पाचळ क सोचो। हागदर हुनजैसम रीजा मरु दिवा।
बापी केली हुआ। मूरज पैळ बैठल जातो। हागदर केर हुनजैसम
दिवा चन्दू बा-जिबी—हागरो भी लीजरीज रवो है, माग मिळळ जापी
कने केरा मत गुप्या बापकी पुरी-रा भागदर जोन रे' जो हुरे है।

मा कबो—सुनको रे । चंदू रोवर कबो—को जी हूँ रे ।
 केरा मय सुनको रे ॥ पय सुनको कुन हो । हो अर्थ सावरो रवर
 नूमो दिवो । वरनाम-री विधि बेगी-बेगी होवक कामी । चंदू-री
 हाथ पकड़ र बीगाथ सककय मरयो । पाछो-को बे-बै गोरी-में मुदावर
 सुनको दिवो । हाथवर को हुनबैसल हीको मर परै मयो । चंदू रात न
 पकड़को मर बोझको—कोरे बा कर को रे । कोरे कोरी-रा मय हूँ—
 र कोर... .. जी मय रे ।

हाथवर के चिह्न विनयक कामी । मय हूँ मयो । बाह हाथ कामी
 मयी । हाथका कोर पाछम कामी । हाथवर-बैद हाथ चककय दिवा ।
 सगळ हुक विठ । मर अवरवर-में हूँ मया । मा अर्थ होर पयगो ।
 मय कारो । हुंसा मुह मया मर-री मय हुकमी देवकी हूँ मी । मर-में
 चककय मयगो ॥ मारै बैद में मय कुटगी ॥

[५]

हैर में उहको कुनगी । हो मया मेवा दुर्ग मरै बा मेक-जीव
 मय । मेक मियी ठरै मय मयकी मेक गोविंद हुकी होर ।
 बोझको—मयकी कोरी कम्मीकर हुकमी । मयमेव-री मय कामी ।
 मय कामी मर मयमे-वीरै मय मय-में मयको ।

गोपळ पृथिवी—कोरी-री मया मयका है ?

“मियारै मय-री ।”

मयकी-मै मय-मेव-री मय कामी, मियै मय-री मया मयको ।”

“कोरै ठो मय-मय कबो मयकी के केरा मय मय ।

“हो मया मय-मय-मी मय केरा मय दिवा । कोरी-री मयका
 को हो मी मय मय मय-मय ।”

“मियारै मय-री मय-मी मय-मी ।”

से कर-भी रहा हा हूँ मैं-भी तो मरुन जाप'र कबो—कब रातभर
को सोवू देखा-भी पूरा म्हा कर करवाली-ने समझाव भावा के
देहक-पोछिबो राखो । भा जी कबी के बीजा दवाव करन-री बात
अधरम है । इसी बात करोका तो म्हाय-आय-सु जायोका बता ।

हां रामकृष्णजी-री बात मान ली क्या ?

‘क्या करता जायका तरीक ?’

‘रामकृष्णजी आपा धया-भी करम-ली बडा । हुमरा हविषा पद
राखी-ने बाप-सु बंधो कर'र खाल र गिरिया घर दकल भी हो लीवी ।

‘हूँ तो केवू हूँ आपा-ने हलकी कोबोई कर को । जगान्मो
कोबी-ने ?’

‘अब हाको लखा-भी कु हूँ मदरक को रेवा बी ।’

‘माईजी ! बोरी-को जमाग बिगड़ जायका क्या ?’

‘तो हाकुमजी-ने भागै बीसी-को मोर बाको है क्या ?’

‘हा कोई परलोकिवादी-जी परलोके है क्या ? जाम हूँ को
जाय बी ?’

‘जानै करम-भी रंग नू ल-री तो हा-भी कोववी परमा कर भूने
बाली-सु बाल्या दिरो हो ।’

‘तो ये कताव दिवा विद्वत्-विवा ? हूँ भी देगू का ?’

‘अरे ! जहरी-ने गाळी दणकै-ने हो भी बाव खापो है । बाही के कबी
ही क्या हैमिनी है ! जरे बाहे कान्हा-री जामा माया परिपोदा है क्या ?’

‘हाहा हाकी कपो म्हा हो ? हूँ है मिली भी बाना ।’

‘बाल हा है के भवे मीधो बूझ भा ।’

मोह भद्र मोह कर गिरागी ।

२५—श्रेक-में श्रनेक

[१]

कमलानो चार जिहें मी जे में रैनो दा बा जखे मालवा-ओ दा ।
 भुवन-र दल-नू दिवादा ज्वावने दिवरे रै अमुराग-री छळाभी
 अगल रै दामवा-नू जे-री अज्जहकवा-में जडक उठनी जल बे मी छे-री
 गीनि बचतापर-आकमणो रै गदक अर अगल रै मंकर-सीवन बांध-रै
 रामा अरिबै अचारक ॥ गामे अंग दूबा करनी हो । हुओ बरिना ॥ का
 भरी बानी-में बरिवाही कमलाने अनेव जलो अर मदावार ही गुताग्य
 में वर वर ॥ गता-मादिन दूष रवा दा । छारै-मदकायु मोचरी
 बा । पैले भाजै बायल बावरी मीजै दिवादा अमर जिमने अर
 बल-कावद-में कमला आगरी मगळी मांझोनी अदेरा गू मदाव ही ।

कमला ॥ मा कण कमला ही गानर बीह बांध रवा दा ॥ अ
 कमला न काभी कमलाना जि छै अद का । दला बाग दूका रीत का
 रवा दा की अर वै क दूक कार्ने-न लखे बांधनी जे बावना का दा की ।

क र मे अंघर ही भिवादा ॥ अवा अर वर में दू री-वहा ॥ मीवत
 निवत । कमला र की काय-री अज बाजा । बनी दाही लीवक
 निवतो ह ह ॥ बीज लवा मा बाह बावदा कमलाने दूष ला । वर
 वर वेद दूकना । अज अ कवा बांधका अज बिगदना-ओ गवा । अद
 दानाद आवा अज दूक बाजा अज मगळी दूष कदकाव दिवा
 कमला ही कमल दूखी बांधनी ग मदाही बावना वर मिह रा
 का-री-न लवा कद बावनी निर रवा अर अलवा ॥ अज काभी दूषनी
 वरनी अ बा बिह री क दूको लक अग बावनी री व री-न बीह मिह
 । अकल अज अ बा बावनी जोही दूषना जे अज अज ।

सि कर भी रहा हा हूँ मे-भी तो मरुव भावर कबो—काम राम-
 को बाबू देखो-भी पूग म्हा घर बरबस-ने समझाव जाया है
 बैरक-पोसिका राखो । आ भी कभी के बीजा हवा-करम-री राव
 अचरम है । इसी बात करोका तो म्हात-कात-सु जालुका परा ।

तो रामचन्द्रजी-री बात माल की क्या ?

‘क्या कदा पापका परोच ?’

रामचन्द्रजी जाया घना-भी करम-री बजा । हजलौ बरिवा राम
 लम्हा-ने माव-सु कहो कर-कात-ने गिरना घर बकल-भी को खीपी ?’

‘हूँ तो केहू हूँ जाया-ने हजलौ जाबो-ने घर जोर कयावुणो
 कोबी-ने ?’

‘अरे हाथो मज्जा-भी कु है महरक को रैवी बी ।’

मार्ज्जी ! कोरी-तो जमात विनाह जालुका मज्जा ?’

तो डाकुरजी-ने जानै बी-री-तो जोर जाके है क्या ?’

तो कोई परबीजिबोही-भी बरबी-ने है क्या ? करम हूँ को
 जावु-बी ?’

‘जानै करम-री हात पू ब-री तो म-भी कोबबी परना घर कूने
 पम्पी-सु बाबुका चिरो ही ।’

‘तो मे करल विवा विदवा-विवा ? हूँ-भी देख का ?’

‘अरे ! बारी-ने कासी हवा-ने रो-भी पाप कातो है । बाही ने कबी-
 रो क्या देखियो है । अरे नरै कम्प-ने-री जाया मातो बरिपो-ने है क्या ?’

‘हाथो-हाथो कपो कपो हो ? मू के जिपी-भी बातों ।’

‘बात का है के अने मीको चुक लो ।’

भीक भूक भूक कर लिहणी ।

बिट्टनाथ-र कम अ पास करतै-भी पाग-री हमी सुपी अही
मिठा बे-बै घर-भी काखेह-री पाँपरी मिठमी । मामा अबै पृथो का
ममाउतो हो नी ।

घर में मामो बसोय्य हो । मामा माणबो हाथ आ मिठव बोवता
अही मोठव मिठवो । माधो अब अडोबै-यहीनै बिट्टनाथ साक सारी
भोरुन लागी । वो बावता हो कै माणबो रो घर मड जायँ चौपमा
हुन जायँ ।

बन बिट्टनाथ-रै मन-में कई बीड़ी भी उभक-गुण्ड मय रपी ही ।
वा बरणीअनो बावता भी बो हो नी । अकसर घर बिरमचारी रैर
ममाउ-मंदा-नी बिरल खेजा बावतो हो ।

हो म यना—देम-में दिमा बिरमचारा जेजियावा है । घमवान
बोवारी धम में-धम मरु हल साक शणम वण र बुमिवा-भी रामन-री भी
पुन में खला रवा है ।

वो सोचनी—ग्याग लप'र प्रम-री मूरन लुगाया-री बीता-भी घमी
दिन तर-मू कण्ड मुहानू पूजा खता है कई वा दिवसुरी घर
अर्थांगना बाउ। बाबू १ ला कवा आ गाली बाग भी हो कम साबै-भी
मिठा भी बरतता है ।

वा माण १—दिन तर कानुहनी ही कण्ड-मूरनी गमन दावती रै
म-पे वर देन-र हाथ ही जामा गळती दावा भर करकार-ना कण्ड-मूर
कहावा जायँ है २ कवा दावा म बाग हृण-वा दारमन करम ही
बावता अ-भी न है ।

वो सोचनी—दिन तर कूड बाईनी घर दावती-ने देवा दवा-रै
दरुद 'अदवा बीड़ी खेचवा मर न जीवाबाद घर 'दुबै दम-मू
का कई भी दिना दण्डा पाक गुण्डा वर है ।

मा-बाप बधा-भी कछिया चारै-झारै दिवज्जारै हाथ बगाना
 गैरी-माई भर बगदीरो-भी कास बजावो वन बांधी झोली-भो बर
 हाथ स कन्ध-नै स्वार को हुयो भी । जाकर हारैर बैठ ग्या ।

अदीनै कमका लर-लर बही होवूच जायो बडीनै मा बाप-नै
 लर लर ककल्य बगाना । जोर क्या बटै ? कमका मा-बाप-रो ककल्य
 देख ८ माँव-भी-माँव बिछुरती हो ।

पचार्त कमका-रो कास लगाई चरमाका पैका-सु बन्धी कर
 बगान ग्या पल भाँक्या बामका कटै-सु कास ।

कमका सोचती—हमै जीवनी ना वो भर आलस-भी मका । ना करै
 करै मा-बाप-रै हुक-नै देल र अगवात करन-री सोचती । जइ बरा
 बाहो बाम-र आंगली बिकल १ झीरो 'अबकाठ कोर पल । बरबुझ
 नै-न अकली को जीवका हा भी । वन बीसी ना वो माँवकी बचता-सु
 हुकनी बाँधती हो ।

[१]

बिहुकबास लज्ज-भी लेन जे पल करी हो भर बरीक्या-में पल
 झरकर जायो हो । कर्त-रा जमल-रा-भी माँव भर ग्या । माँव
 पल बास-र बहो कियो । पल बायो जइ सु जम-री बिकल
 में बहे कम्बर पल होवतो रयो । हाजीरुख-री पचार्त हो करै
 काबिज में भरती हुयी ।

माँव रै चारै रै काँधी सींगल को हो भी । बाँनै-बाँनै जबर
 बिकली भर बाँस-नो लुगाव करवा । बोतो हमी पचनै-री कगलबाका-र
 सनो हो के बाँस-में पाकिना-भी का रकलतो होवी । गली-गुवा-रा
 लगल जइ पुन्य-न देल-र बुनकरती मानवा हा ।

तो पक्षे क्या बात है ?

‘क्या बताऊँ ?’

‘तो पक्षी बकछै-रो बैडो-बैडो की समझना होती ।’

मामा भीष्म पूछण लागो । पक्षे बोलियो—एक आगाँ लुगाइ तो बपानो है । घर जोखो है । बोली-भी फुररी है । कदात डाकुरमी चुन खेनै तो पक्षो जर मंड आपनै ।

बिठ्ठलनाथ चुपको रहो । मामै कबो—बेडा ! शौह तो बनी भी शौह हूँ जारी-ना मा-बाप तो राखो है । मासी कभीक

बीच में भी बात काट’र बिठ्ठलनाथ बोलियो—जावन-भी क्यों हो की सिधै करपटै नै ?

क्यों रे डफोछ ?

‘हूँ गिरस्त-रे बंझाव-में कसणो को जानूँ तो ।

‘क्यों पल ?’

‘मामै रात्रीना काजी बना करे है ।’

पूछ रे ?

‘भारत माता त्रिजगम-ओमका ! त्रिदै-री मिट्टी में रमिपा त्रिदै-री परतो-री घात लागो त्रिदै-री कुशा-बाबुरणों जर सझावों-से बायो रिघो ।’

मामो भीष्मों काट’र माज्ज सामो ओपण लागो । बिठ्ठलनाथ कबो—हूँ अमर जर बुझावो र र जवसेवा-री अलखट बरबी बाबाम् ।

‘नही बेडा ! सैबा है भी’—मामै केबा” तू ठा दल सिवन्त-ने समझावण लागो है क’ क्या समझाम् । जाज हूँ कर उदीवै-भी जाज हूँ । देखा डाकुरमी फिरा करी का दो चार दिना में भी पक्षो हूँ

बो सोचतो—किये तरे पण्य मज्जित्ता पूर घमण्ड में बज्जाए
साधारण जगता-सू दूर-दूर गाढ-र सयाजी-में सज्ज बधमन सक्त
पाया भाज्य बज्जता फिरै है । किये तरे वे मज्जित्ता-में उदरिबोडा मोर
समझै है । मगधान रै बैककर-भी नहीं मिद-र किये तरे यो
सागध-री जातर कोटा-करा कर-र पून पूरी करै है ? क्या बीई विचार
मज्जित्ता-रै मज्जित्ता मोर-रा मज्जित्ता यमा बध सज्जैका ? क्या विचार यमा
रो को-भी न करय है ?

बो सोचतो—किये तरे कोय बज्जत घमण्ड जानी कोरवां यज्जत
मगध करम-री पासी-सू कोरवां मीच बज्जै है ?

बो सोचतो—क्या हूँ भी जातर मिद सज्ज-ने दूर काव-रै
बज्जै कावो पेठ पूना-में-भी जापर विचारवां मिसी पून-भी विचारवां
सोचते-सोचते बैरी कोरवां मज्जित्ता जावतो कर को गज्जित्ता हूच जावतो ।

मा मा मारत मा ! कज्जम कोमका ॥ कतो-कैतो बसत
कज्जम काज्जतो ।

[३]

जामो जद देतै जद माज्जित्ता-री मुज्जित्ता मुदत्त कर रोप-रोप ।
बेकद बेक दिव मी माज्जित्ता-ने पूर भी ली बिबो—बारै सरीर में कई
कुत्ता है ?

नहीं तो ।"

'तो वही तू मिद उदास-र राप-रोप क्यों दिव है ? क्या मा
बाप-री बार जाव है ?'

मा बाप-रा दुरमन तो आज-में भीव कर बूँटू । ये को होय
सज्जित्ता र जाज्जित्ता मा बाप है क्या ।"

ममताम जानै क्यों धर्मिया इधे है । इया आदमी मिऊया भावा है ।
तो क्या ये-मे बुझावर ममताम ? कउण्य गा आनी कही है ।

बंटी बाबो । ईह-ऊह आवा । स्वाममुन्दर बाबू निजा ही—
विदुषमाल के अम्मीदे के ममताम में कउण्य दिवा कि आज ठाम का धं
बने मुझमे मेरे ममताम पर कउण्य मिछे । देवा अमी-अमी बिनी
मिऊया हो । बहुत कही कर दवा । ओ आजा देर ईह कउण्य गया ।

स्वाममुन्दर बाबू माचन बगना—विदुषमाल विदुषमाल शर्मा
बीहूँ का कही मिछेरी ममताम क्या दिव देवा कउण्य-नी मा
कउण्य-मे इवम बाबू मिऊय कउण्य बा । एक बाबू कउण्य-नी मा
ममे छावा हो... पछी बहूँ कउण्य जानै क्या दया । कउण्य
ममे बाबू कउण्य-मे कउण्य बाबू । ओ कउण्य-मे कउण्य बाबू ।

कही में दम-दम-दम पाँच कही । स्वाममुन्दर बाबू कही कही ।
कउण्य-नी कउण्य ममताम कउण्य कही—ममताम आवागी मादव । डीक है
कही स्वाममुन्दर बाबू कही ।

[५]

कही बाबू । ममताम कही कउण्य-नी कही ममताम-नी मिछा
कौन-नी—विदुषमाल बाबू ।

ममताम भाव्य । ममताम कौन कउण्य ?—स्वाममुन्दर बाबू कही ।

‘कहा कउण्य ?

मिछा कारण तो कउण्य कही-नी कउण्य ।”

“जा तो डीक है दम ।”

‘मे बाबू आदमी हो । कउण्य मम मिछेरी कउण्य कउण्य बाबू
कही है । ममताम कही कउण्य-नी ममताम कउण्य कही है ।”

जाली । बिटुकनाथ मामै-रा पग पकक'र जासू नाकतो बोलियो—
मनै गिरस्त-रै इहै-मे मछी जंतसको । मनै जलम भोग्यता सेवा न
पुकार्य रही है ।

मामो बोलियो—सैको हो'र दाहरावा कर है । कही म्हातो :
सोरो को क्यारै नो ?

“हूँ सोरी डाकुरजी बाली पूजा करु का । ये बाली की मरो रत
मामा की । ना मनै बालियो-गोस्तिनी बजानो बहै हूँ इसो पाली बौस
बछे बाने कै-पूछ कैरुका ।”

‘तू तो बेडा । कैकुठा है । तू-बीज म्हादै काह जाली है । बीजो दुप
है ? कही तू निम्नी म्हाती सेवा को करे है नो । बच... ” मामो
बैतो-बैतो दुख भो ।

बच क्या ? ये म' जलज-में ना कसको ।”

मामा मजगवा ना हूँ तो जाज-जज मै-जी जोका मराय छाईका ।”

इसो मामा की

‘बस चुपको-चुपको बैठो रै म्हातो जविकम है । बहू तू मनै
डाकुरजी दारु मानै है तो म्हातो दुखम है” —जा क'र मामै पावपी
समझी हुजरो काबे मेखियो भर सपने-रै बह-तो मातन बिचो ।

[*]

बिटुकनाथ न जेतनी-तू मारलीको है दिवा ।

रयामसुन्दर जगू मिषा-विमल-रा बाहरकडर हा करलीको ना ।
उमे दुगियो । ये संभोर विषम में हूच म्हा । जोरो को तैको है बही
बाम्बजालको है । सुदरकी मर-ने नही चीकर बै-नी साक-सोमा है ।

महात्म्य वाले क्यों जस्तीफा देवें हैं । इसी आत्मी मित्रको जाना है ।
तो क्या ये-ये बुझाकर समझावूँ ? कर्तव्य तो जानी कैयों है ।

बही बाबूजी ! ईश-शुभं आपो । स्वाममुन्दर बाबू जिज्ञा हो—
बिदुष्यत्व के अस्तोके के सम्बन्ध में उन्हें विचारो कि आज शाम को ये
बड़े मुससे मेरे मकान पर अचरित मिलें । ऐसी जमी-जमी चिट्ठी
मित्रता हो । बहुत अच्छी कर देना । ओ भयानक और ईश बखर्क पावो ।

स्वाममुन्दर बाबू घोषण कामा—बिदुष्यत्व स्वामं बिदुष्यत्व शर्मा
बौद्ध तो नहीं विचैरी कतर बना दिन देखा कमक-री मा
कमक-री देवता वाला मित्र बजाया हो । एक दोकरो कमक-री मा
कमै पावो हो पक्षे पक्षे हुन जाले क्या हुनो । पक्ष
जबे वालो कमक-री हुन झाडे । वो कमक-री कोकरी पक्षी ।

बही में टन-बन-टन पाव बबो । स्वाममुन्दर बाबू बही उठावो ।
अपराधी किम्वद कोक'र जराज करी—मोटर आपसी साहज । डीक है
कै'र स्वाममुन्दर का दुपया ।

[२]

बही बाबूजी ! म्हादै नोकरी करन-री जबे आवक-यो मिदा
कोकरी—बिदुष्यत्व कोकरी ।

भक्त मन्त्र ! आकर क्यों पक्ष ?—स्वाममुन्दर पाव पक्षि ।

क्या बताऊ ?

बिना कारण तो कारण हुनै—की कोकरी ।"

"आ तो डीक है पक्ष १"

"ये योग्य आत्मी हो । बहका कर मिन्धीपक्ष आकर हीन बाबू

बाबूजी है । अन्तोन ओर'र जालाओ भी आकर मन्त्र क्या है ।"

इसै में-की तो कमका भक्त कभी-रै लागै बाब छैर बाबी ।
 विदुषबाब-नै बूझो-बूझी बार बाबो नै बनै नै की अ पक्ष करी ही
 एक बार मामैकी इसै-की कोरी-की बात बखानी ही । पन बा वो बाबी
 है । नै जम भर में-की का बात छोच की ।

बाब पोतै-पोतै विदुषबाब कही—हूँ बच-छेड़ा माऊ बौझी
 बौझी बाबू हूँ । बीपारियो-रौ विस्वामर हुगारा वर आवाअर
 बाबकी वर मम-कटकार रोपी वर मरीच भाषा-री बैसमाब
 विघर्षिवा-री छस्कार-हीकता वर बोधी बू—इवा बला-नै देक-देकर
 म्हारै दिवै-मैं रै-र'र हूक जुड़े है । सांपरठक बाबकी बैकठे अंधरो
 काकर बिधो बाबू ।

धारा विनाम बौल कुररा है—रचामसुंदर बाबू बौझिया ।

कमका कभी-रै लागै बाब-मुपारी-इबाबकी-री बिबी छैर बाबी ।
 विदुषबाब-नै परिब्रज अरत्नम बास्ता बाबूकी बौझिया—का म्हारो बेदी
 कमका है । जर कमका-रै मामै पर बाब-बू हाव केर'र कबो—मैं
 म्हारै कनै बैठा बिठे व विदुषबाबकी है काखेब-मैं मोहसर है, बहा ही
 बाबक वर भका है । कमका वर विदुषबाब होइ अक-बीजे-नै
 ममस्कर करी ।

कमका-रै बाबो-रै बाब विदुषबाब दूबिबो—क्या बाब-री बाब

'हा सीधक-मैं होइ बाबकी बकी गयी । बीत-बीत इबाब
 करावा पण —बाबूकी एक कभी छोस की जर बाबकी दू की ।

आ वो बाबीअ सीध-री बात है साथ ।"

छोच भक्त किछोक ? बाबक-रो जमारो विगबामो । यकी-मुकी

हम-नी बगर पत्र पोस्टा-नी कमर होवै-सु हाथ । ”—बाबूजी
मूँहें बाहो समाह दिया ।

मिट्टबहाप-रै माथै-में बीकली-सो मल्लोडियो बाबुषिया भर मर
बाबुषि दत्त बिठाबी बिचार बहुर कार-र सुट-माह हुय ग्या ।

पोरो केसा बाबू बाबू जी बाबुषिया—तो जीकरी यकै ईश-मेवा को
बाबै-नी ? बिपरबिया-ने आहो मिक्या द-र मुबारका है । ऊकी सो काम
तो हाकुरजी बा-ने दइ राबिवा है । आ मेवा कोयनी ?

“आ तो पेट-री मेवा है ।”

“तो कम संवा-सु क्या बरबास-रै पेट पाकरी-री बाल बाल है ?”

मिट्टबहमन-सु केसा—हां है तो बाबी...मवा-ओ ।

तो पयै हिरदै-सु अिबै-में सेवा समझ-र-बी काम करा । बाबी
भाव-में भीत्र हो मुबारका है ।

“हजो तरे बुझिया-रा मयल्य काम मवा समझ-र-बी करा—मास
बाबी बिम्बेशा मास भर कमव-सु ।”

“होक है ?”

“बहै सारो जीवक मवा माव-सु मरीत्र बाबी । जर ईद छपर
ब-री माही अमिषाही मख-री धइ कलम-नी माव-सु क-र ईद दिव
दिप करव बालाओ जर प्रमु-रै बरबा-रै मपरम आती बन बाबी ।
प्रमु-री कुरमा-सु बिवाहा काम बीम निमवा मिह गोण छी-या ।

“आ तो म्योळी आता होऊ है ।

“जो बहनीको पाइ। छे देखी । अऊ परापराम बनाव-र प्रमु-रै
बरबा-में बहाव हा जर कमर कम र तुर पहा काम में ।”

“ता हुं बलीया पात्रा से देखू ।”

‘हे देसो क्या ! को धो कागद लिखो ।’

‘कामो !’ क र विच्छवाय कागद लिखय कामो ।

[१]

अरे तो विच्छवाय पू पूके तो स्वामिगुग्गर पाद-रे मड़े बापके पूके । रोम जो जोख र सहा होके सलह होके पाठ-री पाठ में हूय मड़ेवा पीठ म्हा ।

विच्छवाय अरे कामका-रे गुण-मे कि बह बरे—देसो बिचारी मोधी होवतै पदो भाव-रे हाथ सू -ओ’अ पिठाओ साक दिव्वा-सिखा पाव कावै किमी बेछा क्या कोधीअे त्रिको कामूच-ओ काव केवै भर सेवा में सुझारवाने-ओ केवै बेछावै । सलखाउ कमल है कितो काम है कितो-ओ गुण है । ओ सोचयो—एक जाले बापके-रो क्या हम्ह होसी ? क्या काव-रे बरे-ओ जूय दूरी करली पवसी । क्या मोधी होवुय-सू से गुन बकोअम्हा । पति-री सेवा सुपाकी ओर त्रिठे बरे तो बड़े हसी काचारी-री दछा-मे पति-ने सुपाकी-री सेवा नहीं करली कोबोअे ? जने तो स्वामय-रो-ओ मेक है ? एक वाली हूयो त्याग तो बीअे बसी जाली बीय-री-ओ कपाअपी—दिरहेसुरी मानसुरी ? जने तो पति भाँवो हु कावै तो सुपाकी-ई-ओ बै-बै कोठ-किरकम’र पीरै कागधो बरो कोधीअे ? बै केछा तो संसार के-मे आसक्तिवा बर उदाय केवै । त्रिठे बापके-रो कोई धालू को होवुकेकी ? हाथ रे स्वाभी बिरदकी संसार !

क-रो सोचयो मय पद-ओ कोकिची—तू भी तो भिजे-ई संसार-रो मुलहकिओ भर बीबी बली बधारनियो जीव है तू भी तो सेवा-सेवा कूके है । क्या तू ओ काम को कर सऊँगी ?

सरीर-रे अेक लूने-मे लुकिओही कमठोरी जाले बघ र बोली—कपो मोधी-री जायत गम्मे पोने है ?

“तो मित्रे दोरी-रो क्या होमी ? मगबाब ! मगबाब !! मैं सगली
 मैं जानणे दयालो । मूख-मै भारण बलाओ । सदा
 तो ... मगबाब दोरी है आज हा पत्नी बेरी बापकी-री लाली
 रकी बाँट्या भी'ज ता पट्टी है पण म्हातो क्या बलको-क्यामापसी
 म्हातोही कोपकी कोई ? तो क्या रबाममुन्दर बाबू-रो बिषमोक दुख
 मगबाब तो मगबाब मैं सगली नहीं हैकुँहा ?”

बा बाबू-रै बिचारो-रै हथोळ्यें हूँ हिक्क-हिक्कायी कम्बो जर हुज्ज
 केरन बाबा । माचो कडाचो ता मामी ओ कितल मगबाब-री तस्वीर-रा
 तिमल हुआ ।

हथो-भी-मै टाक बाबीसी-रै बरन्तु रेडियो बाबिणी—

अब तेरे मित्रा बीन मेरा कृप्य कहवा ।

बस तू ही मित्रा मे बाबा है मेरी मैया ॥

[•]

रबाममुन्दर बाबू-मै एक रजिस्टरी छिन्नाओ पुनिपो ।

आज मै तस्वीरगा-मू अवार भी मगबाब-री मचा कर र डडिवा
 है । कम्बका मच बेटी सचुरे कचर कीरलन कर रही है । आज मगबाब
 रा बच-भी अन्धकारिक दरमल हुआ । मच'र बुझि-मू बर आज-री
 ओक घंटे आज बोले पीकन-मै मिछी ।

रबाममुन्दर बाबू हैनिवा हमकन मैया-मैया बाबा है मदी पुरं
 मो बिट्टुबाब-रा है । वल बिण्ड मैं बीटी बचो है । ? केर रजिस्टरी ?
 बा ता राज-मो बरे आज भी है ।

छिन्नाओ बाबिणी । बाँटा बाँधी । एक बार हा बार तीन पार ।
 मच-मै बिगबाब का आँखन हो मो । क्या माच-भी बिण्ड-री बीटी है ?
 व र केर बाँधी । आज ता है । मोच बिट्टु-रा हमकन है ।

“वे कैसें करे ? हो जो कागद लिखो ।”

‘कागदो !’ के र बिटुकावाय कागद लिखल लागो ।

[५]

अबै तो बिटुकावाय रू पूछे ली स्वाममुन्दर बाप-रै कहे बाप-पै पूछे । रोज जी कोच-र सहा होवै सत्सङ्ग होवै बाठ-री बग में इव सईया बीठ गया ।

बिटुकावाय अबै कमला-रै गुण-नै लिख बाव करै—देखो बिचारी कोपी होवतै कहां बाप-रै हाथ खु-बी-अ पिताजी साक निरूप-सिन्हा बाब बाबै किछी बेका कदा कोपीनै किछी माग-ओ जाय केवै कर सेवा में सुजायमाने-की केवै बेकापै । सत्सङ्ग कमल-रै है किमो नाम है किमा-की गुण है । जो सोचतो—एव बापै बाप-री-रो क्या इतक होसी ? क्या बाप-रै करै-की रूप पूरी करणी पारसी । क्या कोपी होव-खु से गुण बढोकरा । पति री सेवा हुगामी कोरै बिठे करै हा पछै हसी काचारी-री दस्त-में पति-नै हुगामी-रो सेवा नहीं करणी कोपीनै ? कनी तो स्वाम-री-की मरु है ? एक पत्नी इतो त्याग तो बीनै पत्नी त्यागी कोय-री-की क्याकरणी—दिरदेष्टुरी प्रलोभुरी ! कनी तो पति कोपी हु जावै तो हुगामी-रै-की बे-नै कोर-किरकार र पोरै बाप-ओ परो कोपीनै ? नै केका तो संसार बे-नै कोपकिनां पर बढाव केवै । भिन्नै बाप-री-कोई मायु को होवै-की ? हाथ रे स्वामी निरदबी संसार !

कै-रो मांजको मग कह-की कोकिचो—तू जी तो जिनै-रै सत्सङ्ग-री मुनकरिचो कर कोपी जातों पचामनिचो जीव है तू जी तो सेवा-मै-पू पूछे है । क्या तू जो काम को कर सकेवी ?

सरीर-र कोर नृ-में हाकिचो-की कमजोरी भालै कच-र कोपी—कदा कोपी-री बाप-त गच्छै कोरे है ?

विष्णु मयपात्र-ही मय-में मसार-ने भूखियो बैठी है । केई कुम्भारी घायम-में बाँधे घाँववां मीच'र सैन कर रहा है । केई कुम्पुम-कुम्पुम कर रहा है । पण विरगद में तो मगक-ई हरण अठाव रहा है । मम्मोशी दोनो हाथों से शुद्ध-नारेख झूठाव रहा है । बारमे मीठी सीपी राग-में भूमवणो हाकक पर मगक नील-गाव रही है ।

विट्ठलबाब-रा विद्यार्थी सँगली-रा पावेयर विचरव कर आलं-में मरिबोवा पर-में बड़े-निच्छ है । विट्ठलबाब सेवा-से मिष्ट'र सुसी सुसी कर प्रम-में सगळों की चालुमय्य कर है ।

परीने कमळा कमरे-में धूमो मन-भी-मन कैव रही है—करवा-मिथु ! आलर ग्दारा तुल्य थांमू महोद्विषो कावनी । बीजानाव ! ध्रुविके मै हाम वकदाव रहा हो बा कित्ता हवाय्दु कित्ती सन्नव कर कितो सेवाबादी है ? अब-भी तो गिरमती-रै वृक्ष-में जेव बाँधी-ने जेलम-ही जालम जुझपी है । तुगाभी मिनक-ही वीस-पोव र सेवा करै विच्छी हु का कर सटं नी । तुगाभी घर-नी मुदी-सय्य करै विच्छी हु का कर सक बो । तुगाभी मिनग-रा कण्ठा-कला कोर-बलत मांने विच्छो हु का कर सक नी । पण हम निच्छे दूँदे-ने से गळु बाँवण-में क्या कावदा काहमो ? पदो बीह बेव र भीजका मोक के रहा है ? मने भवीकर कर र बांमे बुक्या सुग मिछपी ? आज हरण-में ग्दारा दिवो दिवोवा ग्दवत बळ हु दुगी हु । हाव ! तुगाबां मै मिनर-ही सेवा करनी बादी है वरुती बां-मे ग्दारा सेवा करनी पवनी ? बाव ! बां मने बादी बको करी ? करी ता वसे मने बार रै बार-रै नूनी-में भी नूण नूनी करन देखनी हो ! वरासे गळ-में मादो बाँपर बां-ने कर बको दुगी कर रहा है ? प्रभु मने अलक मुदाग देवा । बार करे-भी वृक्ष-ही पदी-ओ मन कागल दिवा । आ केटी-केनी ओहग-रै पवसे-में जांमू वृषणो, कज्जवा दानुवओ-र चरणी में पमच बज्जाला ।

हिरदे-जै लखै बालद भर अमंग-री तिरब धी उमरी । माझी
बरस पकी भर मूँडे-सु लिच्छक पकिबो—बहु ! तू बवाहू है बवा-रो
समहर है ।

काका-काया पग धरवा कमका-री मा-रै कमरै-जै बजिया । या
काकी अम-में कमोकी ही । रयामगुम्बर बाल-रो बालद-सु मूँडे धँव
हुय लो । पीठी बै-रै सामी बर ही । काम कोह-र बा बाँचल छाती—
भद ब धी रयामगुम्बरकी ।

भगवान् के सुमातीबाह-स्वरूप धी कमका-री को मै कपकी
कौनक-संगिनी बचाने का प्रस्ताव धरिवर सावर आपकी सेवा में
कपस्वित करवा हूँ । क्या आप इसे स्वीकार करके मुझे सुखद
कीर्तिदेगा ?

आपक। दवा-मिष्ट

छा १—२—२ ।

विदुषमात्र

हमरै-की दिन घरमें बड़ी घम-घात-सु भगवान-रो उद्धव
भनापीबिबो । हाकुरजी-मे मासपरी करोगाथो । बैण्ड-समाज सुविबो ।
अष्ट-लकादारी बापी-सु बर गूब उठिबो । कम संरज होने पर
साग-ने कमको परमाह बैटोबिबो । कमका-री मा बर पिठा-की की
हाकुरजो-रे बरबा-मे विदुष-रै यम-मे बर दिया । भगवान-री बाक-
मूर्ति मुकक बरी ।

[म]

आज मिच्छ-र मागी-ने हेतो तो हेतव-की है जाणो । काकी मूँडे
छकने म ह बल कृत बही । बर 'बघाई है-बघाई है-री पुन बापी-सु
गु उ उठ्यो । भावा-वादा-री सुगावा संग-गीत गाव रही ही ।

दो-हो ! कबो जावो ।

स्वामी-मल मेवक दात्री गद्गरी गचि-अकचि-रो ध्याम राखे ।

‘बोला ।

‘राक्षद्वयै दात्री गद्गरी जीवम-अन घर कवक-अता भभाऊ ।

ते अक-मे अनेक गुण है ।

केर लुब धारै भावने-मू घर बसिवा है नही जमे भूजद
बहिरो हा । बारै भावने-मू घर-में बाकुरजी बसविवा । बारै कीरयना
री बसितर भर मीही रागबरा-मू घर-रो बलावरन बसितर दुषो ।
अद ए लुरखे कैया काक साही बेर र लंबूरे-रा घर दिरे है भर मीदे
सुरा में बर गावै है ता जमे हभी जाकम बरै जामे साकमल
बिजलीजी भगवान-जे रिजबल जाक गाव रही है । पार भुर-रै हमरा
मे बीबने बैल-मू लरि-में लषी जमंग लषी मग्नी रा दबोख भावन
जागे है । हिम भर-रै कामा-री बकावर कहे-ओ मल जावै भर मरावर
भर भुजंग-मू राग-राग बावन जाग जावै ।

बकाव जावो द्वारा जान । बिबे जावो गद्गरी बगल ।

नही हैं मीगद भाव'र कदू है लं गद्गरी घर-री बिजली है ।

भावे भी ।

बुरे बावे-भी । कजक छपर बेह'र भेवरा ब-रो मुगब-रै मीदे
भर-में घर हो र बुजिवा-मू घर बरै-भी बिरिबो रबै है बा-भीम
रवा गद्गरी दुब रही है । कामगारी में बका कामन बिबो है ।

गद्गरी दया को हभी बां बकर भी कर रही है । बे-भीम कामन
गरा दया हो ।

कई दिनों छई यो बिद्वज्जन्य है ध्यानु-री बरबा बज्जती रहीं ।
 पर्व नदी बाध नष्ट दिव खाँची-छापी छैरें दिन । श्रोत्रेण साव कमका-रै
 शुभ पर इसा रीछ गया के काहेअ है परबस कमका रैम के है कने-नी
 बिछावता । आचर-भयेका इजगी-इजगी सपाखी जगाँ जामे बंध कर
 दिवो । बिबुने कमका-ले नवावनी-छोवावनी चाव बजाव-र पलनी
 छेवा-री छामगरी सज्जवनी कर बोमु केका रहोनी बजावनी । छुडी-रै
 दिव कमका-ले शुभावनी-ले छै कावनी ।

कमका ज-नै बस-सखाव-रा सुन्दर भाव-सरिवा मरु ठहरै ऊपर
 गाव-र शुभावा करती ।

कई का हाव बोह-र कैती—नाम ! वाँ जाल-बुझ-र कबो बाध
 गळी बानी ? कने कने काह-र भावर-र बिद्वज्जन्य है-रो हाव मर-रै
 हाव में केव-र कैती—हूँ तो जिनै नै परमावमा-री काव-र करपा
 समझ हूँ ।

कमका कैती—छेवा-रो कस सुगावनी-रो हूँ है जिनो ज-नै
 गहरी सेवा करनी पर्व है ।

‘तो क्या ! कने बी गहरी जाल-में तो कने-नी जाल गाह-में कद
 बीवज-रै मगग ऊपर हो बजाव-र भागे-सली बाधये है तो छुली-छुली
 बाधनी बोनीये ।

‘तो हूँ बारी क्या सेवा-सहायता कर हूँ ?’

‘दस-दस-र है-र मा दावनी मोरव करावै कर बावरो पानी ।

‘दीक है ।

‘हुन-हुन में सायली दावनी सखा-सुख देवै कर समझावै ।

‘सुनिमजी दावनी कर-रै रिहाव-बिहाव-रो छेको बजावनी
 माये रावै ।

